चीन के बाद होर्मुज स्ट्रेट से भारतीय... पेज 5

दैनिक कारखाने का सफर

मुकाबले के चक्कर में आदमी का जीवन एक कारखाने के समान हो गया है, आदमी का सबसे विश्वसनीय अखबार

आर्थिक सुख-समृद्धि के लिए ... पेज 7

वर्ष 6, अंक 265 | भोपाल, रविवार 8 मार्च, 2026 | चैत्र कृष्ण पक्ष, पंचमी, 2082 | मूल्य 2 रुपए

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर विशेष

महिला सशक्तिकरणः पहचान, आत्मसम्मान और संतुलन की यात्रा

चंद्रकांति आर्य

हर वर्ष 8 मार्च को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस बड़े उत्साह के साथ मनाया जाता है। इस अवसर पर सामान्यतः महिलाओं की उपलब्धियों की चर्चा की जाती है, उन्हें शुभकामनाएँ दी जाती हैं और उनके योगदान को याद किया जाता है। लेकिन यदि इस दिन को थोड़े अलग दृष्टिकोण से देखा जाए तो यह केवल उपलब्धियों की सूची बनाने का अवसर नहीं, बल्कि उस अदृश्य शक्ति को पहचानने का भी समय है, जो चुपचाप समाज और सभ्यता को थामे हुए है।

अक्सर महिला दिवस पर गुलाबी रंगों में सजे बधाई संदेशों की भरमार दिखाई देती है। परंतु क्या हमने कभी भावनात्मक रूप से उन अनुभवों और संघर्षों को समझने का प्रयास किया है, जो किसी आँकड़े, रिपोर्ट या डेटा शीट का हिस्सा नहीं बनते? एक महिला का वास्तविक संघर्ष समाज में अपनी पहचान बनाए रखना है। ऐसे समाज में, जहाँ उसके ममत्व को कभी-कभी कमजोरी और उसके त्याग को केवल कर्तव्य मान लिया जाता है, वहाँ अपनी अस्मिता बनाए रखना अपने आप में एक बड़ी उपलब्धि है।

आज की महिला केवल घर और कार्यालय के बीच संतुलन बनाने तक सीमित नहीं है। वह डिजिटल युग में भी अपनी सक्रिय उपस्थिति दर्ज करा चुकी है। तकनीक, शिक्षा, उद्यमिता और नेतृत्व के क्षेत्र में वह निरंतर आगे बढ़ रही है। साथ ही, उसे हर कदम पर आकलन और आलोचना का सामना भी करना पड़ता है। वह परंपरा और आधुनिकता के बीच एक सेतु की तरह है जो एक ओर पुरानी पीढ़ी की स्मृतियों और संस्कारों को संजोए रखती है, तो दूसरी ओर नई पीढ़ी को आधुनिक ज्ञान और कौशल की दिशा में आगे बढ़ाती है।

महिला सशक्तिकरण का सबसे क्रांतिकारी पहलू यह है कि महिला स्वयं को हर समय "परफेक्ट" साबित करने की अनावश्यक अपेक्षाओं से मुक्त करे। समाज ने लंबे समय तक "सुपर वुमन" की उस छवि को सराहा है, जो बिना थके सब कुछ संभाल लेती है- घर, परिवार, कार्यस्थल और समाज, लेकिन वास्तविक सशक्तिकरण स्वयं को थका देने में नहीं, बल्कि अपने स्वास्थ्य, मानसिक शांति और आत्मसम्मान का ध्यान रखने में भी निहित है।

सशक्तिकरण का अर्थ केवल सत्ता या पद प्राप्त करना नहीं है। आने वाला समय केवल सूचना और तकनीक का नहीं, बल्कि सहानुभूति, संवेदना और संवाद का भी होगा। महिलाएँ जिस प्रकार नेतृत्व करती हैं, जहाँ संवाद, सहयोग और भावनात्मक समझ को महत्व दिया जाता है, वही भविष्य की कार्यसंस्कृति और सामाजिक संरचना की मजबूत नींव बन सकता है। यह संघर्ष पुरुषों के विरुद्ध नहीं, बल्कि एक ऐसे समतामूलक समाज के निर्माण के लिए है जहाँ लिंग केवल एक पहचान हो, योग्यता की सीमा नहीं।

महिला दिवस केवल एक दिन का उत्सव नहीं है, बल्कि यह एक सतत स्मरण है कि महिलाएँ मानव सभ्यता का आधा हिस्सा हैं और उनका योगदान हर क्षेत्र में अनिवार्य है।

आज का दिन उन सभी महिलाओं को समर्पित है जो बिना किसी शोर-शराबे के दुनिया को बेहतर बनाने में लगी हुई हैं। चाहे वह किसी बड़ी कंपनी की मुख्य कार्यकारी अधिकारी हों, कोई वैज्ञानिक हों, खेतों में कार्य करने वाली श्रमिक हों, या वह माँ जो सीमित संसाधनों में अपने बच्चों को बड़े सपने देखने की प्रेरणा देती है, इन सभी का योगदान समान रूप से महत्वपूर्ण है।

समाज में वास्तविक परिवर्तन अक्सर बड़े मंचों से नहीं, बल्कि घरों की रसोइयों, खेतों की पगडंडियों और छोटे-छोटे कार्यालयों की मेजों से शुरू होता है। वहीं महिलाएँ अपने परिश्रम, धैर्य और समर्पण से आने वाली पीढ़ियों का भविष्य गढ़ रही होती हैं। एक माँ जो सीमित बजट में अपने बच्चों की शिक्षा और स्वास्थ्य का ध्यान रखती है, वह वास्तव में समाज के भविष्य को सुरक्षित कर रही होती है।

महिलाएँ केवल परिवार की धुरी नहीं हैं, बल्कि वे हमारी संस्कृति, परंपराओं और सामाजिक मूल्यों की संवाहक भी हैं। पीढ़ी दर पीढ़ी हमारी सभ्यता और संस्कारों को सहेजने में उनका योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसलिए आवश्यक है कि आधुनिकता को अपनाते हुए भी हम अपनी सांस्कृतिक गरिमा और सामाजिक मूल्यों को बनाए रखें।

महिलाओं को भी अपने महत्व को समझना चाहिए। उन्हें यह स्वीकार करना होगा कि उनकी सफलता का मापदंड समाज नहीं, बल्कि वे स्वयं तय करेंगी। यही वास्तविक स्वाधीनता और आत्मसम्मान है।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस केवल एक आयोजन या औपचारिकता नहीं है, बल्कि यह आत्मचिंतन का अवसर भी है—उन महिलाओं के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का अवसर, जिन्होंने समाज को आगे बढ़ाने के लिए अपने जीवन का अमूल्य योगदान दिया है। साथ ही यह उन बाधाओं को समाप्त करने का संकल्प लेने का भी दिन है, जो अभी भी महिलाओं की प्रगति के मार्ग में मौजूद हैं।

महिला होना केवल एक भूमिका नहीं, बल्कि एक अद्भुत सृजनात्मक शक्ति का प्रतीक है। हम सभी इस बात के लिए सौभाग्यशाली हैं कि समाज में स्त्री की यह संवेदनशील, सृजनशील और सशक्त उपस्थिति है।

इसलिए इस दिन केवल दूसरों को बधाई देने के बजाय, प्रत्येक महिला को स्वयं के प्रति भी आभार व्यक्त करना चाहिए—उन सभी क्षणों के लिए जब वह कठिनाइयों के बावजूद मुस्कुराते हुए आगे बढ़ती रही।

वास्तव में, हम केवल इतिहास नहीं बदल रहे हैं, बल्कि भविष्य भी लिख रहे हैं और उस भविष्य की लेखनी में स्त्री की शक्ति, संवेदना और आत्मविश्वास की स्याही हमेशा अमिट रहेगी।

(लेखिका देश की जानीमानी साहित्यकार हैं)

नारी शक्ति की नई उड़ानः परंपरा, तकनीक और बदलती दिशा

संगीता शर्मा

हर वर्ष 8 मार्च को मनाया जाने वाला अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस केवल एक उत्सव का दिन नहीं है, बल्कि यह समाज को यह सोचने का अवसर देता है कि महिलाओं की स्थिति, उनके अधिकार और उनकी संभावनाएँ किस दिशा में आगे बढ़ रही हैं। किसी भी राष्ट्र की प्रगति का वास्तविक मापदंड उसकी आधी आबादी यानी महिलाओं की स्थिति से तय होता है।

भारतीय समाज में नारी को सदैव सम्मान का स्थान दिया गया है। समय के साथ महिलाओं की भूमिका भी निरंतर विकसित हुई है। आज महिलाएँ केवल परिवार की जिम्मेदारियों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे राजनीति, शिक्षा, विज्ञान, खेल, प्रशासन और उद्यमिता जैसे अनेक क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा का परिचय दे रही हैं। वे राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में बराबरी की भागीदारी निभा रही हैं।

वर्तमान समय की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि नई पीढ़ी की युवतियाँ—जिन्हें आज की भाषा में जेनरेशन - जी (Generation Z)(पीढ़ी परिवर्तक) कहा जाता है—समाज में बदलाव की नई धारा लेकर सामने आ रही हैं। यह पीढ़ी अधिक जागरूक, आत्मविश्वासी और तकनीक के साथ कदम मिलाकर चलने वाली है। आज की युवतियाँ अपने करियर, शिक्षा और जीवन के निर्णय स्वयं लेने के प्रति अधिक सजग और स्वतंत्र सोच रखती हैं। वे सामाजिक रूढ़ियों को चुनौती देते हुए नए अवसरों की ओर अग्रसर हो रही हैं।

इसी के साथ तकनीक का तेजी से बढ़ता प्रभाव भी महिलाओं के लिए नए द्वार खोल रहा है। विशेष रूप से Artificial Intelligence (AI) आर्टिफीशियल इंटेलिजेंस (एआई) जैसी आधुनिक तकनीकों ने शिक्षा, रोजगार और उद्यमिता के क्षेत्र में नई संभावनाएँ पैदा की हैं। आज महिलाएँ डिजिटल प्लेटफॉर्म, स्टार्टअप, ऑनलाइन शिक्षा और तकनीकी नवाचार के माध्यम से आत्मनिर्भरता की नई मिसालें स्थापित कर रही हैं। यदि सही प्रशिक्षण और अवसर मिलें, तो यह तकनीकी क्रांति महिलाओं को सशक्त बनाने का एक बड़ा माध्यम बन सकती है।

हालांकि इन सकारात्मक परिवर्तनों के बावजूद समाज में कई चुनौतियाँ अब भी मौजूद हैं। महिलाओं के प्रति भेदभाव, असुरक्षा की भावना और अवसरों में असमानता आज भी कई स्थानों पर देखने को मिलती है। विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा, स्वास्थ्य और आर्थिक आत्मनिर्भरता के अवसरों को और मजबूत करने की आवश्यकता है।

ऐसी स्थिति में महिला सशक्तिकरण केवल एक नारा नहीं, बल्कि समाज की अनिवार्य आवश्यकता बन चुका है। जब एक महिला शिक्षित, आत्मनिर्भर और तकनीकी रूप से सक्षम होती है, तो उसका प्रभाव केवल उसके जीवन तक सीमित नहीं रहता बल्कि पूरे परिवार और समाज की दिशा बदल देता है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि हम महिलाओं को समान अवसर, सुरक्षित वातावरण और आधुनिक तकनीक से जुड़ने के अधिक अवसर प्रदान करें। जब बेटियों को शिक्षा, युवतियों को अवसर और महिलाओं को सम्मान मिलेगा, तभी एक सशक्त और समृद्ध राष्ट्र का निर्माण संभव होगा।

नारी केवल संवेदना और त्याग की प्रतीक नहीं है, बल्कि साहस, नेतृत्व और परिवर्तन की शक्ति भी है। नई पीढ़ी की जागरूक युवतियाँ और आधुनिक तकनीक का समन्वय आने वाले समय में समाज को एक नई दिशा देने की क्षमता रखता है। इसलिए हमें महिलाओं की दशा में सुधार के साथ-साथ उनकी दिशा को भी उज्ज्वल बनाने का सामूहिक संकल्प लेना होगा।

(लेखिका मध्यप्रदेश राज्य महिला आयोग की पूर्व सदस्य (राज्य मंत्री दर्जा प्राप्त) और मध्यप्रदेश कांग्रेस की प्रदेश प्रवक्ता है)

समाचार संपादक की कलम से
–राहुल कौशिक

अमेरिका की अर्थव्यवस्था में यहूदी समुदाय की भूमिकाः आंकड़ों और तथ्यों से समझने की जरूरत

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में अमेरिका आज वैश्विक व्यापार, तकनीक, वित्त और मीडिया का केंद्र माना जाता है। लगभग 27 ट्रिलियन डॉलर से अधिक की GDP के साथ अमेरिका का प्रभाव लगभग हर महाद्वीप की अर्थव्यवस्था पर दिखाई देता है। लेकिन जब अमेरिका की आर्थिक शक्ति की चर्चा होती है, तो अक्सर एक सवाल सामने आता है—अमेरिका के बड़े व्यापार और वित्तीय संस्थानों में यहूदी समुदाय की भूमिका कितनी है और इसका वैश्विक प्रभाव क्या है।

सबसे पहले यह समझना जरूरी है कि अमेरिका में यहूदी समुदाय की आबादी बहुत अधिक नहीं है। अनुमान के अनुसार अमेरिका में लगभग 70 से 75 लाख यहूदी रहते हैं, जो कुल अमेरिकी आबादी का लगभग 2% से 2.5% हिस्सा हैं। लेकिन कई आर्थिक विश्लेषण बताते हैं कि शिक्षा, तकनीक, निवेश और मीडिया जैसे क्षेत्रों में उनकी भागीदारी उनकी आबादी के अनुपात से काफी अधिक दिखाई देती है।

टेक्नोलॉजी सेक्टर में योगदान : टेक्नोलॉजी सेक्टर अमेरिका की आर्थिक ताकत का सबसे बड़ा स्तंभ माना जाता है। दुनिया की कई बड़ी टेक कंपनियों की स्थापना या नेतृत्व में यहूदी मूल के लोगों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। उदाहरण के तौर पर मार्क जुकरबर्ग (Meta), सर्गेई ब्रिन (Google के सह-संस्थापक) और लैरी एलिसन (Oracle) जैसे नाम अक्सर लिए जाते हैं। इन कंपनियों की संयुक्त बाजार कीमत कई ट्रिलियन डॉलर में है और इनका प्रभाव वैश्विक डिजिटल अर्थव्यवस्था पर साफ दिखाई देता है।

विशेषज्ञों के अनुसार अमेरिका के टेक सेक्टर में लगभग 10% से 15% नेतृत्व पदों पर यहूदी मूल के लोग रहे हैं। हालांकि यह भी सच है कि टेक उद्योग में एशियाई, यूरोपीय और अन्य समुदायों का योगदान भी बहुत बड़ा है।

वॉल स्ट्रीट और वित्तीय क्षेत्र : न्यूयॉर्क का वॉल स्ट्रीट वैश्विक निवेश का केंद्र माना जाता है। यहां स्थित बड़े निवेश बैंक, हेज फंड और प्राइवेट इक्विटी कंपनियां पूरी दुनिया की अर्थव्यवस्था को प्रभावित करती हैं।

इस क्षेत्र में भी कई प्रमुख नाम सामने आते हैं, जैसे माइकल ब्लूमबर्ग (Bloomberg LP), स्टीफन श्वार्ज़मैन (Blackstone) और कार्ल आइकान (Icahn Enterprises)। कई रिपोर्टों के अनुसार अमेरिका के बड़े निवेश फंड और प्राइवेट इक्विटी सेक्टर में यहूदी मूल के निवेशकों की भागीदारी लगभग 15% से 20% तक देखी जाती है।

मीडिया और मनोरंजन उद्योग : अमेरिका का मीडिया और हॉलीवुड उद्योग भी वैश्विक स्तर पर बहुत प्रभावशाली है। 20वीं सदी में हॉलीवुड की कई प्रमुख फिल्म कंपनियों की स्थापना यहूदी प्रवासियों ने की थी। Warner Bros., Paramount और MGM जैसे स्टूडियो इसके उदाहरण हैं।

आज भी अमेरिका के मीडिया और मनोरंजन उद्योग में उनकी महत्वपूर्ण उपस्थिति मानी जाती है। इससे यह स्पष्ट होता है कि मनोरंजन उद्योग के विकास में भी उनका योगदान ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण रहा है।

शिक्षा और शोध में योगदान : यहूदी समुदाय की सफलता का एक बड़ा कारण शिक्षा और शोध पर उनका गहरा ध्यान माना जाता है। दुनिया के कई प्रसिद्ध वैज्ञानिक, अर्थशास्त्री और विचारक इसी समुदाय से आए हैं।

एक रोचक तथ्य यह भी है कि अब तक दिए गए नोबेल पुरस्कारों में लगभग 20% से अधिक विजेता यहूदी मूल के रहे हैं, जबकि उनकी वैश्विक आबादी बहुत कम है। इससे शिक्षा और शोध के प्रति उनकी परंपरा का अंदाजा लगाया जा सकता है।

अमेरिका-इज़राइल संबंधः अमेरिका और इज़राइल के संबंध भी वैश्विक राजनीति का एक महत्वपूर्ण विषय रहे हैं। अमेरिका लंबे समय से इज़राइल का रणनीतिक सहयोगी रहा है। इसके पीछे रक्षा, तकनीक, कूटनीति और मध्य पूर्व की राजनीति जैसे कई कारण बताए जाते हैं।

हालांकि यह भी समझना जरूरी है कि किसी भी देश की विदेश नीति केवल किसी एक समुदाय या समूह से तय नहीं होती। अमेरिका की नीतियां कई राजनीतिक, आर्थिक और सुरक्षा हितों के आधार पर तय होती हैं।

दुनिया के लिए क्या संदेशः अमेरिका की अर्थव्यवस्था को समझने के लिए यह देखना जरूरी है कि वहां की ताकत बहु-सांस्कृतिक समाज और अवसरों की व्यवस्था से आती है। अलग-अलग पृष्ठभूमि के लोग वहां शिक्षा, उद्यमिता और नवाचार के माध्यम से आगे बढ़ते हैं।

यहूदी समुदाय का उदाहरण अक्सर इसलिए दिया जाता है क्योंकि उन्होंने सीमित आबादी के बावजूद शिक्षा, निवेश और उद्यमिता के माध्यम से वैश्विक स्तर पर प्रभाव बनाया है।

निष्कर्ष : अगर आंकड़ों के आधार पर देखा जाए तो अमेरिका में यहूदी समुदाय की आबादी लगभग 2% है, लेकिन व्यापार, तकनीक, वित्त और मीडिया के कई महत्वपूर्ण क्षेत्रों में उनका प्रभाव उनकी आबादी के अनुपात से अधिक दिखाई देता है। कई विश्लेषकों के अनुसार अमेरिका के बड़े कॉर्पोरेट और निवेश नेटवर्क में उनका प्रभाव लगभग 15% से 20% तक माना जाता है। लेकिन यह भी उतना ही महत्वपूर्ण है कि अमेरिका की आर्थिक शक्ति किसी एक समुदाय पर आधारित नहीं है। वहां विभिन्न देशों और संस्कृतियों से आए लोगों ने मिलकर एक मजबूत आर्थिक व्यवस्था बनाई है। दुनिया के लिए इससे सबसे बड़ी सीख यही है कि शिक्षा, नवाचार और उद्यमिता के माध्यम से कोई भी समाज वैश्विक अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण स्थान बना सकता है।

टी20 वर्ल्ड कपः आज इतिहास रचेगा भारत

दैनिक कारखाने का सफर। एजेंसी नई दिल्ली

आईसीसी पुरुष टी20 विश्व कप 2026 के फाइनल में भारत और न्यूजीलैंड रविवार को अहमदाबाद के नरेंद्र मोदी स्टेडियम में आमने-सामने होंगे। कई हफ्तों तक चले रोमांचक क्रिकेट और कई दिलचस्प मुकाबलों के बाद, टूर्नामेंट अपने निर्णायक मोड़ पर पहुंच गया है, जहां ट्रॉफी जीतने के लिए केवल एक ही टीम बची है। दोनों टीमों ने टूर्नामेंट में शानदार प्रदर्शन किया है और रास्ते में कुछ झटकों का सामना करते हुए जीत हासिल की है। फाइनल मुकाबला बेहद रोमांचक होने की उम्मीद है। दुनिया के सबसे बड़े स्टेडियमों में से एक नरेन्द्र मोदी स्टेडियम में भारत को 19 नवंबर 2023 को बड़ा झटका लगा था जब वह ऑस्ट्रेलिया से वनडे विश्व कप का फाइनल हार गया था। तब भारत ने भावुक नम आंखों वाले रोहित शर्मा को ड्रेसिंग रूम की सीढ़ियों पर चढ़ते हुए देखा था। केवल भारतीय टीम ही नहीं बल्कि स्टेडियम में मौजूद 93000 दर्शक भी सन्न रह गए थे। भारत ने हालांकि 2024 में रोहित शर्मा की कप्तानी में टी20 विश्व कप जीतकर इसकी काफी हद तक भरपाई कर दी थी। अब खेल के सबसे छोटे प्रारूप की भारतीय टीम सूर्यकुमार की कप्तानी में खिताब का बचाव करने और इस प्रतिष्ठित ट्रॉफी को तीन बार जीतने वाली पहली टीम बनने की कोशिश करेगी। एक कुशल बल्लेबाज और चतुर कप्तान सूर्यकुमार न केवल कप्तान के रूप में अपनी खुद की विरासत बनाने के लिए उत्सुक होंगे, बल्कि वह 19 नवंबर 2023 की पीड़ा को भी खत्म करना चाहेंगे।

सूर्यकुमार और उनके साथी ठीक 364 दिन पहले नौ मार्च, 2025 को भारत की आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी में न्यूजीलैंड की लगभग इसी टीम के खिलाफ मिली जीत से प्रेरणा लेने की कोशिश करेंगे। भले ही वह टूर्नामेंट 50 ओवर का था। सूर्यकुमार उस टीम का हिस्सा नहीं थे, लेकिन दुबई में मिली उस एकतरफा जीत से उन्हें हौसला मिल सकता है। फाइनल जीतने के लिए साहस के अलावा किस्मत का साथ भी जरूरी होता है। खेल एकदम 'परफेक्ट' होना जरूरी नहीं है, लेकिन सही समय पर सही चीजें होनी चाहिए। मौजूदा टूर्नामेंट के सेमीफाइनल में भारत की जीत तब लगभग तय हो गई थी जब हैरी ब्रूक ने संजू सैमसन का कैच छोड़ दिया था। भारत रविवार को न्यूजीलैंड की ऐसी किसी भी गलती का पूरा फायदा उठाने की कोशिश करेगा। भारत को अब तक इस टूर्नामेंट में किस्मत का साथ मिला है। अगर वह खिताब जीत जाता है तो उन्हें सराहना मिलेगी लेकिन अगर वह हार जाते हैं तो फिर बहुत बड़ा बवाल मच सकता है। सूर्यकुमार ने पिछले दो वर्षों में टीम का बहुत अच्छी तरह से नेतृत्व किया है, भले ही एक बल्लेबाज के रूप में वह उम्मीदों पर पूरी तरह खरा नहीं उतर पाए। रविवार का दिन उनके करियर के लिए निर्णायक क्षण होगा। अगर उनकी टीम खुशगवार मौसम में अच्छा प्रदर्शन करती है तो उनकी सारी नाकामियां पल भर में भुला दी जाएंगी। लेकिन भारत के लिए न्यूजीलैंड की चुनौती आसान नहीं होगी क्योंकि किसी भी दिन फिन एलन, लॉकी फर्ग्यूसन या मैट हेनरी जैसे खिलाड़ी अपनी क्षमता से कहीं बेहतर प्रदर्शन करना जानते हैं। मिचेल सैंटनर या ग्लेन फिलिप्स जैसे खिलाड़ी जानते हैं कि एक मजबूत टीम के खिलाफ किस तरह से चुनौती का सामना करना होता है। न्यूजीलैंड के लिए सबसे बड़ा खतरा 'अहमदाबाद का सरदार' होगा।

मंत्री सारंग ने नरेला क्षेत्र में अवैध अतिक्रमण के खिलाफ सख्त कार्रवाई के दिये निर्देश

शासकीय भूमि से अवैध कब्जे, मदरसे, फैक्ट्री और मांस की दुकानें हटाने के निर्देश

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

सहकारिता, खेल एवं युवा कल्याण मंत्री विश्वास कैलाश सारंग ने शनिवार को नरेला विधानसभा के वार्ड क्रमांक 69, 70 और 71 का दौरा कर शासकीय भूमि से अवैध कब्जे, मदरसे, फैक्ट्री और मांस की दुकानें हटाने के निर्देश दिए। क्षेत्रीय नागरिकों द्वारा अवैध अतिक्रमण को लेकर लगातार मिल रही शिकायतों के आधार पर मंत्री सारंग स्वयं मौके पर पहुंचे और प्रशासनिक अधिकारियों के साथ विस्तृत निरीक्षण कर स्थिति का जायजा लिया।

निरीक्षण के दौरान मंत्री सारंग ने शासकीय भूमि पर हुए अवैध अतिक्रमण को लेकर कड़ी नाराजगी व्यक्त की। उन्होंने नगर निगम, राजस्व, पुलिस सहित संबंधित विभागों के अधिकारियों को सख्त निर्देश देते हुए कहा कि अवैध अतिक्रमण पर बने स्थानों को पेयजल, विद्युत सहित किसी भी प्रकार के शासकीय कनेक्शन न दिए जाएं। उन्होंने निर्देश दिए कि यदि ऐसे स्थानों को पहले से कनेक्शन दिए गए हैं तो उन्हें तत्काल हटाया जाए तथा यह जांच की जाए कि किन अधिकारियों की अनुमति से यह कनेक्शन दिए गए। यदि किसी स्तर पर लापरवाही या मिलीभगत पाई जाती है तो संबंधित अधिकारियों के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई सुनिश्चित की जाए। मंत्री सारंग ने गुप्ता कॉलोनी, सुभाष कॉलोनी और शहंशाह गार्डन, अशोका गार्डन क्षेत्र में पहुंचकर शासकीय भूमि की स्थिति का निरीक्षण किया और स्थानीय रहवासियों से भी चर्चा कर उनकी समस्याओं को सुना। निरीक्षण के दौरान यह सामने आया कि कई स्थानों पर शासकीय भूमि पर अवैध रूप से कब्जा कर निर्माण कार्य किए गए हैं और कुछ जगहों पर बिना अनुमति के गतिविधियां संचालित की जा रही हैं। इस पर मंत्री सारंग ने मौके पर मौजूद नगर निगम, राजस्व और पुलिस विभाग के अधिकारियों को सख्त निर्देश देते हुए कहा कि ऐसे सभी अतिक्रमणों को चिन्हित कर तत्काल प्रभाव से कार्रवाई की जाए। मंत्री सारंग ने कहा कि शासकीय भूमि जनता की संपत्ति है और उस पर किसी भी प्रकार का अवैध कब्जा किसी भी स्थिति में स्वीकार नहीं किया जाएगा। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि शासकीय भूमि पर अवैध रूप से संचालित हो रहे मदरसे, फैक्ट्री और मांस की दुकानों की विस्तृत जांच कर कड़ी कार्रवाई सुनिश्चित की जाए। उन्होंने कहा कि यदि किसी ने नियमों का उल्लंघन कर शासकीय भूमि पर कब्जा किया है तो उसे तत्काल हटाया जाए और भूमि को अतिक्रमण मुक्त कराया जाए। मंत्री सारंग ने अधिकारियों को निर्देशित किया कि क्षेत्र में शासकीय भूमि का सर्वे कर विस्तृत सूची तैयार की जाए और जहां-जहां अतिक्रमण पाया जाए वहां चरणबद्ध तरीके से अभियान चलाकर उसे हटाया जाए। साथ ही यह भी सुनिश्चित किया जाए कि भविष्य में कोई भी व्यक्ति शासकीय भूमि पर अवैध कब्जा न कर सके। मंत्री सारंग ने अधिकारियों को यह भी निर्देश दिए कि नगर निगम, राजस्व और पुलिस विभाग संयुक्त रूप से अभियान चलाकर अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई करें। निरीक्षण के दौरान क्षेत्रीय नागरिकों ने मंत्री सारंग को कई स्थानों पर हो रहे अवैध निर्माण और अतिक्रमण की जानकारी दी। मंत्री सारंग ने नागरिकों को आश्वस्त करते हुए कहा कि क्षेत्र में अवैध गतिविधियों को किसी भी कीमत पर पनपने नहीं दिया जाएगा और शासकीय भूमि को पूरी तरह सुरक्षित रखने के लिए सख्त कदम उठाए जाएंगे। मंत्री सारंग ने कहा कि नरेला विधानसभा क्षेत्र के विकास और नागरिकों की सुविधा के लिए पूरी तरह से प्रतिबद्ध है। क्षेत्र में किसी भी प्रकार की अवैध गतिविधि, अतिक्रमण या शासकीय भूमि पर कब्जा करने वालों के खिलाफ कानूनी प्रावधानों के तहत कठोर कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने अधिकारियों को निर्देशित किया कि अतिक्रमण के विरुद्ध कार्रवाई में किसी प्रकार की लापरवाही न बरती जाए और निर्धारित समयसीमा में प्रभावी कार्रवाई सुनिश्चित की जाए।

दैनिक कारखाने का सफर अखबार का संपादकीय कार्यालय

गोबिंद टॉवर, क्वालिटी रेस्टोरेंट के पास, एसबी स्टूडियों के ऊपर पिपलानी पेट्रोल पंप के पास, सोनागिरी चौराहा रायसेन रोड भेल भोपाल। मोबाइल नंबरः 9826035849, 9425006706

गतांक से आगे : लोक कल्याण हेतु दादाजी का अवतरण

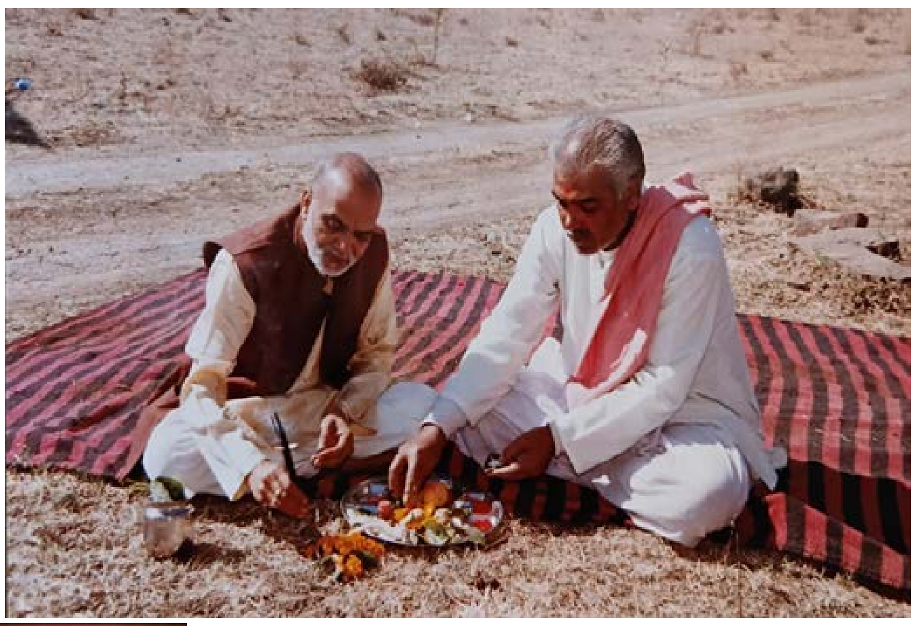

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

दादाजी धाम मंदिर की प्राण-प्रतिष्ठा से पूर्व, यज्ञशाला 16 मई 2010 दिन रविवार को अक्षय तृतीया के शुभ अवसर पर भूमि-पूजन के समय पूज्य दादाजी गुरुदेव साईंखेड़ा वाले द्वारा यह बताया गया कि सतरंगी झंडा लगाने की परंपरा सनातन धर्म की प्राचीन और पवित्र परंपराओं में से एक है। सनातन धर्म में मंदिर निर्माण और उसमें देव विग्रह की प्राण-प्रतिष्ठा को अत्यंत पवित्र, दिव्य और महान आध्यात्मिक अनुष्ठान माना जाता है। यह केवल एक धार्मिक क्रिया नहीं होती, बल्कि देवत्व को मूर्ति में स्थापित करने की दिव्य आध्यात्मिक प्रक्रिया होती है।

इसी महान अनुष्ठान की तैयारी के रूप में प्राचीन काल से ही मंदिरों में सतरंगी (सात रंगों वाला) ध्वज स्थापित करने की परंपरा चली आ रही है। प्राण-प्रतिष्ठा से पूर्व शुभ मुहूर्त में मंदिर परिसर अथवा मंदिर के शिखर पर यह सतरंगी ध्वज विधि-विधान से स्थापित किया जाता है। यह ध्वज इस बात का पवित्र संकेत होता है कि उस स्थान पर शीघ्र ही एक महान धार्मिक और आध्यात्मिक आयोजन संपन्न होने वाला है। इसके माध्यम से श्रद्धालुओं और आसपास के समाज को इस दिव्य अनुष्ठान की सूचना दी जाती है तथा उन्हें उसमें श्रद्धा और भक्ति के साथ सहभागी बनने का आमंत्रण भी प्राप्त होता है। सतरंगी ध्वज के सातों रंगों का भी गहरा आध्यात्मिक और दार्शनिक महत्व माना जाता है। सनातन परंपरा में सात संख्या को अत्यंत पवित्र और दिव्य माना गया है। यह सात रंग सप्तऋषि, सप्तलोक, सप्तधातु, सप्तस्वर, सप्तचक्र और प्रकृति की सात मूल ऊर्जा शक्तियों के प्रतीक माने जाते हैं। जब मंदिर के शिखर पर सतरंगी ध्वज फहराया जाता है, तब यह सम्पूर्ण सृष्टि की सकारात्मक ऊर्जा और दिव्य शक्ति को उस पवित्र स्थल की ओर आकर्षित करने का प्रतीक माना जाता है। धार्मिक मान्यता के अनुसार, जैसे ही यह ध्वज स्थापित किया जाता है, उसी क्षण से मंदिर परिसर में एक विशेष आध्यात्मिक वातावरण का निर्माण प्रारंभ हो जाता है। इसके पश्चात प्राण-प्रतिष्ठा तक निरंतर पूजा-अर्चना, मंत्रोच्चार, हवन, यज्ञ, भजन-कीर्तन और विविध धार्मिक अनुष्ठान आयोजित किए जाते हैं।

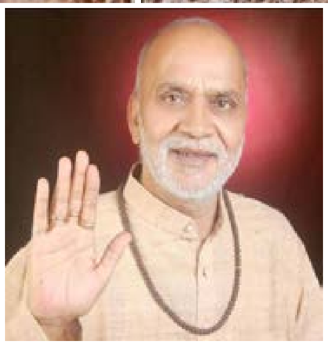

इन सतत आध्यात्मिक क्रियाओं के माध्यम से मंदिर परिसर का वातावरण शुद्ध, पवित्र और दिव्य बना रहता है। यह सम्पूर्ण प्रक्रिया उस स्थान को दिव्य ऊर्जा से परिपूर्ण करने का कार्य करती है। इस प्रकार सतरंगी ध्वज केवल एक प्रतीक नहीं है, बल्कि यह आध्यात्मिक जागरण, देव शक्तियों के आह्वान और समाज को धर्म एवं भक्ति से जोड़ने का पवित्र संकेत है। प्राण-प्रतिष्ठा जैसे महान अनुष्ठान की तैयारी में इसका विशेष महत्व होता है और यह परंपरा सनातन धर्म की समृद्ध आध्यात्मिक विरासत और धार्मिक संस्कृति का एक महत्वपूर्ण अंग है।

दादाजी धाम मंदिर में आज रंग पंचमी पर फूलों की होली का आयोजन

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

राजधानी भोपाल के रायसेन रोड के पास पटेल नगर स्थित जागृत एवं दर्शनीय तीर्थ स्थल दादाजी धाम मंदिर में आज रविवार को रंग पंचमी के पावन अवसर पर भव्य होली मिलन एवं फूलों की होली का आयोजन किया जाएगा। श्री श्री 1008 श्री दादाजी गुरुदेव चैरिटेबल ट्रस्ट के अध्यक्ष शिवरतन नामदेव ने बताया कि रासायनिक रंगों के दुष्परिणामों को ध्यान में रखते हुए मंदिर में प्रत्येक वर्ष की भाँति इस वर्ष भी सायं 4 बजे से पारंपरिक रूप से रंग-बिरंगे फूलों से भगवान एवं दादाजी गुरुदेव के साथ फूलों की होली खेली जाएगी। इस अवसर पर टेसू (पलाश), अमलतास, गेंदा, शेवंती एवं गुलाब के विभिन्न रंगों के फूलों से भक्तगण होली खेलकर प्रभु से मंगलकामना करेंगे। कार्यक्रम में सभी भक्तों से सहपरिवार उपस्थित होकर पुण्य लाभ प्राप्त करने का आग्रह किया गया है।

8वीं मप्र राज्य मास्टर्स बैडमिंटन चैंपियनशिप में रोमांचक मुकाबले

35 वर्ष वर्ग के फाइनल में हेमंत गीते और संदीप नियोगी आमने-सामने

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

भेल खेल प्राधिकरण, बरखेड़ा में आयोजित 8वीं मप्र राज्य मास्टर्स बैडमिंटन चैंपियनशिप में तीसरे दिन कई रोमांचक मुकाबले देखने को मिले। प्रतियोगिता का आयोजन भेल खेल प्राधिकरण, ऐबू (ऑल इंडिया बीएचईएल एम्पलाइज यूनियन) भोपाल तथा भोपाल जिला बैडमिंटन संघ के संयुक्त तत्वावधान में किया जा रहा है। आयोजन में ऐबू की सक्रिय भूमिका रही। यूनियन के महासचिव रामनारायण गिरी ने खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन करते हुए कहा कि इस प्रकार की प्रतियोगिताएं खिलाड़ियों को अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर प्रदान करती हैं और कर्मचारियों व खेल प्रेमियों में खेल भावना को बढ़ावा देती हैं।

दीपक श्रीवास्तव

हेमंत गीते

पुरुष एकल 35 वर्ष वर्ग का फाइनल अब भोपाल के हेमंत गीते और संदीप नियोगी के बीच खेला जाएगा। पहले सेमीफाइनल में गैर वरीयता प्राप्त भोपाल के हेमंत गीते ने पुष्पेंद्र को कड़े मुकाबले में 15-21, 21-18, 21-17 से हराकर फाइनल में प्रवेश किया। उल्लेखनीय है कि हेमंत गीते पहली बार मास्टर्स स्पर्धा में भाग ले रहे हैं। वहीं दूसरे सेमीफाइनल में भोपाल के संदीप नियोगी ने शीर्ष वरीय इंदौर के प्रतीक गुजराती को रोमांचक मुकाबले में 16-21, 21-19, 21-17 से पराजित कर खिताबी मुकाबले में जगह बनाई। प्रतियोगिता में वर्ल्ड मास्टर्स बैडमिंटन चैंपियनशिप में भारत का प्रतिनिधित्व कर चुके नीमच के दीपक श्रीवास्तव तथा भोपाल के विवेक तत्ववादी ने भी शानदार प्रदर्शन करते हुए क्रमशः 65 वर्ष एवं 60 वर्ष वर्ग के एकल और युगल के खिताबी मुकाबलों में प्रवेश किया।

चार दिवसीय इस प्रतियोगिता में प्रदेश के विभिन्न जिलों से आए खिलाड़ियों के बीच कड़े मुकाबले खेले जा रहे हैं, जिससे खेल प्रेमियों को उच्च स्तर का बैडमिंटन देखने को मिल रहा है।

अन्य प्रमुख परिणाम (सेमीफाइनल):

पुरुष एकल 40 वर्ष – प्रवीण भरथरे (भोपाल) ने अभिषेक (इंदौर) को 22-20, 19-21, 21-13 से हराया। सत्येंद्र होलकर (इंदौर) ने अंकित मोहता (इंदौर) को 21-18, 21-19 से पराजित किया।

पुरुष एकल 45 वर्ष – नितिन लश्करी (इंदौर) ने बिनोद कुमार (एमपीबीए) को 21-5, 21-8 से तथा हरिओम राठौर (इंदौर) ने सीमांत (एमपीबीए) को 21-9, 21-13 से हराया।

पुरुष एकल 50 वर्ष – सुधीर खरे (भोपाल) ने सुनील सातव (भोपाल) को 14-21, 21-12, 21-16 से हराया। अभिषेक अग्रवाल (एमपीबीए) ने रजनीश मारण (भोपाल) को 21-19, 21-18 से मात दी।

पुरुष एकल 55 वर्ष – आलोक कुमार (कटनी) ने पियूष भटनागर (भोपाल) को 21-7, 21-11 से तथा अमर चंदनानी (इंदौर) ने मुजीब खान (नीमच) को 21-19, 21-14 से हराया।

पुरुष एकल 60 वर्ष – विवेक तत्ववादी (भोपाल) ने संजय राठौरिया (भोपाल) को 21-6, 21-13 से हराया, जबकि रितेश चांदनी (एमपीबीए) ने रविंद्र (छतरपुर) को 21-14, 19-21, 24-22 से पराजित किया।

पुरुष एकल 65 वर्ष – बसंत कुमार सोनी (भोपाल) ने जयंत (भोपाल) को 21-2, 21-10 से हराकर फाइनल में प्रवेश किया।

इसके अलावा पुरुष युगल वर्गों में भी इंदौर और भोपाल के खिलाड़ियों का दबदबा देखने को मिला और कई रोमांचक मुकाबलों के बाद विभिन्न वर्गों के फाइनलिस्ट तय हो गए।

अखिल भारतीय लघुकथा पर्व आज

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

लघुकथा शोध केंद्र समिति भोपाल एवं दिल्ली शाखा द्वारा विष्णु प्रभाकर प्रतिष्ठान के सहयोग से हिंदी भवन दिल्ली में एक दिवसीय अखिल भारतीय लघुकथा पर्व, पुरस्कार वितरण एवं कृति लोकार्पण का आयोजन किया जा रहा है, | कथाकार बलराम सम्पादक समकालीन भारतीय साहित्य की अध्यक्षता में होने वाले इस आयोजन में वरिष्ठ साहित्यकार अतुल प्रभाकर, लक्ष्मी शंकर वाजपेई,अशोक भाटिया,सुभाष नीरव, बलराम अग्रवाल, ऋषि कुमार विशेष रूप से उपस्थित रहेंगे | इस आयोजन में 'बढ़ते कदम ' लघुकथा प्रतियोगिता में विजेता लघुकथाकारों को पुरस्कृत किया जायेगा साथ ही इस अवसर पर केंद्र द्वारा प्रकाशित दिल्ली, पंजाब, हरियाणा की। लघुकथाओं पर केंद्रित लघुकथा की पुस्तकों ग्राम्या, किन्नर विमर्श, सेरोगेसी सहित अन्य कृतियों का लोकार्पण भी किया जायेगा, शाम 4बजे से आयोजित यह आयोजन लब्ध प्रतिष्ठित साहित्यकार विष्णु प्रभाकर को समर्पित है इस आयोजन में दिल्ली भोपाल सहित देशभर के लघुकथा लेखक साहित्यकार भाग ले रहे हैं |

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर विशेष

'साधना द्वारा आत्म तेज जागृत करना', यही सच्चा सशक्तिकरण है

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

पिछले कुछ वर्षों से स्त्री-मुक्ति या महिला सशक्तिकरण, ये विषय चर्चा में हैं। 'महिलाओं का सशक्तिकरण' यह विषय अधिकांश समय आधुनिकीकरण अथवा पाश्चात्य और भारतीय संस्कृति-विरोधी विचारधारा के प्रभाव से चर्चा में आता है। 'अमर्यादित स्वतंत्रता ही मुक्ति है' ऐसी अयोग्य संकल्पना तथाकथित प्रगतिशील और संस्कृति-विरोधियों द्वारा प्रसारित करने के प्रयास किए जाने के कारण आज अनेक महिलाएं, युवतियां अयोग्य मार्ग पर चल रही हैं। उन्हें वास्तविक उन्नति के मार्ग पर लाना हो, तो अयोग्य संकल्पनाओं की धारणाओं को नष्ट कर उन्हें योग्य दिशा देनी होगी। यह दिशा संस्कृति का अनुसरण और धर्माचरण करने के संदर्भ में है; क्योंकि साधना करके प्राप्त होने वाला आत्मतेज ही व्यक्ति की व्यावहारिक और पारलौकिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त करता है। हिंदू धर्म में महिलाओं का स्थान - 'भारतीय संस्कृति में महिलाओं पर अनेक बंधन थे। हाल के समय में विशेषतः उन्हें शिक्षा मिलने के बाद महिलाओं को अनेक अधिकार प्राप्त हुए', ऐसा अपप्रचार अनेक लोगों द्वारा किया जाता है; किंतु अध्ययन करने पर वास्तविकता भिन्न होना ध्यान में आता है। भारतीय संस्कृति या सनातन हिंदू धर्म ने किसी पर भी अन्याय करने की शिक्षा कभी भी नहीं दी, अपितु सदैव 'वसुधैव कुटुम्बकम' अथवा 'सर्वेत्र सुखिनः सन्तु' ऐसी प्रार्थना की है। मनुस्मृति में 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।' अर्थात जहाँ नारी की पूजा होती है, वहां देवता रमण करते हैं, ऐसा कहा गया है। हिंदू धर्म ने महिलाओं को कभी भी उपभोग की वस्तु नहीं माना। अपितु हिंदू धर्म ने स्त्री को आदिमाया शक्ति का रूप माना है। विवाह के पश्चात कोई भी पूजा पत्नी की सहभागिता के बिना पूर्ण नहीं होती। हिंदू धर्म में देवताओं के नाम भी लक्ष्मी-नारायण, सीता-राम, राधे-श्याम, गौरी-शंकर इस प्रकार के हैं। जहाँ स्त्रियों को पुरुषों से भी ऊंचा स्थान दिया गया है, वहां स्त्री-पुरुष समानता की बातें करना अर्थात स्त्रियों का अवमूल्यन करने जैसा है। महिलाओं के लिए एक दिन नहीं, अपितु प्रत्येक दिन ही हिंदू धर्म ने दिया है। देवताओं के नाम उच्चारण करते समय भी पहले देवियों को वंदन करने वाला धर्म, अन्यायकारक है, ऐसा कहना ही हिंदू-द्वेष है, यह ध्यान में रखना चाहिए। विद्वान, शूर और कर्तव्यनिष्ठ महिलाएं - भारतीय संस्कृति में अनेक विद्वान, पराक्रमी, कुशल महिलाओं के नाम सुने जाते हैं । महाभारत युद्ध में कश्मीर के राजा के मारे जाने के बाद उसकी पत्नी यशोमती का राज्याभिषेक स्वयं भगवान श्रीकृष्ण ने किया था। अर्जुन की एक पत्नी चित्रांगदा मणिपुर राज्य की रानी थी। श्री राम वनवास गमन पर, राजगुरु वसिष्ठ ऋषि ने राज्याभिषेक हेतु सीता जी के नाम हेतु सुझाव दिया था; किंतु सीताजी ने श्रीराम के

साथ वनवास में जाने की अनुमति मांगी, इसलिए उसने राज्यकारभार नहीं दिया गया, ऐसा उल्लेख वाल्मीकि रामायण में है। तात्पर्य हिंदू धर्म ने कभी भी स्त्री को कर्तृत्व से नहीं रोका है। पुराणों में अनेक विदूषियों के उल्लेख मिलते हैं। गार्गी, मैत्रेयी, लोपामुद्रा आदि विदुषियां वेद-शास्त्र में पारंगत थीं। माता कैकेयी का आचरण कैसा भी रहा हो, किंतु दशरथ राजा के साथ कैकेयी भी युद्ध में शस्त्र हाथ में लेकर लड़ाई कर रही थी, ऐसा वर्णन है। हाल के समय का उदाहरण देखना हो, तो रानी लक्ष्मीबाई युद्ध शास्त्र में पारंगत थीं। देश प्रेम से ओतप्रोत होने के कारण ही छोटे से बालक को पीठ पर बांधकर वे युद्ध लड़ने गईं। शहाजीराजे के कर्नाटक में रहते समय राजमाता जिजाऊ ने पुणे में जहांगीर का राज्यकारभार संभाला। छत्रपति राजाराम की पत्नी रानी ताराबाई ने कर्तृत्व दिखाकर कोल्हापुर संस्थान की स्थापना की थी। अहिल्याबाई होलकर पति के निधन के बाद होलकर घराने की बागडोर संभाली । संक्षेप में शूर-वीर, विद्वान महिलाओं की परंपरा भारत को प्राप्त हुई है। इस परंपरा के पथिक बनना हो, तो अपने भीतर के गुणों का विकास करके त्रुटियों और हीन भावना पर विजय प्राप्त करनी चाहिए। 'छोटे या पाश्चात्य कपड़े ही आधुनिकता हैं', 'अंग्रेज़ी बोलना ही प्रगतिशीलता है' ऐसी अंधश्रद्धा त्याग देनी चाहिए। स्वच्छंदता जैसी बातों का त्याग करना चाहिए। स्वतंत्रता और स्वच्छंदता में भेद है। उसे समझना चाहिए। परिवार व्यवस्था भारत की शक्ति है। स्त्री परिवार व्यवस्था की रीढ़ है। यह रीढ़ जितनी मजबूत होगी, उतनी ही परिवार व्यवस्था सुदृढ़ रहेगी। सांस्कृतिक मूल्यों का संवर्धन महिलाओं ने अधिक मात्रा में किया है। आज विश्व भर के लोग भी 'बैक टू मदरहुड' कहते हुए परिवार व्यवस्था को बनाए रखने का प्रयास कर रहे हैं। हमें भी शालीनता और सुसंस्कृतता को बनाए रखने के संस्कार करने चाहिए। असुरक्षित महिला - आज देश की परिस्थिति का विचार करें, तो महिलाएं असुरक्षित हैं। जिस देश में एक महिला के शील रक्षण के विषय पर रामायण, महाभारत घटित हुए, उसी देश में आज प्रतिदिन सैकड़ों महिलाएं अत्याचार की शिकार हो रही हैं। 'नेशनल क्राइम रिकॉर्ड्स ब्यूरो' के आंकड़ों के अनुसार वर्ष 2019 में भारत में महिलाओं पर हिंसाचार के संदर्भ में 4.05 लाख घटनाओं की प्रविष्टि हुई। इनमें से 30 प्रतिशत घटनाएं घरेलू हिंसाचार की हैं, जबकि 8 प्रतिशत घटनाएं बलात्कार की हैं। 'ऑक्सफेम' इस वैश्विक विश्लेषण संस्था ने भारत में प्रत्येक 15 मिनट में एक लड़की के साथ बलात्कार होने की बात कही है। देश में वर्ष 2018 में बलात्कार की 34 हजार घटनाओं की प्रविष्टि हुई। 85 प्रतिशत प्रकरणों में आरोप निश्चित हुए; किंतु दंड केवल 27 प्रतिशत लोगों को ही हो सकी, ऐसा इस रिपोर्ट में कहा गया है। धर्मशिक्षण के अभाव में अनेक हिंदू युवतियां आज 'लव जिहाद' की शिकार हो रही हैं। रामराज्य में महिलाएं मध्यरात्रि में आभूषण पहनकर अकेली घर से बाहर जा सकती थीं। आज ऐसी स्थिति नहीं है; क्योंकि आज रामराज्य नहीं है। छत्रपति शिवाजी महाराज के काल में भी महिलाओं की ओर टेढ़ी दृष्टि से देखने वाले को हाथ-पाव काट दिए जाने का दंड मिला था । आज तुरंत दंड देना तो दूर; अपितु पीड़ित महिला की शिकायत भी सहजता से दर्ज नहीं की जाती, यह वास्तविकता है। केवल कठोर कानून बनाकर यह स्थिति नहीं बदलेगी, अपितु इसके लिए विभिन्न स्तरों पर प्रयास करने होंगे। शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक सक्षमता : महिलाओं को वास्तविक अर्थ में सक्षम बनाना हो, तो शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक ऐसे 3 स्तरों पर उपाय करने होंगे। प्रसिद्धि प्राप्ति के लिए मंदिर की परम्परा तोडकर गर्भगृह में घुसने से महिलाओं का सशक्तिकरण नहीं होता, यह ध्यान में रखना चाहिए। महिलाओं को शारीरिक स्तर पर सक्षम बनाने के लिए उन्हें स्वसंरक्षण प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। विद्यालय और महाविद्यालय स्तर पर इसके लिए प्रयास हो सकते हैं; किंतु केवल शारीरिक सक्षमता पर्याप्त नहीं है। परिस्थितियों का सामना करने का मनोबल और आत्मबल भी आवश्यक होता है। यह बल साधना और धर्माचरण के माध्यम से ही प्राप्त हो सकता है। आज अनेक महिलाएं, यहां तक कि विवाहित महिलाए भी माथे पर लाल गोल कुमकुम लगाने में लज्जा महसूस करती हैं। आधुनिकता के नाम पर पारंपरिक भारतीय परिधान छोड़कर छोटे कपड़े पहनती हैं। इस प्रकार उच्छृंखल आचरण से मनोबल और आत्मबल प्राप्त नहीं होगा, अपितु यह बल प्राप्त करने के लिए साधना ही करनी होगी। भक्ति और साधना के बल के कारण ही संत मीराबाई पर प्राणघातक संकट आने पर भी श्रीकृष्ण ने उनका अद्भुत रूप से रक्षण किया। भक्ति में ही शक्ति है, यह ध्यान में रखकर अपनी भाव भक्ति बढ़ानी चाहिए। 'साधना द्वारा आत्म तेज जागृत करना', यही सच्चा सशक्तिकरण है, यह ध्यान में रखना चाहिए। राजमाता जीजामाता, झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, देवी अहिल्याबाई होलकर, रानी चेनम्मा जैसी वीरांगनाओं के आदर्शों पर चलना ही सशक्तिकरण।

`लोकध्वनि से बाल ध्वनि तक' विषय पर विमर्श एवं काव्यपाठ आयोजित

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

बाल साहित्य शोध सृजन पीठ, साहित्य अकादमी, संस्कृति परिषद, भोपाल द्वारा
' लोक ध्वनि से बाल ध्वनि तक'
विषय पर विमर्श एवं काव्यपाठ
सागर के होटल वरदान सभागार
में आयोजित किया गया ।

बाल साहित्य शोध सृजन पीठ की निदेशक डॉ मीनू पांडे ने मंचस्थ अतिथियों का पुष्प भेंटकरएवं स्मृति चिन्ह भेंटकर स्वागत किया एवं कार्यक्रम में अपना स्वागत एवं आधार वक्तव्य प्रस्तुत किया |प्रथम सत्र में दिये गये विषय पर विमर्श एवं द्वितीय सत्र में बाल साहित्यकारों द्वारा काव्यपाठ किया गया।

स्वागत भाषण में डॉ मीनू पांडेय नयन ने कहा कि लोकध्वनि जब बाल ध्वनि के रुप में गूंजने लगेगी तो बालकों का नैतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विकास सुनिश्चित हो जायेगा।

सरस्वती वंदना मुकेश तिवारी ने प्रस्तुत की। प्रथम सत्र का संचालन सुनीला सराफ एवं द्वितीय सत्र का संचालन अंबिका यादव द्वारा किया गया।

प्रथम सत्र में विषय प्रवर्तन वरिष्ठ साहित्यकार उमाकांत मिश्रा ने किया।

भोपाल से पधारे वरिष्ठ बाल साहित्यकार घनश्याम मैथिल अमृत ने कहा कि 'अपने संस्कार और संस्कृति की रक्षा के लिए लोक से जुड़ना जरूरी है।सोशल मीडिया का बढ़ता हुआ प्रभाव हमारी भाषा भूषा और भोजन को दूषित कर रहा है।'

भोपाल से पधारे वरिष्ठ बाल साहित्यकार गोकुल सोनी ने कहा -
'लोक ध्वनि से बाल ध्वनि को समाज कितना ध्यान देता था यह इससे जाहिर होता है कि ऋग्वेद यजुर्वेद एवं अथर्ववेद में बच्चों की शिक्षा और संस्कार संबंधित सूक्त दिये हुये हैं।'

वरिष्ठ पत्रकार आशीष द्विवेदी ने बताया कि बच्चों में होने वाले डिजिटल अपराध रोकने के लिए माता-पिता को स्वयं इस आभासी दुनिया से दूरी बनाये रखनी होगी और बच्चों से संवाद स्थापित करना होगा।

बाल साहित्यकार कविता शुक्ला ने ध्वनि के विभिन्न प्रकारों पर अपना वक्तव्य केंद्रित करते हुये लोक ध्वनि की विशेषताओं के बारे में जानकारी प्रदान की।

प्रसिद्ध शिक्षाविद डॉ वर्षा तिवारी ने पौराणिक ग्रंथों के संरक्षण एवं बच्चों के बीच पठन-पाठन की आवश्यकता की ओर सभी का ध्यानाकर्षण किया।

द्वितीय सत्र में अध्यक्ष की भूमिका में वृंदावन राय सरल रहे। काव्यपाठ करने वालों में प्रमुख रचनाकार रहे -

आर के तिवारी, डॉ नलिन निर्मल, डॉ प्रभात कटारे, प्रतिभा द्विवेदी 'मुस्कान' , दीपाली गुरु, प्रदीप पांडेय, पवन रजक, भानुप्रताप यादव 'शुभारंभ', नीतु तिवारी और हर्षिता प्रताप सिंह।

कार्यक्रम में सागर के पचास से अधिक प्रबुद्ध साहित्यकार उपस्थित रहे।

निराला सृजन पीठ संस्कृति विभाग मध्य प्रदेश शासन की वर दे श्रृंखला के अंतर्गत महिला दिवस की पूर्व संध्या पर फागोत्सव

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

निराला सृजन पीठ संस्कृति विभाग मध्य प्रदेश शासन की वर दे श्रृंखला के अंतर्गत शनिवार को अपराह्न 2:30 बजे से अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस की पूर्व संध्या पर शक्ति उत्सव एवं फागोत्सव का कार्यक्रम व्याख्यान माला एवं रचनापाठ के माध्यम से संपन्न हुआ ।भोपाल के प्रसिद्ध रविंद्र भवन का अंजनी सभागार शक्ति के पावन महोत्सव का साक्षी बना। कार्यक्रम की गरिमा को बढ़ाने में विशिष्ट अतिथि द्वय वरिष्ठ साहित्यकार डॉ विनय राजाराम एवं
डॉ साधना गंगराड़े तथा प्रमुख वक्ता के रूप में भोपाल की प्रसिद्ध शिक्षाविद डॉ वंदना शर्मा की उपस्थिति सराहनीय रही ।प्रसिद्ध पर्वतारोही श्रीमती ज्योति रात्रे की अध्यक्षता में कार्यक्रम नारी चेतना विषय को सादर समर्पित रहा ।इस कार्यक्रम में लगभग 35 कवयित्रियों ने अपनी गरिमामयी उपस्थित से इस कार्यक्रम को नई ऊंचाई प्रदान की।
इस अवसर पर पूरा वातावरण साहित्यिक भावनाओं और नारी शक्ति के उत्सव से ओत-प्रोत दिखाई दिया। कार्यक्रम का उद्देश्य समाज में नारी के आत्मसम्मान, स्वाभिमान और जागरूकता की नई चेतना को प्रोत्साहित करना था।
कार्यक्रम की सूत्रधार एवं संयोजक निराला सृजन पीठ की निदेशक डॉ साधना बलवटे ने बताया कि निराला के माध्यम से शक्ति-उत्सव मना रहे हैं।कार्यक्रम का उद्देश्य निराला के साहित्य के माध्यम से समाज में नारी के आत्मसम्मान, स्वाभिमान और जागरूकता की नई चेतना को प्रोत्साहित करना है। निराल के साहित्य की स्त्री सशक्त स्त्री है, साहसी स्त्री है, कुरीतियों से लड़ने वाली स्त्री है। कार्यक्रम के प्रारम्भ में नृत्यांगना डॉ विजया शर्मा की शिष्याओं द्वारा होली नृत्य प्रस्तुति किया गया एवं डॉ रंजना शर्मा, पूर्णिमा चतुर्वेदी जी के द्वारा होली लोकगीतों की प्रस्तुति ने उल्लास भर दिया। विशिष्ट अतिथि डॉ बिनय राजाराम ने अपने उद्बोधन में बताया कि निराला के संस्कारों में स्त्री का माँ के रूप का प्रभाव है। डॉ साधना गंगराड़े ने निराला की नारी चेतना को उनकी रचनाओं के माध्यम से कहा
निराला के साहित्य में स्त्री चेतना विषय पर मुख्य वक्ता डॉ वंदना शर्मा ने कहा कि
निराला जी के गद्य साहित्य में भी जीवन का विसंगति पूर्ण यथार्थ,कथ्य के चमत्कारिक प्रभाव शोषक से घृणा, अस्वीकृति,वितृष्णा,पूंजीवाद पर आघात, तिलमिलाहट,प्रतिशोध,रूढ़िवाद इन सब युगीन प्रभावों में भी नारी का गौरव कभी क्षीण नहीं मिलता।
श्रीमती सीमा हरि शर्मा ,श्रीमती सुनीता यादव यादव ,सुश्री मालती बसंत .सुश्री मधु लता शर्मा, सुश्री ममता बाजपे,सुश्री सुधा दुबे,सुश्री प्रेक्षा सक्सेना ,डॉ सीमा अग्रवाल, संस्कृति सिंह कृति ,सुश्रीअर्चना मुखर्जी डॉ रेनू श्रीवास्तव ,सुश्री रंजना शर्मा ,सुश्री वीणा विद्या गुप्ता ,सुश्री प्रतिभा श्रीवास्तव अंश .डॉ वंदना मिश्रा , सुश्री नीता सक्सेना सुश्री,सुनीता शर्मा सिद्धि ,सुश्री सीमा शिवहरे ,सुश्री प्रतिभा द्विवेदी ,सुश्री मनोरमा श्रीवास्तव ,सुश्री श्याम गुप्ता,सुश्री मांडवी सिंह,अपर्णा सिद्धभ, कुमकुम गुप्ता,सुश्री चित्रा धोटे,डॉ प्रियंका श्रीवास्तव,सुश्री नीता श्रीवास्तव श्रद्धा,सुश्री निमिषा गुप्ता,.डॉ दीप्ति मेहता,सुश्री अंशु वर्मा,श्रीमती उषा सोनी
सुश्री श्रद्धा यादव,सुश्री जया केतकी शर्मा
.श्रीमती मृदुल त्यागी ।कार्यक्रम में साहित्यकारों ने अपनी-अपनी कविताओं, गीतों और भावपूर्ण रचनाओं के माध्यम से नारी की शक्ति, संवेदना, संघर्ष और उसके अदम्य साहस को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त किया।
"नारी चेतना" विषय को केंद्र में रखते हुए प्रस्तुत रचनाओं ने यह संदेश दिया कि आज की नारी केवल परिवार की आधारशिला ही नहीं, बल्कि समाज और राष्ट्र के विकास की सशक्त धुरी भी है।
रचना पाठ के दौरान नारी के धैर्य, त्याग, ममता और आत्मविश्वास को शब्दों में पिरोकर प्रस्तुत किया गया, जिसने उपस्थित श्रोताओं को भावविभोर कर दिया। कार्यक्रम की सूत्रधार एवं संयोजक निराला सृजन पीठ की निदेशक डॉ साधना बलवटे ने बताया कि.
कार्यक्रम का कुशल संचालन अपर्णा सिद्धभट्टी ने किया।

विद्युत कर्मचारियों की समस्याओं के समाधान हेतु मुख्यमंत्री व ऊर्जा मंत्री के नाम ज्ञापन

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

मध्यप्रदेश बिजली कर्मचारी महासंघ (भारतीय मजदूर संघ से संबद्ध) द्वारा प्रदेश के विद्युत क्षेत्र के कर्मचारियों की लंबित समस्याओं के निराकरण की मांग को लेकर आज माननीय मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव जी एवं ऊर्जा मंत्री प्रद्युम्न सिंह तोमर के नाम ज्ञापन सौंपा गया। महासंघ के प्रदेश महामंत्री सुशील कुमार पांडेय के नेतृत्व में प्रदेश भर से आये 500 कार्यकर्ता की उपस्थिति में महासंघ कार्यालय बिजली नगर कॉलोनी, गोविंदपुरा से रैली निकालकर मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी के प्रबंध निदेशक कार्यालय पहुंचकर मध्य क्षेत्र के प्रबंध निदेशक श्रीमान ऋषि गर्ग जी को मुख्यमंत्री एवं ऊर्जा मंत्री के नाम ज्ञापन सौंपा गया। इस अवसर पर सुशील कुमार पाण्डेय ने बताया कि मध्यप्रदेश के विद्युत क्षेत्र में कार्यरत नियमित, संविदा एवं आउटसोर्स कर्मचारियों की विभिन्न समस्याओं को लेकर संगठन द्वारा पूर्व में भी कई बार विभिन्न स्तरों पर पत्राचार एवं चर्चा की गई है, किंतु अब तक समस्याओं का संतोषजनक समाधान नहीं हो सका है। ज्ञापन में विशेष रूप से संविदा कर्मचारियों के नियमितीकरण, लंबे समय से कार्य कर रहे कर्मचारियों को नियुक्ति दिनांक से नियमित करने तथा लंबित आदेश शीघ्र जारी करने की मांग की गई है। इसके साथ ही नियमित कर्मचारियों की वेतन विसंगतियों को दूर करने, वर्ष 2009 से 2018 के बीच नियुक्त कर्मचारियों के वेतन में सुधार करने तथा तृतीय एवं चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों के लिए गृह जिला स्थानांतरण नीति लागू करने की मांग भी उठाई गई। विद्युत कंपनियों के औषधालय में फार्मासिस्टों को पदोन्नति के अवसर एवं पैरामेडिकल स्टाफ के पदों को कंपनी संरचना में सम्मिलित किया जावे।
महासंघ ने यह भी मांग की कि विद्युत कंपनियों में कार्यरत आउटसोर्स कर्मचारियों के लिए हरियाणा प्रदेश की तर्ज पर अलग निगम बना कर उनके हितों की रक्षा की जाए, उनके वेतन में प्रतिवर्ष वृद्धि का प्रावधान किया जाए तथा उन्हें चिकित्सा, जोखिम भत्ता, रात्रिकालीन भत्ता सहित अन्य सुविधाएं प्रदान की जाएं। इसके अतिरिक्त आउटसोर्स कर्मचारियों के लिए 50 लाख रुपये का बीमा कवर तथा सेवा सुरक्षा सुनिश्चित करने की मांग भी रखी गई। विद्युत मंडल के सेवनित निवृत्ति अधिकारी एवं कर्मचारियों को निर्मित कर्मचारियों के साथी महंगाई भत्ता उनके पेंशन में दिया जाए तथा अधिकारियों कर्मचारियों की पेंशन जिला कोषालय से प्रदान की जाए। साथ सभी वर्ग के कर्मचारियों की मांगे सम्मलित की गई। महासंघ ने चेतावनी दी कि यदि विद्युत कर्मचारियों की जायज मांगों पर शीघ्र सकारात्मक निर्णय नहीं लिया गया तो संगठन प्रदेशभर में आंदोलन करने के लिए बाध्य होगा। मध्यप्रदेश बिजली कर्मचारी महासंघ ने आशा व्यक्त की है कि राज्य सरकार विद्युत कर्मचारियों की समस्याओं के समाधान के लिए शीघ्र उचित निर्णय लेकर कर्मचारियों के हितों की रक्षा करेगी।

भेल अग्रवाल समाज का होली मिलन कार्यक्रम कल धन्वंतरी पार्क में बड़े धूमधाम से मनाया गया

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

भेल अग्रवाल समाज के अध्यक्ष आर. के. गुप्ता एवं महासचिव सुरेश अग्रवाल (एल. आई. सी.) ने जानकारी देते हुए बताया कि कार्यक्रम में राधा-कृष्ण सँग फूलों की होली खेली गयी और फाग गीतों पर ढ़ोल मजारों के बीच लोग जमकर थिरके. राधा कृष्ण भक्ति से वातावरण रंगमय हों उठा. सभी गिले शिकवे भुलाकर आपस मे गले मिले
*कार्यक्रम के अंत में ठंडाई व स्वल्पहार वितरण हुआ.।

एलपीजी सिलेंडर के 60 रुपये मूल्य वृद्धि के विरोध में गोविंदपुरा कांग्रेस जनों ने प्रदर्शन किया गया

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

एलपीजी गैस सिलेंडर के दाम में 60 रुपये की बढ़ोतरी के विरोध में आज श्रमिक नेता दीपक गुप्ता के नेतृत्व में गोविंदपुरा कांग्रेस जनों के बरखेड़ा पठानी क्षेत्र में प्रदर्शन किया एवं रैली निकाली गई जिसमें में मुख्य रूप से पूर्व मंत्री पी सी शर्मा जी शामिल हुए बड़ी संख्या में कार्यकर्ता एवं आम नागरिक शामिल हुए। कार्यकर्ताओं ने गैस सिलेंडर में बढ़ी हुई कीमतों के खिलाफ नारेबाजी करते हुए बढ़ी हुई कीमतों को तुरंत वापस लेने की मांग की। दीपक गुप्ता ने कहा कि गैस सिलेंडर के दामों में लगातार हो रही बढ़ोतरी से आम जनता, खासकर मध्यम वर्ग और गरीब परिवारों पर आर्थिक बोझ बढ़ रहा है।
कार्यकर्ताओं ने सरकार से मांग की कि एलपीजी सिलेंडर के दाम में की गई 60 रुपये की बढ़ोतरी को तत्काल वापस लिया जाए और आम जनता को राहत दी जाए। इस अवसर पर दीपक गुप्ता साथ सुशील प्रजापति, उपेंद्र सिंह, नवीन सराठे, उदयवीर सिंह, सचिन लारिया, लोकेंद्र शर्मा, चेतन साहू, ओंकार सिंह, सतीश कनोजिया, पार्थ मुखर्जी सहित सैकड़ों कांग्रेस जन शामिल हुए।

सार्वजनिक क्षेत्र में महिला फोरम (WIPS), बीएचईएल, भोपाल द्वारा शनिवार को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

सार्वजनिक क्षेत्र में महिला फोरम (WIPS), बीएचईएल, भोपाल द्वारा शनिवार को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलन और देवी सरस्वती की पूजा के साथ हुआ। इस अवसर पर मुख्य अतिथि पी.के. उपाध्याय, ईडी एचईपी, भोपाल थे। विशिष्ट अतिथि रोजी उपाध्याय, अध्यक्ष बीएचईएल लेडीज क्लब भोपाल; विशेष अतिथि और कार्यक्रम की वक्ता गुंजन वार्ष्णेय, अतिरिक्त आयकर आयुक्त; विशिष्ट अतिथि संगीता रामनाथन; टी.यू. सिंह, महाप्रबंधक (एचआर); सभी महाप्रबंधक/डीआरओ और WIPS के सभी सदस्य कार्यक्रम में उपस्थित थे।
डॉ. पोमिला सचदेव, यूनिट समन्वयक, WIPS, बीएचईएल, भोपाल ने सभी गणमान्य व्यक्तियों, अतिथियों, वरिष्ठ अधिकारियों और WIPS सदस्यों का स्वागत किया।
अतिथि वक्ता गुंजन वार्ष्णेय ने समाज में महिलाओं की भूमिका के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने उपस्थित सभी लोगों को प्रोत्साहित किया और बताया कि कैसे महिला नेतृत्व सकारात्मक बदलाव ला सकता है। उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के विषय "दान से लाभ" पर भी प्रकाश डाला। उन्होंने एक अच्छा नेता बनने और समाज के समग्र उत्थान के लिए अन्य महिलाओं की मदद करने पर बल दिया।
बीएचईएल के ईडी एचईपी पी.के. उपाध्याय ने कहा कि महिलाएं बुद्धिमानी से सोचती हैं और समाज में बदलाव का स्रोत हैं। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि महिलाएं बीएचईएल के साथ-साथ विभिन्न संगठनों में उच्च पदों पर हैं और राष्ट्र निर्माण में योगदान दे रही हैं। उन्होंने समाज में महिलाओं के योगदान के बारे में बात की और उनके प्रति आभार व्यक्त किया। टी.यू. सिंह, महाप्रबंधक (एचआर) और अध्यक्ष ने सार्वजनिक क्षेत्र में महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए WIPS द्वारा उठाए गए कदमों की सराहना की और उन्हें बधाई दी। उन्होंने कहा कि महिलाओं में अपार क्षमता है और शक्ति और सरस्वती बनकर उन्होंने इसे सिद्ध किया है । कार्यक्रम के अंत में, WIPS बीएचईएल भोपाल द्वारा आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के लिए पुरस्कार वितरण किया गया। नम्रता जायसवाल, WIPS सचिव और प्रबंधक (एचआर-कानून) ने धन्यवाद ज्ञापन किया ।

लहर लहर लहराए, केसरिया झंडा जनमत का, धर्म ध्वजा महोत्सव में गूंजे जयकारे

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

भोपाल श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ जिनालय इंद्र विहार कालोनी एयर पोर्ट रोड में ध्वजा महोत्सव में भगवान शंखेश्वर पार्श्वनाथ भगवान आदिनाथ भगवान शांति नाथ की प्रतिमाओं का श्रृंगार कर भक्ति भाव से भगवान जिनेंद्र की प्रतिमाओं का अभिषेक और पूजा अर्चना के साथ अनुष्ठान अधिक किए गए,, इस अवसर पर जिनालय को आकर्षक साज सज्जा के साथ सजाया संवारा गया,मंदिर समिति के अध्यक्ष आई एल मेहता ने बताया आचार्य श्री मुक्ति सागर सुरीश्वर महराज एवं आचार्य श्री अचल मुक्ति सागर महाराज साहब के सानिध्य में भक्ति मय भजनों के साथ धर्म ध्वजा की शोभा यात्रा निकली,, प्रभु की भक्ति में लगे जयकारे विधि विधान से मंत्रोच्चार के साथ अनुष्ठान किए गए , आचार्य मुक्ति सागर महाराज ने कहा जिनालय के शिखर पर लहराते हुए ध्वजा को देखकर मन हमेशा प्रफुलित होता हे, श्रद्धालुओं द्वारा नमोकर मंत्र का जाप के साथ सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति हुई, इस अवसर पर अध्यक्ष आई एल मेहता मां आशा पूरा दरबार के ललित तातेड श्वेतांबर मूर्ति पूजक संघ के अध्यक्ष राजेश तातेड श्री आदिनाथ संघ तुलसी नगर के पूर्व अध्यक्ष वीरेंद्र कोठारी समाज सेवी सुधीर जैन पिपलानी के सचिव अरविंद जैन कोहेफिजा संघ अध्यक्ष महेश तातेड मंदिर समिति के मनोज संघवी दीपक भंडारी हसमुख कोठारी अभय मेहता शरद धारीवाल अमित कीमती अनुराग मेहता सुशील कोठारी संदीप मुनोट यतींद्र जैन महिला मंडल अध्यक्ष शिल्पा कोठारी उपाध्यक्ष नीताजी सिंघवी
सेक्रेटरी नीधी मुणोत ,रीना भंडारी कोषाध्यक्ष सुधा कोठारीसहित अनेक लोग मौजूद थे।

प्राणी शास्त्र के विद्यार्थियों ने जानी मत्स्य पालन पद्धति

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

करियर कॉलेज ऑटोनॉमस के प्राणी विज्ञान विभाग की डॉ. अंशुमाला चतुर्वेदी के द्वारा लगभग 45 विद्यार्थियों को केंद्रीय मत्स्य शिक्षा संस्थान (सीआईएफई), आईसीएआर, पवारखेड़ा का दौरा कराया गया।
इस दौरे से छात्रों को मछली पालन की पद्धतियों और तकनीकों की व्यापक समझ प्राप्त हुई।
सीआईएफई के विशेषज्ञों ने मछली पालन और उससे जुड़ी प्रक्रियाओं के बारे में बहुमूल्य जानकारी प्रदान करी प्राचार्य डॉक्टर चरनजीत कौर के मार्गदर्शन में आयोजित इस शैक्षणक दौरे में विद्यार्थियों को मत्स्य पालन से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारियां प्राप्त हुई

कांग्रेस के अजब गजब उम्मीदवार!

कांग्रेस पार्टी को इस बार राज्यसभा की एक सीट का फायदा हो रहा है। वह इसलिए हो रहा है क्योंकि एमके स्टालिन ने तमिलनाडु से एक सीट देने का फैसला किया। कांग्रेस पार्टी के नेता दिखावा करने के लिए पवन खेड़ा का नाम ले रहे थे। सबको पता था कि अगर तमिलनाडु से कांग्रेस को सीट मिलेगी तो उत्तर भारत का कोई व्यक्ति नहीं जाएगा। तभी स्टालिन की कृपा से मिल रही सीट पर एम क्रिस्टोफर तिलक को उम्मीदवार बनाया गया है। कहा जा रहा है कि फिल्म स्टार विजय की वजह से कांग्रेस और स्टालिन दोनों परेशान हैं। विजय कास्ट न्यूट्रल हैं लेकिन उनके ईसाई होने की वजह से कांग्रेस को समस्या हो रही है। तभी क्रिस्टोफर तिलक की लॉटरी लग गई।

अजब गजब उम्मीदवारों में सबसे कमाल का नाम हरियाणा का है। कांग्रेस ने अपने कोटे की एक सीट के लिए करमबीर सिंह बौध को उम्मीदवार बनाया है। नामांकन के आखिरी दिन यानी पांच मार्च से एक दिन पहले जब कांग्रेस सर्किल में यह नाम आया तो सब हैरान थे। किसी को पता नहीं था कि इस नाम का कोई नेता पार्टी में है। बताया जा रहा है कि राहुल गांधी की टीम ने यह नाम तय कराया है। उधर हिमाचल प्रदेश में मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खु ने अलग अपना खेल कर दिया। उनको अपने राज्य से न तो पूर्व प्रदेश अध्यक्ष और अपनी प्रतिद्वंद्री रहीं प्रतिभा सिंह को भेजना था और न आनंद शर्मा को जाने देना था। सो, वे अनुराग शर्मा को लेकर आए। कांग्रेस ने यह अच्छा किया कि छत्तीसगढ़ में कोई प्रयोग करने की बजाय फूलोदेवी नेताम को फिर से उच्च सदन में भेजने का फैसला किया।

भारत तक पहुंची आंच!

भारत के अतिथि जहाज को भारतीय जल क्षेत्र के करीब डुबो देना भारत की प्रतिष्ठा के प्रति अमेरिका की बेपरवाही की मिसाल है। इसलिए इस घटना पर भारत को औपचारिक विरोध एवं आपत्ति अवश्य दर्ज करानी चाहिए। ईरान पर अमेरिका-इजराइल के हमले से पश्चिम एशिया में शुरू हुए युद्ध की आंच बुधवार को भारत तक पहुंच गई, जब भारतीय जलसीमा के करीब ईरान के जहाज इरिस देना को अमेरिका ने डुबो दिया। अमेरिका के युद्ध मंत्री पीटर हेगसेट ने इसे अपने देश की एक बड़ी सैन्य सफलता के रूप में पेश कर इस बारे में कोई भ्रम नहीं रहने दिया कि ये कार्रवाई योजनाबद्ध ढंग से की गई। अमेरिका ने ऐसा करने को सोचा, यह भारत के प्रति उसके तौहीनी नजरिए का परिचायक है। आखिर वो जहाज भारतीय नौसेना के अंतरराष्ट्रीय बेड़ा समीक्षा कार्यक्रम- मिलन- में भाग लेने भारत के आमंत्रण पर आया था। विशाखपत्तमन में इस कार्यक्रम में भाग लेकर वह लौट रहा था। ईरान ने कहा है कि चूंकि जहाज युद्ध से बाहर के क्षेत्र से गुजर रहा था, अतः उसकी हथियार प्रणालियों को "सुरक्षित एवं निष्क्रिय" मोड में रखा गया था। ईरान के विदेश मंत्री अब्बास अराघची ने कहा है- 'हम मान कर चल रहे थे कि हम दोस्ताना जल क्षेत्र में हैं, अतः जहाज पर सवार अधिकांश लोग समारोहों में भाग लेने वाले गैर लड़ाकू कर्मचारी थे।' डॉनल्ड ट्रंप प्रशासन ने ऐसे जहाज पर हमला करने को सोचा, यह तमाम अंतरराष्ट्रीय कानूनों और मर्यादाओं को ठेंका दिखाने के उसके नजरिए मेल खाता है। मगर ऐसा भारत के अतिथि जहाज के साथ भारतीय जल क्षेत्र के करीब करना भारत की चिंताओं के प्रति उसकी असंवेदनशीलता की भी मिसाल है। इसलिए इस घटना पर भारत को औपचारिक विरोध एवं आपत्ति दर्ज करानी चाहिए। दुनिया में प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त करने की सबसे पहली शर्त खुद अपनी प्रतिष्ठा के प्रति सचेत रहना होता है। वेनेजुएला और ईरान के मामलों में अंतरराष्ट्रीय नियमों के पक्ष में आवाज ना उठा कर भारत ने पहले ही अपनी अंतरराष्ट्रीय हैसियत की अनदेखी की है। मगर अब बात सैद्धांतिक रुख तय करने की नहीं, बल्कि अपने मामले में बोलने की है। कम-से-कम यह अवश्य कहा जाना चाहिए कि अमेरिका अपने युद्ध की आंच हम तक पहुंचाए। भारत के क्षितिज पर वैसे ही अमेरिकी युद्ध के आर्थिक दुष्परिणामों का अंदेशा सघन होता जा रहा है।

आधी आबादी का अनसुना सवाल – अधिकार, न्याय और सम्मान

'विकसित भारत' का सपना तब तक अधूरा है, जब तक आधी आबादी न्याय और सम्मान के लिए संघर्ष करती रहेगी। एक स्त्री सुबह उठती है। चूल्हा जलाती है, बच्चों को स्कूल भेजती है, खेत में काम करने निकलती है या दफ्तर के लिए बस पकड़ती है। रात को लौटती है, थकी हुई, चुप। और फिर सो जाती है, अगली सुबह के लिए। उसके सपनों में एक सवाल बार-बार दस्तक देता है, क्या मेरा जीवन सिर्फ इतना ही है? क्या मुझे वह नहीं मिलेगा, जिसका मुझे हक है? यह सवाल भारत की करोड़ों महिलाओं की साझा पुकार है। इसी पुकार की गूंज में हर साल दुनिया अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस मनाती है, लेकिन जब उत्सव का शोर थम जाता है, तब भी स्त्री उसी देहरी पर खड़ी मिलती है, अधिकारों का बोझ सीने पर लिए, न्याय की प्रतीक्षा में। सवाल उठता है कि क्या वाकई कुछ बदल रहा है, या बस एक रस्म अदायगी बन गई है, जिसमें नेता भाषण देते हैं, कंपनियां रंग-बिरंगे विज्ञापन देती हैं और शाम होते-होते सब कुछ पहले जैसा हो जाता है? इस वर्ष के महिला दिवस पर संयुक्त राष्ट्र का ध्येय-वाक्य है- 'अधिकार, न्याय और कार्रवाई, सभी महिलाओं और लड़कियों के लिए।' ये केवल तीन शब्द नहीं, एक आईना हैं, जो हमें असलियत दिखाते हैं भारत का संविधान दुनिया के सबसे प्रगतिशील दस्तावेजों में गिना जाता है। अनुच्छेद 14 समानता का अधिकार देता है, अनुच्छेद 15 लिंग के आधार पर भेदभाव को वर्जित करता है और अनुच्छेद 21 हर नागरिक को गरिमा के साथ जीने का हक देता है। हकीकत क्या है? जब एक पीड़िता थाने की सीढ़ियां चढ़ती है, या एक दहेज-पीड़िता न्याय पाने के लिए गवाह ढूंढ़ती है, एक कामकाजी स्त्री दफ्तर में उत्पीड़न की शिकायत करती है, तो उसे इन अनुच्छेदों की नहीं, जमीनी हकीकत की दीवार से टकराना पड़ता है। यही दीवार सबसे ऊंची है। इस दीवार की ऊंचाई राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरो के आंकड़े मापते हैं। देश में महिलाओं के विरुद्ध अपराधों में दोषसिद्धि की दर 30 फीसद से भी कम है। बलात्कार के मामलों में तो यह और भी कम है। थाने में प्राथमिकी दर्ज होने से लेकर अदालत में फैसला आने तक का सफर इतना लंबा, थकाने वाला और कई बार अपमानजनक होता है कि अधिकांश पीड़ित महिलाएं बीच रास्ते में ही हार मान लेती हैं। गौरतलब है कि देश के उच्च न्यायालयों और उच्चतम न्यायालय में महिला न्यायाधीशों की संख्या मात्र 14 से 17 फीसद के बीच है। जब न्याय देने की कुर्सी पर ही उनकी आवाज नहीं होगी, तो न्याय की परिभाषा किस नजरिए से गढ़ी जाएगी? वहीं, राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण के अनुसार, भारत में 30 फीसद से अधिक विवाहित महिलाओं ने शारीरिक या यौन हिंसा झेली है। इनमें से बहुत कम पुलिस या किसी सरकारी संस्था के पास जाती हैं। कई जंजीरें हैं, जो लोहे की नहीं, समाज की बनाई हुरइं, जिन्हें तोड़ना कहीं ज्यादा मुश्किल होता है। सदियों से बनाई सोच को तोड़ने के लिए एक अलग किस्म का साहस चाहिए। यह हिंसा बच्ची के जन्म के बाद शुरू हो जाती है। भारत के कई हिस्सों में आज भी बेटियों की शादी 18 वर्ष से पहले करा दी जाती है। कल तक जो लड़की स्कूल की किताबें पढ़ती थी, अगली सुबह 'घर-गृहस्थी' की जिम्मेदारी उठाने लगती है। उसका बचपन एक रात में खत्म हो जाता है, बिना उसकी मर्जी और उसके सपनों की परवाह किए। इसके अलावा, दहेज का दानव खड़ा रहता है। कानूनन अपराध होते हुए भी दहेज सामाजिक परंपरा के नाम पर अब भी जारी है। हर साल कितनी ही महिलाएं इस आग में जलती हैं, कुछ शाब्दिक रूप से, कुछ भीतर से, चुपचाप। जब समाज ने घर और बाजार में स्त्री को असुरक्षित किया, तो यह उम्मीद थी कि शायद डिजिटल दुनिया एक खुला आसमान होगी। मगर वहां भी वही पुरानी मानसिकता नए औजारों के साथ पहुंच गई आनलाइन उत्पीड़न, अश्लील तस्वीरें प्रचारित कर देने की धमकी, सोशल मीडिया के मंचों पर लगातार पीछा, ये सब महिलाओं को डिजिटल संसार से दूर धकेलने का काम कर रहे हैं। इस संकट को कृत्रिम मेधा ने और विकराल बना दिया है। छद्म तकनीक से बनाए जा रहे नकली वीडियो और तस्वीरें महिलाओं की जिंदगी बर्बाद करने का सबसे ताजा और भयावह हथियार हैं। पीड़िता न चाहते हुए भी एक ऐसी लड़ाई लड़ने पर मजबूर हो जाती है, जिसे उसने शुरू ही नहीं की थी। जिस रफ्तार से तकनीक बदल रही है, उस रफ्तार से हमारी कानूनी व्यवस्था नहीं बदल रही और इस अंतर की कीमत महिलाएं चुकाती हैं। दरअसल, जो महिला आर्थिक रूप से किसी पर निर्भर है, वह हिंसा, अन्याय और शोषण के सामने मजबूर हो जाती है। वह जानती है कि अगर घर छोड़ा, तो जाएगी कहां, बच्चों को पालेगी कैसे। यही मजबूरी उसे उस घर में रोके रखती है, जो कई बार उसके लिए कैद साबित होता है। भारत की महिला श्रम भागीदारी दर दुनिया के सबसे निचले पायदानों में से एक है। असुरक्षित परिवहन, कार्यस्थल पर उत्पीड़न, बच्चों की देखभाल के लिए सुविधाओं का अभाव- सब मिलकर उसे बाहर निकलने से रोकते हैं। कानून तो काफी हैं, लेकिन कमी उनके ईमानदार क्रियान्वयन की है। हर थाने में महिला सहायता कक्ष हो, जो वास्तव में काम करे। द्रुत न्यायालयों की संख्या बढ़े और महिलाओं के मामले तय समयसीमा में निपटें। जब व्यवस्था की नींव मजबूत होगी, तभी उस पर न्याय का महल खड़ा हो सकेगा। जब सोच बदलेगी, तभी व्यवस्था सुधरेगी। सोच बदलती है शिक्षा से। स्कूल के पाठ्यक्रम में लड़के-लड़कियों के लिए लैंगिक समानता और स्त्री सम्मान की शिक्षा अनिवार्य हो। बचपन से बेटों को यह सिखाया जाए कि स्त्री का सम्मान उनकी जिम्मेदारी है, कोई एहसान नहीं। अज्ञानता उत्पीड़कों की सबसे बड़ी ताकत है और जागरूकता उनकी सबसे बड़ी कमजोरी। शिक्षा से जागरूकता आएगी और जागरूकता से भागीदारी। इन सबसे ऊपर जो बात है, वह है घर की दहलीज से शुरू होने वाली मानसिकता। कानून ढांचा देते हैं, राजनीति रास्ता खोलती है, लेकिन असली बदलाव तब आता है, जब सोच बदलती है। जब 'बेटी बचाओ' का नारा केवल दीवारों पर नहीं, दिलों में उतरेगा जब किसी लड़की का आगे पढ़ना, नौकरी करना, अपनी पसंद से जीवन चुनना, इन सब पर समाज की नहीं, उसकी अपनी मर्जी चलेगी, जब एक बच्ची के पैदा होते ही घर में वही रोशनी होगी जो बेटे के जन्म पर होती है, तब समझना चाहिए कि हम सभ्य होने की राह पर चल पड़े हैं। 'विकसित भारत' का सपना तब तक अधूरा है, जब तक आधी आबादी न्याय और सम्मान के लिए संघर्ष करती रहेगी। कोई भी देश तब तक सही मायने में आगे नहीं बढ़ सकता, जब तक उसकी बेटियां डर-डर कर जी रही हों। कोई समाज तब तक सभ्य नहीं कहा जा सकता, जब तक महिलाएं रात को अकेले बाहर निकलने में असुरक्षित महसूस करती हों।

अपने गुदगुदे गद्दों की लिप्सा में!

युद्ध तीन हफ्ते चले या तीन महीने, जब ख़त्म होगा तो ईरान अगर हारा तो हार कर भी जीत जाएगा और इज़राइल-अमेरिका जीते भी तो जीत कर हार जाएंगे। इस युद्ध का नतीजा कुछ भी निकले, एक बात तय है कि इस के बाद किसी भी देश पर आक्रमण करने की हिम्मत अमेरिका बरसों-बरस नहीं करेगा। दुनिया भर को हर वक्त अपनी धौंसबाज़ी के तेवर दिखाने वाले अमेरिकी राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप ईरान से उलझने के बाद भीतर से इतने भयभीत हो गए हैं कि अंडे के आकार वाले अपने दफ़्तर में आसपास खड़े पादरियों के साथ थरथर मुद्रा में बैठे पूजा-पाठ कर रहे हैं। ट्रंप ने अमेरिका के अलग-अलग हिस्सों से चुनींदा पादरियों को ओवल ऑफिस बुलाया। पादरियों ने अपने हाथ ट्रंप के बदन पर रखे और प्रार्थना की कि 'इस चुनौतीपूर्ण दौर में' उन्हें 'अलौकिक मार्गदर्शन' और 'बुद्धमत्ता' हासिल हो। अमेरिकी सेना की हिफ़ाज़त के लिए भी पादरियों ने विशेष आराधना की। ट्रंप अर्चना-वंदना की पूरी अवधि में अपनी कुर्सी पर सिर झुका कर बैठे रहे और मन-ही-मन कुछ बुदबुदाते रहे। इस पूजन के मुख्य पादरी टॉम मुलिन्स थे। वे दक्षिण फ्लोरिडा के क्राइस्ट फैलोशिप चर्च के संस्थापक हैं। पादरी बनने के पहले वे फुटबॉल-कोच थे। पॉम बीच गार्डन्स में रहते हैं। ट्रंप का मूल निवास मार-ए-लागो रिसॉर्ट क्लब भी पॉम बीच गार्डन्स में ही है। पूजा-पाठ के बारे में मुलिन्स ने बताया है कि हम ने परमपिता से प्रार्थना की है कि वे ट्रंप के दिलो-दिमाग को इस मौक़े पर विवेक-बुद्धि से ओतप्रोत रखें। हम ने देवलोक से यह अनुरोध भी किया है कि वह अमेरिकी सेना की रक्षा करे। लक्षण साफ हैं। ट्रंप बाहर से दहाड़ रहे हैं, मगर अंदर-ही-अंदर ख़ुद की मिमियाहट ख़ुद ही सुन रहे हैं। उन्हें अहसास हो गया है कि ईरान के मामले में वे बुरी तरह फंस गए हैं। ईरान को ले कर उन का आकलन ग़लत निकल गया है। तबाह होते ईरान ने इज़राइल को भी बर्बाद करने में कोई कसर बाक़ी नहीं रखी है। अरब और खाड़ी के मुल्क़ों में जितने भी अमेरिकी सैन्य अड्डे थे, उन्हें ईरान ने तक़रीबन ध्वस्त कर दिया है। अमेरिकी प्रशासन को ईरान की तरफ़ से इतने असरदार प्रतिकार का अंदाज़ नहीं था। सो, अब ट्रंप को लग रहा है कि उन्होंने इज़राइली प्रधानमंत्री बैंजामिन नेतन्याहू के चक्कर में अच्छी-ख़ासी मुसीबत मोल ले ली है। ईरान-प्रसंग में अमेरिका दुनिया में अकेला-सा पड़ गया है और ट्रंप अमेरिका में अकेले पड़ गए हैं। अमेरिकी संसद से ले कर वहां की सड़कों तक पर ट्रंप विरोधी माहौल है। उन्हें अमेरिका को नाहक एक परेशानी में फंसाने के लिए ज़िम्मेदार माना जा रहा है। संयुक्त राष्ट्रसंघ भी ईरान युद्ध की बेहद सख़्ती से निंदा कर चुका है। ज़्यादातर देश ईरान पर हमले को अनुचित बता चुके हैं। इन में वे देश भी शामिल हैं, जो आमतौर पर अमेरिका के हमजोली और हमसफ़र माने जाते हैं। ज़ाहिर है कि इस सब ने ट्रंप के आत्मविश्वास को भीतर से बुरी तरह हिला दिया है और वे पालनहारे की शरण में चले गए हैं। 'तेरे बिन हमरा कौनो नाहीं' की यह मनोदशा किन परिस्थितियों में व्यक्ति का आलिंगन करती है, आप जानते ही हैं। युद्ध तीन हफ्ते चले या तीन महीने, जब ख़त्म होगा तो ईरान अगर हारा तो हार कर भी जीत जाएगा और इज़राइल-अमेरिका जीते भी तो जीत कर हार जाएंगे। इस युद्ध का नतीजा कुछ भी निकले, एक बात तय है कि इस के बाद किसी भी देश पर आक्रमण करने की हिम्मत अमेरिका बरसों-बरस नहीं करेगा। ईरान युद्ध से दुनिया भर में उस की दादागीरी का, उस की धौंसपट्टी का, उस की लुच्चागिरी का अंतिम अध्याय लिखा जा रहा है। यह युद्ध ट्रंप की व्यक्तिगत राजनीतिक यात्रा पर भी पूर्ण विराम लगाने वाला साबित होगा। ईरान युद्ध से किस-किस की अर्थव्यवस्था पर क्या-क्या असर पड़ेगा, इस का विश्लेषण अलग-अलग विशेषज्ञ हर रोज़ कर रहे हैं। युद्ध के नफ़ा-नुक्सान पर 'जाकी रही भावना जैसी' के आवरण से झांकती टिप्पणियां हम आजकल दिन-रात सुन-पढ़ रहे हैं। इस युद्ध से पूरी दुनिया पर होने वाले तरह-तरह के प्रभावों को हम आने वाले दिनों में देखेंगे-भुगतेंगे। मगर जो सब से बड़ा और तक़रीबन अमिट असर यह युद्ध छोड़ कर जाएगा, वह यह होगा कि दशकों-दशक लोग यह याद करेंगे कि, अमेरिका और इज़राइल तो छोड़िए, किस तरह अपने-अपने स्वार्थ साधने की हवस में किन-किन मुल्क़ों ने नैतिकता और न्याय के सिद्धांतों को उठा कर ताक पर रख दिया था? अर्थवान लोग कभी नहीं भूलेंगे कि कैसे, जब शांति वार्ताएं जारी थीं और चौबीस घंटे बाद एक समझौते पर दस्तखत करने के आसार पूरी तरह बन गए थे, तब अमेरिकी बघर्रे ने ईरानी मेमने पर खराब हो गई अपनी नीयत को एकदम नंगा कर दिया और कौन-कौन फिर भी तमाशबीन बना रहा? कैसे, जब तमाम अंतरराष्ट्रीय नियम-परंपराओं को लात मार कर किनारे कर देने के बाद एक सार्वभौम मुल्क़ के सर्वोच्च नेता की हत्या कर दी गई तो किन-किन की ज़ुबान से अफ़सोस के दो लफ़्ज़ भी नहीं निकले? कैसे जब भारत का मेहमान बन कर आए हथियारविहीन ईरानी युद्धपोत को अपने घर वापस जाते वक्त अमेरिकी पनडुब्बी ने हिंद महासागर में टारपीडो से ध्वस्त कर दिया तो, बाकी तो छोड़िए, मेज़बान तक की ज़बान भी ख़ामोश ही बनी रही? लोग याद करेंगे कि एक ऐसा भी वक्त था, जब पांच-छह हज़ार बरस पुरानी सभ्यता को अपने में समाए एक मुल्क़ के अनीतिपूर्ण विध्वंस पर, उतनी ही पुरानी सभ्यता की विरासत वाले एक देश में ऐसे लोग भी मौजूद थे, जिन की ख़ुशी का कोई ठिकाना नहीं था। वे इस बर्बादी का ज़श्न मना रहे थे। कौन भूलेगा कि विश्व राजनय के मूल्यों, परंपराओं और पवित्रता का जब पूरी निर्लज्जता से चीरहरण हो रहा था तो यह दृश्य देख कर भी किस-किस की पराक्रमी छाती सिकुड़ कर चूं-चूं बन गई थी? मुझे तो अच्छी तरह याद है। आप को भी याद है न कि जब अलगू चौधरी अपने दोस्त जुम्मन शेख के खिलाफ़ फ़ैसला देने से हिचकिचा रहा था तो खाला जान ने उस से क्या सवाल किया था? खाला जान ने पूछा था, 'क्या बिगाड़ के डर से ईमान की बात न कहोगे?' प्रेमचंद की कहानी पंच परमेश्वर में खाला जान का यह प्रश्न इतिहास का सब से मार्मिक प्रश्न है। यही प्रश्न आज मुझे अपने प्रधानमंत्री नरेंद्र भाई मोदी के सिर पर मंडराता दिख रहा है। यही प्रश्न मुझे अपने चौथे स्तंभ के पीछे से झांकता दिखाई दे रहा है कि बिगाड़ के डर से क्या ईमान की बात न कहोगे?

–पंकज शर्मा

कबूतरी संचार की पुरानी व्यवस्था!

ओडिशा पुलिस की यह सेवा अनूठी है। 1946 में, द्वितीय विश्व युद्ध के ठीक बाद, ओडिशा पुलिस ने इसे शुरू किया। सबसे पहले नक्सल प्रभावित कोरापुट जिले में प्रयोग किया गया। धीरे-धीरे यह 38 स्थानों (जिलों, सब-डिवीजनों, सर्कलों और पुलिस स्टेशनों) तक फैल गई। इस सेवा के चरम पर 19 'पिजन लॉफ्ट' सक्रिय थे, जहां 1500 से अधिक प्रशिक्षित कबूतर तैनात थे। आज के डिजिटल युग में जहां व्हाट्सएप, वीडियो कॉल, इंटरनेट और सैटेलाइट फोन से पल भर में संदेश दुनिया के किसी भी कोने में पहुंच जाते हैं, वहां एक प्राचीन संचार माध्यम अभी भी जीवित है – 'कैरियर पिजन सर्विस'। यह कोई काल्पनिक कहानी नहीं, बल्कि वास्तविकता है। ओडिशा पुलिस की कैरियर पिजन सर्विस दुनिया की एकमात्र ऐसी पुलिस फोर्स है जो इस विरासत को आज भी संरक्षित रखे हुए है। यह सेवा न सिर्फ इतिहास की याद दिलाती है, बल्कि प्राकृतिक आपदाओं में जब आधुनिक संचार व्यवस्था ध्वस्त हो जाती है, तब एक विश्वसनीय बैकअप के रूप में काम आती है। एक ऐसा माध्यम जो हजारों वर्षों से मानव सभ्यता का अभिन्न अंग रहा है। 'कैरियर पिजन' या 'होमिंग पिजन' का इतिहास प्राचीन काल से जुड़ा है। मिस्र में लगभग 3000 ईसा पूर्व से ही कबूतरों को संदेशवाहक के रूप में इस्तेमाल किया जाता था। फारस, यूनान और रोमन साम्राज्य में इनकी व्यापक उपयोगिता थी। यूनानियों ने ओलंपिक खेलों के परिणाम इन कबूतरों के जरिए शहर-दर-शहर पहुंचाए। चंगेज खान ने अपने विशाल साम्राज्य में 'पिजन नेटवर्क' स्थापित किया। मध्यकाल में यूरोप के युद्धों और मध्य पूर्व के व्यापारियों ने इनका सहारा लिया। भारत में भी यह परंपरा बहुत पुरानी है। चंद्रगुप्त मौर्य के काल में फारसी प्रभाव से 'पिजन पोस्ट' शुरू हुई थी। मुगल और ब्रिटिश काल में पुलिस और सेना दोनों ने इसका इस्तेमाल किया। प्रथम और द्वितीय विश्व युद्ध में 'कैरियर पिजनों' ने जान भी बचाई, फ्रांस में 'चेर आमी' नामक कबूतर ने 194 अमेरिकी सैनिकों की जान बचाई थी। भारत में भी ब्रिटिश काल से पुलिस स्टेशनों के बीच संचार के लिए 'पिजन सर्विस' चली आ रही थी। लेकिन आज की बात करें तो ओडिशा पुलिस की यह सेवा अनूठी है। 1946 में, द्वितीय विश्व युद्ध

के ठीक बाद, ओडिशा पुलिस ने इसे शुरू किया। सबसे पहले नक्सल प्रभावित कोरापुट जिले में प्रयोग किया गया। धीरे-धीरे यह 38 स्थानों (जिलों, सब-डिवीजनों, सर्कलों और पुलिस स्टेशनों) तक फैल गई। इस सेवा के चरम पर 19 'पिजन लॉफ्ट' सक्रिय थे, जहां 1500 से अधिक प्रशिक्षित कबूतर तैनात थे। हर लॉफ्ट पर एक इंस्पेक्टर, तीन सब-इंस्पेक्टर, एक सहायक सब-इंस्पेक्टर और 35 कांस्टेबल तैनात थे। यह सेवा न सिर्फ सामान्य संचार, बल्कि चुनावों और आपदाओं में भी काम आई। 1976-77 के चुनावों और 1982 के 'फ्लैश फ्लड्स' में जब सड़कें-ब्रिज बह गए और वायरलेस-टेलीफोन फेल हो गए, तब इन कबूतरों ने सरकारी संदेश पहुंचाए। सबसे रोचक घटना 13 अप्रैल 1948 की है। तब भारत के प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू संबलपुर, ओडिशा में थे। उन्हें 265 किलोमीटर दूर कटक में तत्काल निर्देश भेजने थे, सुबह 6 बजे नेहरू का हस्तलिखित संदेश लेकर एक 'कैरियर पिजन' उड़ा। ठीक 11:20 पर, यानी महज 5 घंटे 20 मिनट में, वह कटक पहुंच गया। जब नेहरू खुद कटक पहुंचे तो अपना मूल संदेश और वही कबूतर देखकर दंग रह गए, वे हैरान और प्रसन्न थे। यह घटना ओडिशा पुलिस की 'पिजन सर्विस' की विश्वसनीयता का जीवंत प्रमाण है। 1954 में दिल्ली में अंतरराष्ट्रीय डाक प्रदर्शनी में इन कबूतरों का प्रदर्शन किया गया। 1989 में तत्कालीन राष्ट्रपति आर। वेंकटरामन जब कटक आए तो इन कबूतरों को देखकर मुग्ध हो गए। 1999 के 'सुपर साइक्लोन' में जब तटीय इलाकों में संचार लाइनें पूरी तरह ठप हो गईं, तब इन कबूतरों ने लाज रखी। इनकी गति औसतन 55 से 80 किलोमीटर प्रति घंटा होती है। ये एक बार में 400-500 किलोमीटर उड़ने की क्षमता रखते हैं। 'बेल्जियन होमर' नस्ल के ये कबूतर चुंबकीय क्षेत्र का पता लगाकर अपने घोंसले तक आसानी से पहुंच जाते हैं। 2008 में आधुनिक संचार के चलते इसे औपचारिक रूप से बंद कर दिया गया। लेकिन ओडिशा पुलिस ने इसे पूरी तरह खत्म नहीं होने दिया। मुख्यमंत्री नवीन पटनायक के आदेश पर दो 'लॉफ्ट' अभी भी बरकरार रखे गए, एक कटक में ओडिशा पुलिस मुख्यालय पर 105 'बेल्जियन होमर पिजन' और दूसरा अंगुल के पुलिस ट्रेनिंग कॉलेज पर 44 पिजन। कुल लगभग 150 प्रशिक्षित कबूतर आज भी सेवा में हैं। अब इन्हें सिर्फ सांस्कृतिक और औपचारिक उपयोग के लिए रखा गया है। ये कबूतर गणतंत्र दिवस, स्वतंत्रता दिवस की परेड में शांति, प्रेम और स्वतंत्रता का संदेश लेकर उड़ते हैं। हाल ही में भुवनेश्वर में 25 कबूतरों ने 30 किलोमीटर की दूरी मात्र 29 मिनट में तय की। आज जब साइबर हमले, प्राकृतिक आपदाएं और इमरजेंसी में मोबाइल नेटवर्क फेल हो जाते हैं, तब यह सेवा सिर्फ विरासत नहीं, बल्कि सुरक्षा की गारंटी है। ओडिशा पुलिस के स्पेशल डीजी (कम्युनिकेशंस) अरुण रे के अनुसार, "यह भारत का सबसे अच्छा रखा गया राज है।" गौरतलब है कि सीएजी ने इसकी लागत पर आपत्ति जताई थी, लेकिन मुख्यमंत्री ने साफ कहा, "विरासत को बचाओ।" यह सेवा हमें सिखाती है कि प्रगति का मतलब पुरानी चीजों को फेंकना नहीं, बल्कि उन्हें संभाल कर रखना है। आज युवा पीढ़ी स्मार्टफोन पर जीती है, लेकिन जब वे इन कबूतरों को उड़ते देखते हैं तो इतिहास जीवंत हो उठता है। ऐसे में यदि स्कूलों-कॉलेजों व अन्य कार्यकर्मों में इनका प्रदर्शन करवाया जाए, तो न सिर्फ़ नई पीढ़ी को बरसों पुरानी विरासत जानने का मौका मिलेगा बल्कि पर्यटन को भी बढ़ावा मिले। ड्रोन और सैटेलाइट के युग में भी ये पंख वाले डाकिया हमें याद दिलाते हैं कि प्रकृति की शक्ति आज भी अजेय है। ओडिशा पुलिस की यह पहल दुनिया के लिए मिसाल है। अमेरिका, यूरोप या एशिया की कोई अन्य पुलिस फोर्स आज ऐसा नहीं कर रही। यह सिर्फ ओडिशा का गौरव नहीं, बल्कि पूरे भारत की सांस्कृतिक विरासत है। हमें इसे और मजबूत करना चाहिए। ज्यादा 'लॉफ्ट', ज्यादा प्रशिक्षण, ज्यादा जागरूकता किया जाए। क्योंकि संचार सिर्फ तकनीक नहीं, बल्कि विश्वास और विश्वसनीयता का मामला है। जब आधुनिक दुनिया इंस्टेंट मैसेजिंग पर निर्भर है, तब ये उड़नहार संदेशवाहक हमें सिखाते हैं – कुछ चीजें कभी पुरानी नहीं होतीं, वे सिर्फ विरासत बन जाती हैं। ओडिशा पुलिस की 'कैरियर पिजन सर्विस' इसी विरासत का जीवंत प्रतीक है। इसे बचाए रखना हमारी जिम्मेदारी है, ताकि आने वाली पीढ़ियां भी इन पंखों की उड़ान में इतिहास को महसूस कर सकें।

s–रजनीश कपूर

चीन के बाद होर्मुज स्ट्रेट से भारतीय जहाजों की भी आवाजाही शुरू, सीक्रेट समझौता हुआ ? IRGC ने US को दी चेतावनी

एजेंसी तेहरान

चीन के बाद भारतीय कार्गो जहाज भी होर्मुज जलडमरूमध्य से गुजरने लगे हैं। ट्रैकिंग डेटा से पता चला है कि भारत के दो कार्गो जहाज पुष्पक और अब परिमल इस व्यापारिक मार्ग से पूरी रफ्तार के साथ गुजर रहे हैं। इससे पहले ईरान ने सिर्फ चीन के कार्गो जहाजों को ही इस रास्ते से गुजरने की मंजूरी दी थी। लेकिन अब जबकि दो भारतीय जहाज इस रास्ते में हैं तो ऐसा लग रहा है कि भारत और ईरान के बीच कोई समझौता हो गया है या फिर ये दोनों जहाज अपने रिस्क पर इस रास्ते से गुजर रहे हैं।
होर्मुज से भारतीय जहाजों के गुजरने की रिपोर्ट उस वक्त आई है जब भारत और ईरान के विदेश मंत्रियों के बीच टेलीफोन पर बातचीत हुई है। ईरान के विदेश मंत्री सैयद अब्बास अराघची ने भारत के विदेश मंत्री सुब्रह्मण्यम जयशंकर से टेलीफोन पर बात की थी। इसके अलावा ईरान के उप-विदेश मंत्री सईद खतीबज़ादेह भी नई दिल्ली पहुंचे और उन्होंने भारतीय अधिकारियों के साथ विदेश मंत्री एस. जयशंकर से मुलाकात की थी।
होर्मुज स्ट्रेट से उस वक्त भारतीय कार्गो जहाज गुजर रहे हैं जब ईरान की इस्लामिक रिवॉल्यूशनरी गार्ड (IRGC) ने चेतावनी देते हुए कहा है कि वो अमेरिका का इंतजार कर रहे हैं। रिवोल्यूशनरी गार्ड्स ने कहा है कि वे US सेना के होर्मुज स्ट्रेट से जहाजों को एस्कॉर्ट करने का इंतजार कर रहे हैं। अमेरिका ने कहा है कि वो इस व्यापारिक मार्ग से गुजरने वाले जहाजों को सुरक्षा प्रदान करेगा। इसी को लेकर IRGC ने ये नई चेतावनी जारी की है। समाचार एजेंसी AFP की रिपोर्ट के मुताबिक IRGC ने चेतावनी देते हुए कहा है कि "हमारी सलाह है कि कोई भी फैसला लेने से पहले अमेरिकी 1987 में अमेरिकी सुपरटैंकर ब्रिजटन में लगी आग को याद करें।"
दूसरी तरफ पहले पुष्पक और अब परिमल को होर्मुज स्ट्रेट से गुजरते देखा जा रहा है। इस व्यापारिक मार्ग को फिलहाल 'मौत का मुंह' कहा जा रहा है। इसीलिए माना जा रहा है कि या तो ईरान के साथ भारत का कोई सीक्रेट समझौता हो गया है या फिर इन दोनों जहाजों ने बहुत बड़ा रिस्क लिया है। ईरान समर्थित हूती विद्रोही इन समुद्री रास्तों में जहाजों पर हमले कर रहे हैं ऐसे में हो सकता है कि ईरान ने भारत को आश्वासन दिया हो कि "भारतीय झंडे" वाले जहाजों को निशाना नहीं बनाया जाएगा। यही वजह है कि ये जहाज बिना डरे वहां से निकल रहे हैं।
भारत और ईरान के विदेश मंत्रियों की उस वक्त बात हुई है जब अमेरिका ने श्रीलंका के पास IRIS डेना नाम के युद्धपोत पर हमला कर उसे डुबो दिया। ये जहाज भारतीय नौसेना के साथ एक युद्धाभ्यास के बाद लौट रहा था। इसे ईरान के समुद्र तट से करीब 2,000 मील दूर इंटरनेशनल पानी में बिना किसी पहले चेतावनी के निशाना बनाया गया था। इस हमले के बाद भारत ने हिंद महासाग में फंसे दूसरे जहाजों को शरण देना शुरू कर दिया है।
द हिंदू ने भारत सरकार के सरकारी सूत्रों के हवाले से शुक्रवार को दावा किया कि भारत ने एक ईरानी जहाज को कोच्चि में डॉक करने की इजाजत दी है। इस जहाज में दक्षिणी श्रीलंकाई तट के पास कुछ टेक्निकल दिक्कतें आ गई थीं। फिलहाल इस जहाज पर तैनात सभी नाविक भारतीय नौसेना के फैसिलिटी में हैं। IRIS डेना पर हमले के बाद भारत सरकार की आलोचना हो रही थी।
भारतीय नौसेना के सूत्रों ने बताया था कि 25 फरवरी को मिलन अभ्यास खत्म हो गया था और उसके बाद ये युद्धपोत निकल गया था। 28 फरवरी को इजरायल-अमेरिका ने ईरान पर हमला किया था और 4 मार्च को ईरानी युद्धपोत पर श्रीलंका के पास हमला किया गया था। नौसेना सूत्रों ने कहा कि ये हमला मिलन अभ्यास खत्म होने के बाद 8 दिनों के बाद किया गया था और वो हिंद महासागर के अंतर्राष्ट्रीय जल में था और बिना ईरान के अनुरोध के भारत उसे एस्कॉर्ट नहीं कर सकता था।

अरब देशों ने मुझसे शुक्रिया कहा है, डोनाल्ड ट्रंप ने 'लूटा' ईरान के सऊदी-UAE के खिलाफ हमले रोकने का श्रेय, बड़ा दावा

एजेंसी वॉशिंगटन

ईरानी राष्ट्रपति मसूद पेजेश्कियान के पड़ोसी अरब देशों पर हमलों के लिए खेद जताने और अटैक रोकने के ऐलान पर डोनाल्ड ट्रंप ने रिएक्शन दिया है। ट्रंप ने कहा है कि ईरान का अरब देशों पर हमले से पीछे हटना सिर्फ अमेरिका की वजह से मुमकिन हुआ है। ट्रंप ने अपनी और अमेरिकी सेना की पीठ ठोकते हुए कहा है कि पहले ईरान का रवैया अरब देशों को धमकाने का रहता था। ईरान अब इतना कमजोर हो गया है कि वह माफी मांग रहा है। डोनाल्ड ट्रंप ने शनिवार को सोशल मीडिया पोस्ट में लिखा, 'अमेरिका से युद्ध में पिट रहे ईरान ने अपने मिडिल ईस्ट पड़ोसियों से माफी मांगते हुए सरेंडर कर दिया है। साथ ही वादा किया है कि वह अब उन पर अटैक नहीं करेगा। यह सिर्फ अमरिका और इजरायल के तेहरान पर लगातार हमलों की वजह से संभव हुआ है।'
डोनाल्ड ट्रंप ने आगे कहा, 'ईरान हमेशा से मिडिल ईस्ट पर कब्जा करके राज करना चाहता था। हजारों वर्षों में यह पहली बार है, जब ईरान अपने आस-पास के मिडिल ईस्ट देशों से हारा है। इसके लिए अरब देशों ने मुझे शुक्रिया कहा है। ईरान अब 'मिडिल ईस्ट का बुली' नहीं है बल्कि 'मिडिल ईस्ट का लूजर' है।
ट्रंप ने कहा है कि ईरान के पास अब हमलों से बचने का एक ही तरीका है कि वह सरेंडर करे। उन्होंने ईरान पर बड़े हमले का इशारा करते हुए कहा कि ईरान के ईरान के बुरे बर्ताव की वजह से अब उन लोगों को भी निशाना बनाने पर गंभीरता से सोचा जा रहा है, जिन्हें अब तक निशाना बनाने पर विचार नहीं किया गया था।
ईरान के राष्ट्रपति मसूद पेजेश्कियान ने शनिवार को ईरान के सरकारी टेलीविजन पर अपने एक मैसेज में कहा, 'मुझे लगता है कि उन पड़ोसी देशों से माफी मांगना जरूरी है, जिन पर हमला हुआ है। पड़ोसी देशों पर हमला करने का हमारा कोई इरादा नहीं है। हम उन देशों पर हमले नहीं करेंगे, जब तक उस तरफ से अटैक नहीं होता है।
इजरायल और अमेरिका ने 28 फरवरी से ईरान पर हमले करना शुरू किया है। इसके बाद ईरान ने खाड़ी देशों में अमेरिकी सैन्य बेसों को निशाना बनाया। ईरान ने सऊदी अरब, कुवैत, कतर, यूएई, बहरीन में हमले किए। इससे पूरे क्षेत्र में हलचल फैल गई। शनिवार को ईरान ने ऐलान किया कि वह इन देशों पर हमले रोक रहा है।

ईरान युद्ध के बीच चीन और सऊदी अरब में 5 अरब डॉलर की ड्रोन डील, पलक झपकते ही करता है हमला

एजेंसी बीजिंग

चीन की एविएशन कंपनी AVIC ने सऊदी अरब के साथ ड्रोन निर्माण के लिए 5 अरब डॉलर की डील की है। इस डील के तहत चीनी कंपनी जेद्दा में विंग लूंग-3 UAV असेंबली लाइन लगाएगी, जिसमें हर साल 48 ड्रोन बनेंगे। चीन के विंग लूंग-3 अनमैन्ड एरियल व्हीकल (UAV) को सऊदी अरब ने ऑपरेशनल जांच के बाद चुना है। ये डील ऐसे समय हो रही है, जब ईरान युद्ध के चलते पश्चिम एशिया में उथल-पुथल मची है। सऊदी अरब भी इस लड़ाई से सीधेतौर पर प्रभावित दिखा है। क्लैशरिपोर्ट के मुताबिक, डील से पहले सऊदी अरब ने ऑपरेशनल जांच में इन ड्रोन की ताकत को परखा। लड़ाकू उड़ानों में इस्तेमाल होने वाले 200 से ज्यादा UAV ने तेजी से टारगेट पर निशाना साधा। इन ड्रोन ने 15 मिनट में 12 एयरक्राफ्ट ने तीन रडार स्टेशन और तीन आर्मर्ड गाड़ियों पर हमला किया। चीन के इस ड्रोन का इंटेलिजेंट रिकग्निशन सिस्टम 0.3 सेकंड में टारगेट को लॉक कर देता है यानी यह पलक झपकते ही हमला करता है। इसके पिछले मॉडल्स के मुकाबले एंटी-जैमिंग में 40 प्रतिशत सुधार हुआ है। इन ऑपरेशनल मेट्रिक्स ने सऊदी मिलिट्री के फैसले लेने वालों को डाटा पर भरोसा दिलाया, जो पश्चिमी सिस्टम पर पारंपरिक निर्भरता से ज्यादा था।
यह UAV पश्चिम एशिया के हालात के लिए बनाया गया है। इसके इंजन में मल्टी-स्टेज डस्ट प्रोटेक्शन और बेहतर कूलिंग सिस्टम हैं, जो 50C तापमान और बड़े पैमाने पर रेत के तूफानों को झेल सकते हैं। रियाद डिफेंस एक्सपो में L-15 ट्रेनर एयरक्राफ्ट का इस्तेमाल करके नकली पहाड़ी उड़ानों सहित डेमोंस्ट्रेशन ने सिस्टम की मजबूती को दिखाया। इससे उनका चीनी इक्विपमेंट में भरोसा बढ़ा।
सऊदी-चीन की 5 अरब की इस डील में जेद्दा में UAV असेंबली लाइन के अलावा एक मॉड्यूलर ट्रांसफर प्लान के तहत फ्लाइट कंट्रोल और एवियोनिक्स सिस्टम को इंटीग्रेट करना शामिल है। इससे सऊदी अरब को GAMI स्ट्रैटेजी के अनुसार, 2030 तक 50% मिलिट्री इंडस्ट्रियल लोकलाइजेशन का अपना लक्ष्य हासिल करने में मदद मिलेगी।
चीन इस डील में हार्डवेयर को लॉजिस्टिक्स, ट्रेनिंग और डिजिटल सिस्टम के साथ जोड़ती है। सऊदी अरब ने विंग लूंग-3 को अपनाकर यह संकेत दिया है कि चीनी UAV अब वेस्टर्न प्लेटफॉर्म के लिए हाई-एंड, लड़ाई में सक्षम विकल्प हैं। स्ट्रेटेजिक तौर पर ये ड्रोन 10,000 किमी रेंज, 40 घंटे तक चलने वाले और लाल सागर और फारस की खाड़ी पर लगातार निगरानी कवरेज देते हैं। यह सऊदी के लिए काफी कारगर हो सकता है।।

ईरान पर हमले और तेज करेगा अमेरिका, पश्चिम एशिया में तीसरा एयरक्राफ्ट कैरियर तैनात करने की तैयारी

एजेंसी वॉशिंगटन

ईरान के साथ तेज होते युद्ध के बीच अमेरिका अपना तीसरा एयरक्राफ्ट कैरियर पश्चिम एशिया में तैनात कर सकता है। अमेरिका के दो एयरक्राफ्ट कैरियर पहले से ही पश्चिम एशिया में हैं। ईरान पर हमले से काफी पहले इनको यहां तैनात किया गया था। अमेरिका और इजरायल के 28 फरवरी को ईरान पर हमले के बाद क्षेत्र का बड़ा हिस्सा युद्ध की चपेट में आ गया है। माना जा रहा है कि एक और एयरक्राफ्ट भेजकर अमेरिका अपने हमले तेज सकता है। फॉक्स न्यूज ने यूएस नेवी के हवाले से बताया है कि USS जॉर्ज एच. डब्ल्यू. बुश ने गुरुवार को अपनी प्री-डिप्लॉयमेंट ट्रेनिंग पूरी कर ली है। इसके बाद इसे मिडिल ईस्ट भेजा जा सकता है। कैरियर और उसके एस्कॉर्टिंग वॉरशिप और एयर विंग को कंपोजिट यूनिट ट्रेनिंग एक्सरसाइज पूरी की है। यह ट्रेनिंग सभी कैरियर स्ट्राइक ग्रुप्स को नेशनल टास्किंग के लिए सर्टिफाइड होने से पहले करनी होती है।
फॉक्स न्यूज का कहना है कि कैरियर स्ट्राइक ग्रुप के जल्द ही तैनात होने और पूर्वी मेडिटेरेनियन की ओर जाने की उम्मीद है। यहां अमेरिका ने दुनिया का सबसे बड़ा एयरक्राफ्ट कैरियर USS गेराल्ड आर. फोर्ड कुछ समय पहले तैनात किया था। USS गेराल्ड आर. फोर्ड स्वेज कैनाल से गुजरते हुए रेड सी में है। अमेरिका का एक और एयरक्राफ्ट कैरियर USS अब्राहम लिंकन ईरान के खिलाफ हमलों के लिए अरब सागर में तैनात है। अमेरिका अगर तीसरा युद्धपोत इस क्षेत्र में भेजता है तो यह उसकी हालिया वर्षों में इस इलाके में सबसे बड़ी सैन्य उपस्थिति होगी। अमेरिका ने ईरान में हमले करते हुए सत्ता बदलने की बात कही है।
ईरान के खिलाफ इजरायल और अमेरिका के हमलों के बाद क्षेत्र में संकट बढ़ गया है। ईरान ने खाड़ी देशों में अमेरिकी सैन्य बेसों को निशाना बनाया है। इससे समूचा पश्चिम एशिया अराजकता जैसी स्थिति में जाता दिख रहा है। अमेरिका की मांग है कि ईरान हथियार डाल दें। ईरान ने साफ किया है कि वह आखिरी दम तक मजबूती से लड़ाई लड़ेगा।
अमेरिका के हमलों में अब तक ईरान के सर्वोच्च नेता अयातुल्ला अली खामेनेई, दूसरे बड़े नेता और 165 स्कूली बच्चों समेत एक हजार से ज्यादा लोगों की मौत हो चुकी है। इजरायल ने लेबनान में भी हिजबुल्लाह के खिलाफ जंग छेड़ते हुए हमले किए हैं। लेबनान में भी जानमाल का भारी नुकसान इजरायली आर्मी के हमलों में हो रहा है।

यूक्रेन के दूसरे सबसे बड़े शहर खारकीव में रूस का मिसाइल हमला, पांच मंजिला इमारत बनी मलबे का ढेर, 7 की मौत

एजेंसी कीव

यूक्रेन के दूसरे सबसे बड़े शहर खारकीव में शनिवार को रूस के मिसाइल हमले में सात लोगों की मौत हो गई है। ये हमला एक पांच मंजिला आवासीय इमारत पर किया गया। इमारत पर अटैक में सात मौतों के अलावा तीन बच्चों समेत 10 अन्य लोग घायल हुए हैं। यूक्रेनी राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेंस्की ने हमले की निंदा करते हुए वैश्विक जगत से रूस पर दबाव डालने की मांग की है। जेलेंस्की ने शनिवार को अपने बयान में कहा कि रूस ने रातभर में यूक्रेन पर 29 मिसाइलों और 480 ड्रोन से हमला किया। इसमें कीव और अन्य मध्य क्षेत्रों में ऊर्जा सुविधाओं को निशाना बनाया गया। एयर डिफेंस ने 19 मिसाइल और 453 ड्रोन को मार गिराया, जबकि नौ मिसाइल और 26 हमलावर ड्रोन द्वारा 22 स्थानों पर हमले दर्ज किए गए। यूक्रेन के उत्तर-पूर्वी हिस्से में स्थित खारकीव में आपातकालीन कर्मी मलबे में जीवित बचे लोगों की तलाश कर रहे हैं। स्थानीय अधिकारियों के अनुसार, कीव क्षेत्र में तीन जिलों में मलबे से नुकसान की सूचना मिली है। दक्षिणी ओडेसा क्षेत्र में ड्रोन हमलों के बाद बुनियादी ढांचा सुविधाओं में लगी आग से निपटने में मदद के लिए 80 दमकलकर्मियों को बुलाया गया।
यूक्रेन की सरकारी रेल संचालक कंपनी, उक्रजालिज्नित्सिया ने कहा कि रेल बुनियादी ढांचे को हुए नुकसान के कारण देश के मध्य-पश्चिम में कई मार्गों में बदलाव करना पड़ा। जेलेंस्की ने एक्स पर अपने एक पोस्ट में कहा कि जीवन के खिलाफ इन बर्बर हमलों का साझेदारों की ओर से जवाब होना चाहिए।"
जेलेंस्की ने कहा कि रूस ने यूक्रेन के आवासीय और महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचे को नष्ट करने के अपने प्रयासों को नहीं छोड़ा है, इसलिए समर्थन जारी रखना आवश्यक है। हम अपने लोगों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए यूरोपीय संघ के साथ सक्रिय सहयोग पर भरोसा करते हैं। हमारी सुरक्षा को मजबूत करने में मदद करने वाले सभी लोगों के प्रति मैं आभारी हूं।

फ्रांस के बाहर भारत बनेगा राफेल का सबसे बड़ा मैन्युफैक्चरिंग हब, इस शहर में दूसरी प्रोडक्शन लाइन, डसॉल्ट ने बताया प्लान

एजेंसी पेरिस

राफेल फाइटर जेट बनाने वाली फ्रांसीसी कंपनी डसॉल्ट एविएशन ने पुष्टि कर दी है कि फ्रांस के बाहर प्रोडक्शन लाइन बनाने की तैयारी शुरू हो चुकी है। इसके अलावा डसॉल्ट ने कहा है कि राफेल फाइटर की प्रोडक्शन क्षमता को भी साल 2029 तक हर महीने बढाकर 4 करने का लक्ष्य रखा गया है। डसॉल्ट एविएशन के CEO एरिक ट्रैपियर ने 4 मार्च को कहा है कि वह धीरे-धीरे राफेल फाइटर का प्रोडक्शन रेट बढ़ा रहा है। उन्होंने कहा कि 2029 तक हर महीने चार राफेल बनाने का लक्ष्य है लेकिन उसे बढ़ाकर पांच करने पर भी विचार चल रहा है पिछले कुछ सालों में यह बढ़ोतरी एक्सपोर्ट सेल्स को सपोर्ट कर रही है, और कंपनी को और ऑर्डर पूरे करने के लिए तैयार कर रही है। इस बीच, डसॉल्ट देश की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए भारत में फाइटर की बड़ी सब-असेंबली बनाने के लिए तैयार हो रहा है। चूंकि एयरफ्रेमर दक्षिण एशियाई देश के साथ एक और बड़े कॉन्ट्रैक्ट की प्लानिंग कर रहा है, इसलिए वह और भी ज़्यादा लोकल प्रोडक्शन के लिए तैयारी कर रहा है। डसॉल्ट ने 2025 में 26 राफेल फाइटर जेट डिलीवर किए थे और 2026 में 28 विमानों को डिलीवर करने का लक्ष्य रखा गया है। ट्रैपियर ने अपनी कंपनी की सालाना प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान कहा कि लॉन्ग-लीड आइटम की सप्लाई 2029 में हर महीने चार एयरक्राफ्ट फाइनल असेंबली लाइन से निकलने के हिसाब से सही है। डसॉल्ट के लिए के लिए राफेल प्रोडक्शन रेट बढ़ाने और नया टारगेट हासिल करने के लिए अब करीब 3 सालों का वक्त है। ट्रैपियर ने कहा कि अगर हमें और ऑर्डर मिलते हैं और हम प्रोडक्शन क्षमता बढ़ाने का फैसला करेंगे लेकिन अभी ये मिलने वाले ऑर्डर पर निर्भर करता है। राफेल के प्रोडक्शन रफ्तार को रेट 5 पर ले जाने में भारत में प्रोडक्शन को ध्यान में रखा जा सकता है। डसॉल्ट ने पिछले साल टाटा एडवांस्ड सिस्टम्स के साथ पार्टनरशिप की थी ताकि हर महीने दो राफेल फ्यूजलेज सेक्शन का लोकल प्रोडक्शन शुरू किया जा सके, जिसकी पहली डिलीवरी 2028 में होनी है। अगर भारत सरकार 114 और राफेल के लिए कॉन्ट्रैक्ट साइन करती है तो हैदराबाद में फाइटर के लिए दूसरी फाइनल असेंबली लाइन बनाई जा सकती है। डिफेंस एक्विजिशन काउंसिल ने 114 राफेल खरीदने के लिए मंजूरी दे दी है। ट्रैपियर ने कहा कि टारगेट प्रोडक्शन रेट अभी तय नहीं किया गया है। लेकिन उन्होंने जोर देकर कहा कि उनका मकसद ज्यादा से ज्यादा लोकल लेवल पर बनने वाले राफेल बनाना है। भारत के रक्षा सचिव राजेश कुमार सिंह ने 13 फरवरी को कहा था कि भारत भविष्य में देश में बनने वाले राफेल के लिए कंपोनेंट्स के 50% से ज्यादा स्थानीयकरण के लक्ष्य के साथ आगे बढ़ रहा है। वहीं जब डसॉल्ट के CEO ट्रैपियर से पूछा गया कि क्या कंपनी भारत के इस शर्त के साथ सहमत है तो उन्होंने 'हां' में जवाब दिया। उन्होंने कहा कि "50 प्रतिशत स्थानीयकरण एक कैलकुलेशन सा नतीजा है और ये कई पैरामीटर्स पर निर्भर करता है और हम जानते हैं कि 50 प्रतिशत का क्या मतलब है और इसको लेकर भारतीय अधिकारियों के साथ हमारी बातचीच चल रही है।" राफेल के साथ एक बड़ी दिक्कत प्रोडक्शन रेट है। कंपनी के पास इस जनवरी की एक तारीख तक राफेल के लिए बैकलॉग 220 था। कंपनी को कुल 533 एयरक्राफ्ट के ऑर्डर मिले हैं जिनमें विदेशी कस्टमर्स के लिए 323 शामिल हैं। वहीं प्रोडक्शन बढ़ाने के लिए बड़े पैमाने पर हायरिंग की कोशिश भी चल रही है। ट्रैपियर ने कहा कि "हमने पिछले कुछ सालों में अपने 40% वर्कफोर्स को रिन्यू किया है और ट्रेनिंग एक बड़ा टॉपिक है।"

फाइनल की पिच से उठ गया पर्दा, भारत या न्यूजीलैंड में से किसे होगा फायदा कहीं हो ना जाए 2023 जैसा खेल

एजेंसी अहमदाबाद

अहमदाबाद के नरेंद्र मोदी स्टेडियम में भारत और न्यूजीलैंड के बीच होने वाले टी20 वर्ल्ड कप फाइनल का रोमांच चरम पर है। इस महामुकाबले में दोनों टीमों की रणनीतियों के साथ-साथ पिच की भूमिका सबसे अहम मानी जा रही है। मोदी स्टेडियम का यह मैदान अपनी विविध पिचों के लिए जाना जाता है, जहां लाल मिट्टी, काली मिट्टी और हाइब्रिड वाली सतहें उपलब्ध हैं। काली मिट्टी जहां धीमी होती है, वहीं लाल मिट्टी वाली पिचों पर उछाल और गति बल्लेबाजों को बड़े स्कोर बनाने में मदद करती है। सूत्रों के अनुसार, खिताबी भिड़ंत के लिए इस्तेमाल होने वाली पिच लाल और काली मिट्टी का मिश्रण हो सकती है। ऐसी हाइब्रिड पिचें आमतौर पर संतुलित होती हैं, जो शॉट खेलने के लिए अच्छी गति प्रदान करती हैं और मैच आगे बढ़ने पर गेंदबाजों को ग्रिप भी देती हैं। दिलचस्प बात यह है कि शुक्रवार देर रात तक आधिकारिक तौर पर पिच फाइनल नहीं हुई थी। हालांकि, एक खास स्ट्रिप पर बीसीसीआई के सीईओ हेमांग अमीन और स्थानीय क्यूरेटरों की पैनी नजर देखी गई जिसे बाद में ढक दिया गया। जिस पिच पर फाइनल होने की संभावना है वह इस टूर्नामेंट में लगभग अछूती रही है। इस पर केवल एक मैच (कनाडा बनाम दक्षिण अफ्रीका) खेला गया था, जिसमें प्रोटियाज ने 213 रनों का विशाल स्कोर खड़ा किया था। चूंकि यह पिच काफी ताजी है इसलिए उम्मीद जताई जा रही है कि फाइनल एक हाई-स्कोरिंग और तेज रफ्तार मुकाबला हो सकता है जहां गेंद और बल्ले के बीच कड़ी टक्कर देखने को मिलेगी। पिच के मिजाज को देखते हुए भारत के तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह और अर्शदीप सिंह नई गेंद के साथ काफी खतरनाक साबित हो सकते हैं। बुमराह की सटीक लाइन-लेंथ और उछाल भरी पिचों पर उनकी मारक क्षमता भारत के लिए ट्रंप कार्ड होगी। वहीं, स्पिन विभाग में वरुण चक्रवर्ती और अक्षर पटेल बीच के ओवरों में अंकुश लगाने की जिम्मेदारी संभालेंगे। दूसरी तरफ न्यूजीलैंड के पास भी मैट हेनरी और लॉकी फर्ग्यूसन जैसे गेंदबाज हैं जो इस उछाल का फायदा उठाना जानते हैं।

भारत में फंसी साउथ अफ्रीका, इंग्लैंड और वेस्टइंडीज की टीम के लिए खुशखबरी, घर जाने का सॉलिड प्लान आया सामने

एजेंसी नई दिल्ली

अमेरिका और इजराइल के ईरान पर किए गए हमलों के बाद अंतरराष्ट्रीय हवाई क्षेत्र में हुए व्यवधान के बाद इंग्लैंड , दक्षिण अफ्रीका और वेस्टइंडीज की टीम इस सप्ताहांत अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) द्वारा मुहैया कराई गई चार्टर उड़ानों से भारत से रवाना होंगी। एक सूत्र ने पीटीआई को बताया कि गुरुवार को दूसरे सेमीफाइनल में भारत से हारने वाली इंग्लैंड टीम के शनिवार शाम को मुंबई से लंदन के लिए सीधी उड़ान से रवाना होने की उम्मीद है। वेस्टइंडीज और दक्षिण अफ्रीका अन्य दो टीमें हैं जो अपना अभियान समाप्त होने के बावजूद अब भी भारत में हैं। वेस्टइंडीज की टीम भारत से पांच विकेट से हारने के बाद टी20 विश्व कप से बाहर हो गई थी। दक्षिण अफ्रीका का अभियान भी बुधवार को पहले सेमीफाइनल में न्यूजीलैंड से हार के साथ समाप्त हो गया। दक्षिण अफ्रीका और वेस्टइंडीज दोनों कोलकाता से एक अन्य चार्टर उड़ान से यात्रा करेंगे। दोनों टीमें पहले जोहानिसबर्ग जाएंगी जिसके बाद वेस्टइंडीज का दल एंटीगा के लिए आगे जाएगा। उड़ान का सटीक समय अभी तय नहीं हुआ है लेकिन इसके रविवार को रवाना होने की उम्मीद है। दक्षिण अफ्रीका के दल का एक हिस्सा 15 मार्च से शुरू होने वाले सीमित ओवरों के दौरे के लिए रविवार को न्यूजीलैंड रवाना होगा जिसमें टीम प्रबंधन के सदस्य और खिलाड़ी केशव महाराज, जेसन स्मिथ और जॉर्ज लिंडे शामिल हैं। क्रिकेट वेस्टइंडीज ने बृहस्पतिवार को पुष्टि की थी कि टीम को घर वापस भेजने के लिए विशेष विमान की व्यवस्था की जा रही है क्योंकि खाड़ी क्षेत्र में अंतरराष्ट्रीय हवाई क्षेत्र पर लगे प्रतिबंधों के कारण टीम चार दिन से ज्यादा समय से शहर में फंसी हुई है। उसने अपने बयान में कहा, 'उच्च स्तरीय बैठक में यह पुष्टि हुई कि टीम को भारत से रवाना करने के लिए विशेष विमान की व्यवस्था की जा रही है और अगले 24 घंटों के भीतर उड़ान भरने की उम्मीद है। इस बैठक में क्रिकेट वेस्टइंडीज, आईसीसी के अधिकारी, टीम प्रबंधन और खिलाड़ियों के प्रतिनिधि शामिल थे' उन्होंने यह भी कहा कि उड़ान का समय एयर ट्रैफिक की मंजूरी पर निर्भर करेगा। इसमें कहा गया, 'टीम सुरक्षित है और सभी व्यवस्थाएं पूरी की जा रही हैं।' इस घटनाक्रम से कुछ घंटे पहले वेस्टइंडीज के मुख्य कोच डैरेन सैमी ने सोशल मीडिया पर देरी को लेकर नाराजगी जताते हुए लिखा था कि वह बस घर जाना चाहते हैं। बाद में उन्होंने अपडेट मिलने पर लिखा, 'अपडेट मिल गया। वेस्टइंडीज को बस यही चाहिए था।'

'सब सेम ही लाइन चिपका रहे हैं', अहमदाबाद में लाखों लोगों को चुप कराना चाहते हैं सैंटनर, सूर्या ने कर दी बोलती बंद

एजेंसी अहमदाबाद

भारतीय क्रिकेट टीम न्यूजीलैंड के खिलाफ टी20 वर्ल्ड कप 2026 के फाइनल मुकाबले में खेलने के लिए तैयार है। भारतीय टीम की नजरें इस टूर्नामेंट को रिकॉर्ड तीसरी बार जीतने पर हैं। वहीं न्यूजीलैंड की टीम अपने पहले खिताब के लिए जोर लगा रही है। इस हाईवोल्टेज मुकाबले से पहले न्यूजीलैंड के कप्तान मिचेल स्टार्क ने टीम इंडिया पर एक बड़ा बयान दिया था। जिसके बाद अब भारतीय कप्तान सूर्यकुमार यादव ने उनकी बोलती बंद कर दी है।

मैच से पहले प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान कीवी कप्तान मिचेल सेंटनर ने पैट कमिंस के 2023 वाले मशहूर बयान की याद दिलाते हुए कहा कि उनका लक्ष्य अहमदाबाद के 1 लाख से ज्यादा दर्शकों को खामोश करना होगा। जब सूर्यकुमार से सेंटनर के इस साइलेंस वाले कमेंट पर सवाल पूछा गया तो उन्होंने बड़े ही मजाकिया अंदाज में जवाब दिया, 'सब ही सेम लाइन चिपका रहे हैं। कुछ तो नया बोलो।'

सूर्या ने आगे कहा कि टीम का माहौल बहुत रिलैक्स्ड है और घरेलू सरजमीं पर इतनी शानदार टीम का नेतृत्व करना उनके लिए एक विशेष एहसास है। वर्ल्ड कप 2026 में भारत के लिए दूसरे सबसे ज्यादा रन बनाने वाले सूर्या ने स्वीकार किया कि फाइनल का दबाव तो होगा लेकिन वह इस बड़े मंच का आनंद लेना चाहते हैं। उन्होंने कहा, 'एक लीडर के तौर पर दबाव होगा, मैं इससे इनकार नहीं कर सकता। निश्चित रूप से अतिरिक्त दबाव और उत्साह दोनों हैं क्योंकि हम भारत में वर्ल्ड कप फाइनल खेल रहे हैं।'

भारत ने इस वर्ल्ड कप से ठीक पहले न्यूजीलैंड को द्विपक्षीय सीरीज में 4-1 से हराया था। हालांकि सूर्या ने यह स्वीकार किया कि उन्होंने टीवी पर न्यूजीलैंड के वर्ल्ड कप मैच नहीं देखे हैं लेकिन वे विपक्षी टीम की ताकत से अच्छी तरह वाकिफ हैं। उन्होंने कहा, 'मैंने टीवी पर उनके टी20 वर्ल्ड कप मैच नहीं देखे हैं। हमने हाल ही में उनके खिलाफ खेला है और यह लगभग वही टीम है जिसका हमने सामना किया था। वे अच्छा क्रिकेट खेल रहे हैं और हम भी इसलिए यह एक बेहतरीन मुकाबला होगा।'

यह लगातार दूसरा साल है जब भारत और न्यूजीलैंड किसी आईसीसी व्हाइट-बॉल टूर्नामेंट के फाइनल में आमने-सामने हैं। इससे पहले 2025 की चैंपियंस ट्रॉफी के फाइनल में भी इन दोनों टीमों की भिड़ंत हुई थी।

अहमदाबाद को खामोश करना ही हमारा लक्ष्य! सैंटनर ने पैट कमिंस की तरह टीम इंडिया को दी चेतावनी, फाइनल से पहले शुरू हुआ माइंड गेम

एजेंसी अहमदाबाद

टी20 वर्ल्ड कप 2026 के खिताबी मुकाबले से ठीक पहले मनोवैज्ञानिक युद्ध अपने चरम पर पहुंच गया है। न्यूजीलैंड के कप्तान मिचेल सैंटनर ने फाइनल की पूर्व संध्या पर एक ऐसा बयान दिया है, जिसने 2023 के वनडे वर्ल्ड कप फाइनल में पैट कमिंस के खामोशी वाले बयान की याद दिला दी है। सैंटनर का सीधा लक्ष्य अहमदाबाद के नरेंद्र मोदी स्टेडियम में मौजूद सवा लाख से अधिक भारतीय फैंस को शांत करना है। कीवी कप्तान मिचेल सैंटनर ने प्रेस कॉन्फ्रेंस में स्पष्ट कर दिया है कि उनकी टीम की मुख्य रणनीति भारत पर घरेलू दबाव का फायदा उठाने की है। सैंटनर ने कहा कि भीड़ को खामोश करना ही उनका सबसे बड़ा लक्ष्य है। उन्होंने जोर देकर कहा कि टी20 एक अनिश्चित फॉर्मेट है जहां खेल का रुख छोटे-छोटे पलों से तय होता है। सैंटनर के अनुसार, भारत पर अपने घर में वर्ल्ड कप जीतने का जो भारी बोझ है, कीवी टीम उसी अतिरिक्त दबाव का इस्तेमाल उनके खिलाफ करने की योजना बना रही है। सैंटनर का मानना है कि घर में खेलने के अपने फायदे और नुकसान दोनों होते हैं और इस समय वह बर्डन भारत के कंधों पर ज्यादा है। उन्होंने बताया कि इस टूर्नामेंट में टीमों के बीच का अंतर काफी कम हुआ है, जिसे हमने इंग्लैंड और दक्षिण अफ्रीका के मैचों में भी देखा है। सैंटनर ने विश्वास जताया कि उनकी टीम एक और बड़े उलटफेर के लिए तैयार है। 2023 की हार की यादें अभी भी भारतीय फैंस के मन में ताजा हैं, और अब सैंटनर का यह साइकोलॉजिकल मूव इस फाइनल मुकाबले को और भी रोमांचक बना रहा है। अगर टी20 अंतरराष्ट्रीय मैचों के इतिहास पर नजर डालें, तो भारत और न्यूजीलैंड के बीच अब तक कुल 30 मुकाबले हुए हैं। इनमें भारत ने 18 मैचों में जीत दर्ज की है, जबकि न्यूजीलैंड के हाथ 11 जीत लगी है और एक मैच टाई रहा है। हालांकि, हालिया फॉर्म के मामले में भारत काफी मजबूत नजर आ रहा है, लेकिन कीवी टीम के जुझारू तेवर हमेशा भारत के लिए चिंता का विषय रहे हैं। इस महामुकाबले में सूर्यकुमार यादव की कप्तानी वाली भारतीय युवा ब्रिगेड के सामने सैंटनर की चतुर रणनीतियों से पार पाने की बड़ी चुनौती होगी।

व्यापार

पेट्रोल-डीजल के नहीं बढ़ेंगे दाम, ईरान युद्ध के बीच आई खुशखबरी, कुकिंग गैस पर सस्पेंस

एजेंसी नई दिल्ली

पेट्रोल और डीजल की कीमतें अभी नहीं बढ़ेंगी। फिर भले ही वेस्ट एशिया में तनाव का असर ग्लोबल एनर्जी मार्केट पर पड़ रहा है। सरकार ने दोबारा यह बात साफ कर दी है। एशियन न्यूज इंटरनेशनल (ANI) ने सरकारी सूत्रों के हवाले से एक रिपोर्ट में यह जानकारी दी। इसके मुताबिक, भारत की एनर्जी सप्लाई की स्थिति सुधर रही है। होर्मुज स्ट्रेट से कार्गो मूवमेंट फिर से शुरू हो गया है। सरकारी सूत्रों ने एएनआई को बताया कि जैसे-जैसे हालात स्थिर हो रहे हैं, भारत के एनर्जी स्टॉक की स्थिति मजबूत हो रही है। इससे भरोसा बढ़ा है। सरकारी सूत्रों ने फिर से पुष्टि की कि पेट्रोल और डीजल की कीमतें नहीं बढ़ाई जाएंगी। उन्होंने बताया कि कीमतों में स्थिरता पर पहले दिया गया आश्वासन सिर्फ ट्रांसपोर्ट फ्यूल के बारे में था। कुकिंग गैस को लेकर नहीं। हाल ही में LPG कीमतों में बढ़ोतरी पर कांग्रेस की आलोचना का जवाब देते हुए सरकारी सूत्रों ने कहा कि आरोप गलत हैं। सूत्रों ने एएनआई को बताया, 'उनका आरोप पूरी तरह से बेबुनियाद है। पिछला बयान सिर्फ पेट्रोल और डीजल के बारे में था। यह LPG के बारे में नहीं था। आज हम फिर से भरोसा दिलाते हैं कि पेट्रोल और डीजल की कीमतें नहीं बढ़ेंगी।' अधिकारियों ने यह भी बताया कि भारत होर्मुज स्ट्रेट के रास्ते पर निर्भरता कम करने के लिए अपने क्रूड ऑयल सोर्सिंग को डायवर्सिफाई कर रहा है। सरकारी सूत्रों के अनुसार, भारत ने होर्मुज स्ट्रेट के बाहर के सोर्स से क्रूड इंपोर्ट लगभग 10% बढ़ा दिया है। पहले, भारत का लगभग 60% क्रूड इंपोर्ट होर्मुज स्ट्रेट के अलावा दूसरे रास्तों से आता था। लेकिन, अब यह आंकड़ा बढ़कर लगभग 70% हो गया है। इस बदलाव का मकसद स्ट्रेटेजिक रूप से सेंसिटिव वॉटरवे में रुकावट आने की स्थिति में सप्लाई सिक्योरिटी को मजबूत करना है। एक्सपर्ट्स ने बताया है कि कुकिंग गैस की स्थिति क्रूड ऑयल की तुलना में ज्यादा कमजोर हो सकती है। भारत एलपीजी इंपोर्ट पर बहुत ज्यादा निर्भर है। वह इसका लिमिटेड रिजर्व रखता है। एलपीजी को लेकर भारत की टेंशन क्या है? चीन के बाद भारत दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा एलपीजी इंपोर्टर है। इन शिपमेंट का एक बड़ा हिस्सा होर्मुज स्ट्रेट से होकर गुजरता है। कच्चे तेल के रिजर्व के उलट एलपीजी स्टॉक आमतौर पर सिर्फ दो से तीन हफ्ते की डिमांड को ही कवर कर पाते हैं। ये लगभग 30-35 दिनों की खपत को कवर कर सकते हैं। हालांकि, सरकारी सूत्रों ने एएनआई को बताया कि LPG स्टॉक को लेकर स्थिति में सुधार हुआ है। सूत्रों ने कहा, 'हमारी रिव्यू मीटिंग में हमें लग रहा है कि हमारे एनर्जी स्टॉक बेहतर हो रहे हैं। एक समय पर हम अपने एलपीजी स्टॉक को लेकर चिंतित थे। लेकिन, अब हम बेहतर स्थिति में हैं।' कतर से एलपीजी पर क्या आश्वासन मिला है? सरकारी सूत्रों ने यह भी कहा कि कतर ने भारत को भरोसा दिलाया है कि शिपिंग रूट पूरी तरह से खुलने के बाद एलपीजी और एलएनजी सप्लाई फिर से शुरू हो जाएगी। अधिकारियों के अनुसार, भारत के पास अभी LNG का सरप्लस स्टॉक है। कई देशों ने भी अतिरिक्त LNG सप्लाई की पेशकश की है। सरकारी सूत्रों ने बताया है कि होर्मुज स्ट्रेट के पास कार्गो मूवमेंट फिर से शुरू हो गया है। ईरान के पड़ोसी देशों को तब तक टारगेट नहीं करने का वादा किया है जब तक उनके इलाके से हमला न हो। इस डेवलपमेंट से जरूरी समुद्री रास्ते से गुजरने वाले ग्लोबल एनर्जी शिपमेंट में बड़े पैमाने पर रुकावट की तुरंत चिंता कम हो गई है। एलपीजी कीमतों में कितनी हुई है बढ़ोतरी? इस बीच घरेलू कुकिंग गैस सिलेंडर की कीमतों में पहले ही बढ़ोतरी की जा चुकी है। 7 मार्च से पूरे देश में 14.2 किलो के कुकिंग गैस सिलेंडर की कीमत 60 रुपये बढ़ा दी गई है। बदलाव के बाद बड़े शहरों में कीमतें इस तरह हैं:

दिल्ली: 853 रुपये 913 रुपये
मुंबई: 852.5 रुपये 912.5 रुपये
कोलकाता: 879 रुपये Rs 930 रुपये
चेन्नई: 868.5 रुपये Rs 928.5 रुपये

सरकारी सूत्रों का कहना है कि पिछले दो सालों में LPG की कीमतों में लगभग 110 रुपये प्रति सिलेंडर की बढ़ोतरी हुई है। वैसे तो पेट्रोल और डीजल की कीमतें अभी स्थिर रहने की उम्मीद है। लेकिन, एक्सपर्ट्स का कहना है कि होर्मुज स्ट्रेट से गुजरने वाले इंपोर्ट पर भारत की भारी निर्भरता के कारण कुकिंग गैस पर कड़ी नजर रखी जाएगी। भारत अपनी एलपीजी खपत का एक बड़ा हिस्सा आयात करता है। उसका 85-90 फीसदी हिस्सा सऊदी अरब जैसे देशों से आता है। यह ट्रांसपोर्टेशन के लिए होर्मुज स्ट्रेट पर निर्भर हैं। घरेलू सप्लाई मजबूत करने के लिए सरकार ने शुक्रवार को अपनी आपातकालीन शक्तियों का इस्तेमाल करके तेल रिफाइनरियों को एलपीजी उत्पादन बढ़ाने का निर्देश दिया था। टॉप सरकारी सूत्रों ने बताया कि वैश्विक ऊर्जा कीमतों में उछाल के कारण यह बढ़ोतरी जरूरी थी। इस बढ़ोतरी के बावजूद वर्तमान दर लागत के बराबर होने के लिए आवश्यक 1,050 रुपये प्रति सिलेंडर की दर से काफी कम है। सूत्रों ने तर्क दिया कि एक परिवार में सालाना 4-5 सिलेंडर की औसत खपत को देखते हुए यह बढ़ोतरी एक परिवार के लिए 80 पैसे प्रतिदिन या प्रति व्यक्ति केवल 20 पैसे प्रतिदिन के बराबर है। बढ़ी हुई कीमतों के बावजूद भारत में एलपीजी काठमांडू (1,207 रुपये), श्रीलंका (1,241 रुपये) और पाकिस्तान (1,046 रुपये) जैसे पड़ोसी देशों से सस्ती है।

दब गई है दुनिया के गले की नस, कागज की पर्ची जो देती है जिंदा रहने की गारंटी, होर्मुज का हक

एजेंसी नई दिल्ली

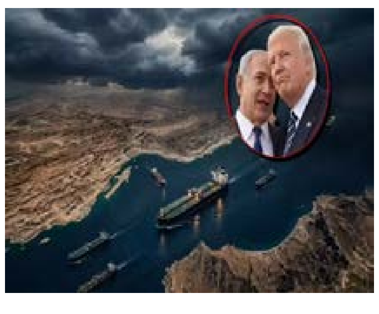

होर्मुज स्ट्रेट। ईरान के दक्षिण और ओमान-यूएई के बीच एक पतला रास्ता। मिडिल ईस्ट टेंशन के बीच यह केंद्र में है। इसे अमूमन 'दुनिया की गले की नस' कहा जाता है। अभी वह नस बहुत ज्यादा दबी हुई है। ईरान पर इजरायल और अमेरिका के हमलों के बाद इस रास्ते को लेकर तेहरान की धमकियों ने ग्लोबल एनर्जी मार्केट को खतरे में डाल दिया है। लेकिन, जब दुनिया ब्रेंट क्रूड की कीमत देख रही है तो पर्दे के पीछे एक शांत, ज्यादा टेक्निकल संकट सामने दिख रहा है। वह संकट है - मरीन इंश्योरेंस के खत्म होने का। यह वो कागज की पर्ची है जो समंदर में घूमते जहाजों को 'जिंदा' रहने की गारंटी देती है। यही होर्मुज का हक है। आइए, यहां इसे परत-दर-परत समझते हैं। मार्च 2026 तक कई बड़ी इंश्योरेंस कंपनियों ने फारस की खाड़ी (पर्शियन गल्फ) के लिए 'वॉर रिस्क' यानी युद्ध के जोखिम का कवरेज रोक दिया है। इससे 150 से ज्यादा टैंकर फंसे हुए हैं। असल में दुनिया की 20% तेल सप्लाई थम गई है। इस जरूरी 'कागज के टुकड़े' के बिना कोई भी जहाज यहां से गुजर नहीं सकता। दूसरे शब्दों में जहाज कानूनी और फाइनेंशियली दोनों तौर से चलने में असमर्थ है। इससे जियोपॉलिटिकल टकराव एक ग्लोबल लॉजिस्टिक्स के बुरे सपने में तब्दील हो चुका है। मरीन इंश्योरेंस शिपिंग के लिए एक जरूरी 'परमिशन स्लिप' है। जहाज मालिकों, चार्टर करने वालों, कार्गो मालिकों, बैंकों और बंदरगाहों के बीच यह वादे पूरे करने में मदद करता है। इसके बिना बैंक लेटर ऑफ क्रेडिट रोक लेते हैं, पोर्ट डॉकिंग से मना कर देते हैं और क्रू सफर करने से मना कर देते हैं इस तरह यह कार इंश्योरेंस के बिना सफर करने जैसा है, लेकिन इसके इंटरनेशनल असर होते हैं। ज्यादातर मरीन इंश्योरेंस लंदन मार्केट में होता है। वहां जॉइंट वॉर कमेटी हाई-रिस्क एरिया की एक लिस्ट रखती है। जब मिसाइलें मिडिल ईस्ट में उड़ने लगीं तो लिस्ट बढ़ गई। इसमें बहरीन, कुवैत, कतर और ओमान के आसपास के पानी के हिस्से शामिल हैं। कैसे बढ़ जाता है रिस्क प्रीमियम? यह डेजिग्नेशन एक अलग प्राइसिंग सिस्टम शुरू करता है। लिस्टेड एरिया में आने वाले जहाजों को एक एक्स्ट्रा वॉर रिस्क प्रीमियम देना पड़ता है। उदाहरण के लिए गल्फ ट्रांजिट के लिए 10 करोड़ डॉलर के जहाज का इंश्योरेंस 2,50,000 डॉलर से बढ़कर 3,75,000 डॉलर प्रति सफर हो गया। गार्ड और स्कुल्ड जैसी इंश्योरेंस कंपनियों ने 5 मार्च से कवर कैंसल कर दिया क्योंकि इंडिया के GIC Re जैसे रीइंश्योरर ने कैपेसिटी वापस ले ली। मरीन इंश्योरेंस प्याज की तरह कई लेयर वाला होता है। इसमें मशीनरी (जहाज), कार्गो (माल), प्रोटेक्शन और इंडेम्निटी/P&I (पॉल्यूशन, क्रू की चोटें या थर्ड-पार्टी डैमेज; 90 फीसदी म्यूचुअल इंटरनेशनल ग्रुप क्लब के जरिए कवर किया जाता है) और वॉर रिस्क (मिसाइल/माइन के लिए क्विक कैंसलेशन क्लॉज के साथ सबसे ऊपर (आमतौर पर 7 दिन लेकिन बड़े देशों के लिए 72 घंटे)) शामिल हैं। होर्मुज स्ट्रेट से तेल के शिपमेंट पर असर होर्मुज स्ट्रेट में तनाव के कारण मरीन इंश्योरेंस संकट पैदा हो गया। इससे 200 से ज्यादा जहाज हाई-रिस्क गल्फ जोन में फंस गए। कैंसल किए गए वॉर रिस्क कवरेज ने हल, कार्गो और P&I जैसी दूसरी पॉलिसी को रद्द कर दिया। इससे रोजाना का ट्रैफिक 80 फीसदी से ज्यादा गिरकर लगभग 138 से 30 से कम हो गया। मिडिल ईस्ट गल्फ-टू-चाइना यात्राओं के लिए रिकॉर्ड VLCC स्पॉट रेट बढ़ गए। ये बढ़कर 424k/दिन डॉलर (आमतौर पर ₹$100k से) या तेल के FOB का 20% से ज्यादा हो गया। जहाजों की कमी और रिस्क से बचने की वजह से वैल्यू कम हो गई। इसके नतीजों में रास लफ्फान और बसरा जैसी जगहों पर पोर्ट पर भारी भीड़, दुनिया भर में माल ढुलाई में बढ़ोतरी का रिफाइनर को दिया जाना और कमोडिटी में महंगाई शामिल है। इससे एशिया में तेल, LNG और फर्टिलाइजर की कमी के बीच ब्रेंट क्रूड 82 डॉलर/bbl से ऊपर चला गया। पिछली घटनाओं में 1980 का ईरान-इराक टैंकर युद्ध शामिल है। इसमें एस्कॉर्ट्स के जरिए 500 से ज्यादा हमले किए गए थे। 2023 में रेड सी हूथी हमले हुए थे। इससे प्रीमियम जहाज की वैल्यू का 1% तक बढ़ गया था। स्वेज की तरफ अपना रास्ता बदलना पड़ा और रेट में 10 गुना बढ़ोतरी हुई। लेकिन, कोई रोक नहीं लगी। होर्मुज स्ट्रेट टेंशन का ऑयल फ्लो पर असर यह स्ट्रेट हर दिन 20-21 मिलियन बैरल तेल हैंडल करता है। सऊदी अरब, ईरान, इराक, यूएई, कुवैत और कतर से होने वाले समुद्री व्यापार का लगभग यह 20-31 फीसदी है।

आर्थिक सुख-समृद्धि के लिए कनकधारा स्तोत्र का पाठ माना जाता है बेहद शुभ, मां लक्ष्मी भी होती हैं प्रसन्न

हिंदू धर्म में मां लक्ष्मी को धन, वैभव और समृद्धि की देवी माना जाता है। यही कारण है कि भक्त अलग-अलग तरीकों से उनकी पूजा-अर्चना करके उनका आशीर्वाद पाने की कामना करते हैं। धार्मिक मान्यता है कि जिस व्यक्ति पर मां लक्ष्मी की कृपा बनी रहती है, उसके जीवन में सुख-समृद्धि का वास होता है और आर्थिक परेशानियां धीरे-धीरे दूर होने लगती हैं। ऐसे में शास्त्रों में कई स्तोत्र और मंत्र बताए गए हैं, जिनका नियमित पाठ करने से मां लक्ष्मी प्रसन्न होती हैं। उन्हीं में से एक अत्यंत प्रभावशाली स्तोत्र कनकधारा स्तोत्र माना जाता है। कहा जाता है कि श्रद्धा और विश्वास के साथ इसका पाठ करने से घर में धन-धान्य की वृद्धि होती है और सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है। इस स्तोत्र की रचना महान दार्शनिक और संत आदि शंकराचार्य ने की थी। आइए जानते हैं कनकधारा स्तोत्र के पाठ की विधि के बारे में।

कनकधारा स्तोत्र का पाठ प्रतिदिन किया जा सकता है, लेकिन इसकी शुरुआत शुक्रवार के दिन से करना विशेष शुभ माना जाता है, क्योंकि यह दिन मां लक्ष्मी को समर्पित होता है। इसके लिए सबसे पहले एक कनकधारा यंत्र और कनकधारा स्तोत्र की पुस्तक या पाठ सामग्री अपने पास रखें। फिर पूजा स्थान को साफ करके वहां यंत्र स्थापित करें और मां लक्ष्मी का ध्यान करें। इसके बाद कनकधारा यंत्र के सामने धूप-दीप जलाकर श्रद्धा के साथ कनकधारा स्तोत्र का पाठ करें। यह पाठ आप अपनी सुविधा के अनुसार सुबह या शाम किसी भी समय कर सकते हैं, लेकिन कोशिश करें कि इसे नियमित रूप से औ

॥ श्री कनकधारा स्तोत्र ॥

अङ्ग हरेः पुलकभूषणमाश्रयन्ती
भृङ्गाङ्गनेव मुकुलाभरणं तमालम् ।
अङ्गीकृताखिलविभूतिरपाङ्गलीला
माङ्गल्यदास्तु मम मङ्गलदेवतायाः ॥1॥
मुग्धा मुहुर्विदधती वदने मुरारेः
प्रेमत्रपाप्रणिहितानि गतागतानि ।
माला दृशोर्मधुकरीव महोत्पले या
सा मे श्रियं दिशतु सागरसम्भवायाः ॥2॥
विश्वामरेन्द्रपदविभ्रमदानदक्ष –
मानन्दहेतुरधिकं मुरविद्विषोऽपि ।
ईषन्निषीदतु मयि क्षणमीक्षणार्ध –
मिन्दीवरोदरसहोदरमिन्दिरायाः ॥3॥
आमीलिताक्षमधिगम्य मुदा मुकुन्द –
मानन्दकन्दमनिमेषमनङ्गतन्त्रम् ।
आकेकरस्थितकनीनिकपक्ष्मनेत्रं
भूत्यै भवेन्मम भुजङ्गशयाङ्गनायाः ॥4॥
बाह्वन्तरे मधुजितः श्रितकौस्तुभे या
हारावलीव हरिनीलमयी विभाति ।
कामप्रदा भगवतोऽपि कटाक्षमाला
कल्याणमावहतु मे कमलालयायाः ॥5॥
कालाम्बुदालिललितोरसि कैटभारे –
र्धाराधरे स्फुरति या तडिदङ्गनेव ।
मातुः समस्तजगतां महनीयमूर्ति –
र्भद्राणि मे दिशतु भार्गवनन्दनायाः ॥6॥
प्राप्तं पदं प्रथमतः किल यत्प्रभावान्
माङ्गल्यभाजि मधुमाथिनि मन्मथेन।
मय्यापतेत्तदिह मन्थरमीक्षणार्धं
मन्दालसं च मकरालयकन्यकायाः ॥7॥
दद्याद् दयानुपवनो द्रविणाम्बुधारा –
मस्मिन्नकिञ्चनविहङ्गशिशौ विषण्णे।
दुष्कर्मघर्ममपनीय चिराय दूरं
नारायणप्रणयिनीनयनाम्बुवाहः ॥8॥
इष्टा विशिष्टमतयोऽपि यया दयार्द्र –
दृष्ट्या त्रिविष्टपपदं सुलभं लभन्ते।
दृष्टिः प्रहृष्टकमलोदरदीप्तिरिष्टां

इन खास मंत्रों का करें जाप, धन और सुख-समृद्धि मिलने की है मान्यता

पुष्टिं कृषीष्ट मम पुष्करविष्टरायाः ॥9॥
गीर्देवतेति गरुडध्वजसुन्दरीति
शाकम्भरीति शशिशेखरवल्लभेति।
सृष्टिस्थितिप्रलयकेलिषु संस्थितायै
तस्यै नमस्त्रिभुवनैकगुरोस्तरुण्यै ॥10॥
श्रुत्यै नमोऽस्तु शुभकर्मफलप्रसूत्यै
रत्यै नमोऽस्तु रमणीयगुणार्णवायै।
शक्त्यै नमोऽस्तु शतपत्रनिकेतनायै
पुष्ट्यै नमोऽस्तु पुरुषोत्तमवल्लभायै ॥11॥
नमोऽस्तु नालीकनिभाननायै
नमोऽस्तु दुग्धोदधिजन्मभूत्यै।
नमोऽस्तु सोमामृतसोदरायै
नमोऽस्तु नारायणवल्लभायै ॥12॥
सम्पत्कराणि सकलेन्द्रियनन्दनानि
साम्राज्यदानविभवानि सरोरुहाक्षि।
त्वद्वन्दनानि दुरिताहरणोद्यतानि
मामेव मातरनिशं कलयन्तु मान्ये ॥13॥
यत्कटाक्षसमुपासनाविधिः
सेवकस्य सकलार्थसम्पदः।
संतनोति वचनाङ्गमानसै –
स्त्वां मुरारिहृदयेश्वरीं भजे ॥14॥
सरसिजनिलये सरोजहस्ते
धवलतमांशुकगन्धमाल्यशोभे।
भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे
त्रिभुवनभूतिकरि प्रसीद मह्यम् ॥15॥
दिग्घस्तिभिः कनककुम्भमुखावसृष्ट –
स्वर्वाहिनीविमलचारुजलप्लुताङ्गीम्।
प्रातर्नमामि जगतां जननीमशेष –
लोकाधिनाथगृहिणीममृताब्धिपुत्रीम् ॥16॥
कमले कमलाक्षवल्लभे
त्वं करुणापूरतरङ्गितैरपाङ्गैः।
अवलोकय मामकिञ्चनानां
प्रथमं पात्रमकृत्रिमं दयायाः ॥17॥
स्तुवन्ति ये स्तुतिभिरमूभिरन्वहं
त्रयीमयीं त्रिभुवनमातरं रमाम्।
गुणाधिका गुरुतरभाग्यभागिनो
भवन्ति ते भुवि बुधभाविताशयाः ॥18॥

नए घर में प्रवेश से पहले इन 5 वास्तु नियमों का रखें ध्यान, घर में सुख-शांति के लिए माने जाते हैं बेहद शुभ

हर व्यक्ति का सपना होता है कि उसका अपना घर हो, जहां वह अपने परिवार के साथ खुशहाल और शांतिपूर्ण जीवन जी सके। हिंदू परंपरा में नए घर में प्रवेश करने से पहले कुछ जरूरी नियमों का पालन करना शुभ माना जाता है। वास्तु शास्त्र के अनुसार अगर सही तरीके और शुभ समय में घर में प्रवेश किया जाए, तो घर में सकारात्मक ऊर्जा आती है और परिवार के जीवन में सुख-समृद्धि बनी रहती है। ऐसे में आइए जानते हैं नए घर में प्रवेश से पहले किन 5 वास्तु नियमों का ध्यान रखना चाहिए।

शुभ मुहूर्त में करें गृह प्रवेश वास्तु शास्त्र के अनुसार नए घर में प्रवेश हमेशा शुभ मुहूर्त में करना चाहिए। इसके लिए पंचांग देखकर तिथि और मुहूर्त तय करना बेहतर माना जाता है। कहा जाता है कि शुभ समय में गृह प्रवेश करने से घर में सकारात्मक ऊर्जा का प्रवेश होता है और परिवार के लिए यह मंगलकारी माना जाता है।

सबसे पहले भगवान की स्थापना करें नए घर में प्रवेश करने से पहले पूजा स्थल तैयार करना बहुत जरूरी माना जाता है। घर में प्रवेश करते समय सबसे पहले भगवान की मूर्ति या तस्वीर को स्थापित करें और विधि-विधान से पूजा करें।

घर को साफ-सुथरा और सुगंधित रखें

वास्तु के अनुसार घर में प्रवेश से पहले पूरे घर की अच्छी तरह सफाई करनी चाहिए। इसके बाद धूप, अगरबत्ती या कपूर जलाकर घर को सुगंधित करें। माना जाता है कि इससे नकारात्मक ऊर्जा दूर होती है और घर में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है।

मुख्य द्वार का रखें विशेष ध्यान

वास्तु शास्त्र में मुख्य द्वार को घर का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा माना गया है। इसलिए नए घर में प्रवेश से पहले मुख्य द्वार को सजाना और साफ रखना शुभ माना जाता है। कई लोग दरवाजे पर तोरण या बंदनवार भी लगाते हैं, जिससे घर में शुभता और समृद्धि आती है।

रसोई में पहले बनाएं मीठा भोजन

वास्तु मान्यताओं के अनुसार नए घर की रसोई में सबसे पहले मीठा भोजन बनाना शुभ माना जाता है। कई लोग इस दिन खीर या हलवा बनाते हैं और उसे भगवान को भोग लगाने के बाद परिवार के सदस्यों में बांटते हैं। यह परंपरा घर में मिठास और खुशहाली का प्रतीक मानी जाती है।

भगवान कृष्ण का जीवन, मथुरा में जन्म से प्रभास पाटन तक, इन 9 धामों में बसी है लीला

भगवान श्रीकृष्ण को याद करने पर हमारे दिमाग में जो सबसे पहले छवि उभरती है, वह नील वर्ण, मधुर मुस्कान, सुंदर नयन, माथे पर सुशोभित मोर पंख, हाथों में बांसुरी और मन मोह लेने वाला निराला रूप याद आता है। महाभारत और पुराणों के मुताबिक भगवान श्रीकृष्ण का जीवनकाल 125 वर्षों का था। श्रीकृष्ण जीवनकाल के दौरान वह शायद ही एक स्थान पर लंबे समय तक रहे हों। श्रीकृष्ण का जीवन अलग-अलग चरणों में बीता था। ऐसे में आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको भगवान कृष्ण से जुड़े उन 9 स्थानों के बारे में बताने जा रहे हैं, जो आज भी श्रीकृष्ण की यादों से जुड़े हैं।

मथुरा- मथुरा में राजनीतिक आतंक के दौर में श्रीकृष्ण का जन्म हुआ था। कंस के भयावह शासन ने मथुरा के लोगों के दिलों में डर पैदा कर दिया था। जेल में कृष्ण का जन्म कंस के दमन का प्रतीक माना जाता है। मथुरावासी श्रीकृष्ण को बालरूप में याद करते हैं। जिन्होंने असंभव परिस्थितियों का सामना करके कंस पर विजय प्राप्त की थी।

गोकुल- श्रीकृष्ण ने गोकुल में अपने जीवन के शुरूआती वर्षों को व्यतीत किया था। गोकुल को श्रीकृष्ण के पहचान से ज्यादा जीवन रक्षा के लिए भी महत्व रखता था। कंस से छिपकर वह यहां बड़े हुए। गोकुलवासी उनको संरक्षित बालक के रूप में याद करते हैं।

वृंदावन- श्रीकृष्ण के लिए जीवन का लंबा और भावनात्मक रूप से यादगार दौर वृंदावन रहा। यहां पर श्रीकृष्ण का बचपन और युवावस्था का सफर बीता। यहां पर उन्होंने धरती, जानवरों और लोगों से गहरे भावनात्मक संबंधों ने प्रेम और विरह के प्रति श्रीकृष्ण की समझ को आकार देने का काम किया।

मथुरा वापसी- श्रीकृष्ण जब युवावस्था में आए, तो वह कंस का सामना करके लिए मथुरा वापस लौटे। मथुरा में श्रीकृष्ण को कंस के अत्याचारों का अंत करने वाले मुक्तिदाता के रूप में याद किया जाता है। हालांकि मथुरा में श्रीकृष्ण का प्रवास संक्षिप्त रहा।

द्वारका- भगवान श्रीकृष्ण का सबसे लंबा निवास स्थान द्वारका था। द्वारका में श्रीकृष्ण ने राजा, रणनीतिकार और रक्षक के रूप में जीवन को व्यतीत किया था। द्वारका में श्रीकृष्ण का जीवन विस्तार पर केंद्रित नहीं था। बल्कि यह स्थिरता पर केंद्रित था। द्वारका में श्रीकृष्ण को एक ऐसे राजा के रूप में याद किया जाता है, जिन्होंने अपनी प्रजा पर अहंकार रहित शासन किया था। वहीं जब आंतरिक कलह के कारण यादव वंश नष्ट हो गया, तब भी श्रीकृष्ण के किसी तरह का हस्तक्षेप नहीं किया था।

कुरुक्षेत्र- कुरुक्षेत्र भगवान श्रीकृष्ण के ज्ञान को दर्शाता है। हालांकि श्रीकृष्ण ने युद्ध में हिस्सा नहीं लिया था, लेकिन उनके परामर्श ने युद्ध परिणाम को प्रभावित किया था। इस पल में भगवद् गीता का जन्म हुआ था। जो कर्म और वैराग्य को जोड़ती है। इसलिए कुरुक्षेत्र को उस स्थान के रूप में याद किया जाता है, जहां पर श्री कृष्ण ने जीवन के सार को समझाया था।

हस्तिनापुर- हस्तिनापुर कृष्ण की मध्यस्थ भूमिका को दर्शाती है. उन्होंने महाभारत युद्ध को रोकने की कोशिश की और विजय से ज्यादा शांति को महत्व दिया. जब युद्ध जरूरी हो गया, तो उन्होंने मानवीय हस्तक्षेप को स्वीकार किया. हस्तिनापुर कृष्ण को शासक के रूप में नहीं, बल्कि एक नैतिक साक्षी के रूप में याद करता है. यह जगह उनकी करुणा को दैवीय हस्तक्षेप की सीमाओं से जोड़ता है.

प्रभास पाटन- श्रीकृष्ण का जीवन प्रभास पाटन में सत्ता और लोगों से दूर समाप्त हुआ। श्रीकृष्ण की मृत्यु निर्विरोध, शांत और एकांत में हुई। यह जगह श्रीकृष्ण को ऐसे व्यक्तित्व के रूप में याद करता है, जिन्होंने बिना किसी भय के डर को स्वीकार किया। प्रभास पाटन जगह श्री कृष्ण की सांसारिक यात्रा की समाप्ति और वैराग्य के अंतिम चरण का प्रतीक मानी जाती है।

जगन्नाथ पुरी- काल से परे कृष्ण का जगन्नाथ पुरी प्रतिनिधित्व करता है। परंपरा के मुताबिक यहां पर श्रीकृष्ण का हृदय विद्यमान रहा और बाद में भगवान जगन्नाथ बन गया। बाकि मंदिरों के उलट यहां पर श्रीकृष्ण का स्वरूप पूर्णया के बजाय निरंतरता पर बल देता है।

जगन्नाथ पुरी श्रीकृष्ण को ऐसे व्यक्ति के रूप में याद नहीं करता है, जो जीवित रहे या मर गए। बल्कि पुरी श्रीकृष्ण को ऐसे याद करता है, जो विद्यमान रहे। पुरी वह स्थान है, जहां स्मृतिया उपस्थिति में बदल जाती हैं।

आर्थिक राशिफलः कुंभ राशि में सूर्य, मंगल, राहु और बुध का जमावड़ा, कार्यक्षेत्र में आएंगी तकनीकी चुनौतियां

मेष राशि प्रोग्रेस के लिए टीम वर्क सबसे जरूरी रहेगा। आपको दो समूहों के बीच मध्य की भूमिका निभानी पड़ सकती है। वक्री बुध के कारण कोई भी महत्वपूर्ण ईमेल या रिपोर्ट भेजने से पहले उसे दोबारा जांच लें। आर्थिकः आज सावधानी बरतने का दिन है। बारहवें भाव के ग्रहों का दबाव गुप्त खर्च या पुरानी देनदारी का संकेत देता है। सट्टेबाजी या जोखिम भरे निवेश से पूरी तरह दूर रहें।

वृष राशि करियर पर मुख्य फोकस रहेगा और पुराने प्रोजेक्ट्स में संशोधन की आवश्यकता पड़ सकती है। अधिकारियों का व्यवहार अनिश्चित हो सकता है, इसलिए केवल लिखित वादों पर भरोसा करें। आर्थिकः धन प्रबंधन पर सुधार करने का समय है। दिखावे या केवल करियर की साख बढ़ाने के लिए फिजूलखर्ची न करें। नया निवेश करने के बजाय पुराने निवेश की जांच करना बेहतर होगा।

मिथुन राशि कार्यक्षेत्र में आज अधिक अनुशासन की मांग होगी। शनि की स्थिति आपसे ठोस नतीजों की उम्मीद रखेगी। वक्री बुध के कारण किसी पुरानी रिपोर्ट या प्रोजेक्ट की गलतियों को ठीक करना पड़ सकता है। आर्थिकः आर्थिक स्थिति सामान्य रहेगी, लेकिन खर्च पर नियंत्रण रखें। करियर के माध्यम से लाभ के योग हैं, लेकिन विदेशी निवेश या शिक्षा से जुड़े खर्चों में बहुत सावधानी बरतें।

कर्क राशि आज आपका मन काम के बजाय निजी या प्रशासनिक मामलों में ज्यादा लग सकता है। ऑफिस की राजनीति से दूरी बनाए रखें। पर्दे के पीछे रुक कर किए गए कार्यों में आपको बड़ी सफलता मिलेगी। आर्थिकः सतर्कता ही आज का मूल मंत्र है। आठवें भाव की ऊर्जा अचानक आने वाले खर्चों या भुगतान में देरी का संकेत देती है। किसी भी नए लोन या जटिल वित्तीय समझौते पर हस्ताक्षर न करें।

सिंह राशि आज का दिन बातचीत और तालमेल का है। अपनी कूटनीति का उपयोग करें। वक्री बुध के कारण सार्वजनिक संवाद में छोटी सी गलती बड़े विवाद का रूप ले सकती है, इसलिए शब्दों का चयन सोच-समझकर करें। आर्थिकः साझा संपत्ति और टैक्स जैसे मामलों पर ध्यान रहेगा। फिजूलखर्ची से बचें और अपने बैंक खातों की सुरक्षा रखें। पार्टनर के साथ मिलकर बड़ा निवेश करने के लिए आज का दिन सही नहीं है।

कन्या राशि कार्यक्षेत्र में आज का दिन किसी परीक्षा से कम नहीं होगा। डेटा लॉस या तकनीकी दोष के कारण सहकर्मियों के साथ गलतफहमी हो सकती है। धैर्य से काम लें और अपनी प्लानिंग सटीक रखें। आर्थिकः आर्थिक रूप से दिन मजबूत है और पुराने निवेशों से लाभ मिल सकता है। हालांकि, आज किसी को उधार न दें, क्योंकि वक्री बुध के प्रभाव से वह पैसा वापस मिलना बहुत मुश्किल होगा।

तुला राशि आपकी उपस्थिति और शांत स्वभाव ही आज ऑफिस की कई समस्याओं को सुलझा देगा। पुराने अधूरे कामों में सुधार करना पड़ सकता है। नेतृत्व करने के लिए दिन अनुकूल है, बस अपनी न्यायप्रिय छवि बनाए रखें। आर्थिकः सट्टेबाजी या शॉर्ट-कट से पैसा कमाने के लालच से बचें। राहु और वक्री बुध का प्रभाव आपको गलत वित्तीय निर्णय लेने के लिए उकसा सकता है, इसलिए व्यावहारिक रहें।

वृश्चिक राशि करियर में आज पर्दे के पीछे रहकर काम करना आपके लिए ज्यादा फायदेमंद रहेगा। आपको कुछ ऐसी गोपनीय जानकारी मिल सकती है जो भविष्य में ब्रेकथ्रू दिलाएगी। विदेशी प्रोजेक्ट्स में देरी हो तो परेशान न हों। आर्थिकः साझा संपत्ति और निवेशों की गहन जांच-पड़ताल करें। घर के रखरखाव या मरम्मत पर अचानक खर्च होने की संभावना है। नया कर्ज लेने से आज बचना चाहिए।

धनु राशि टीम वर्क सफल रहेगा, लेकिन तकनीकी समस्याओं के प्रति सतर्क रहें। पुराने तरीकों से फिर से जुड़ने के लिए अच्छा समय है, लेकिन नई मार्केटिंग शुरू करने के बजाय पुरानी रणनीतियों को ही सुधारें। आर्थिकः नेटवर्किंग से भविष्य में लाभ के द्वार खुलेंगे। हालांकि, गैजेट्स या इलेक्ट्रॉनिक चीजों पर अचानक खर्च होने की संभावना है। लेन-देन में ट्रांसपेरेंसीरखें।

मकर राशि ऑफिस में अपनी गरिमा बनाए रखें। कार्यक्षेत्र में आपकी गंभीरता और कड़ी मेहनत की सराहना होगी। अधिकारी वर्ग आपके काम से प्रभावित होगा, जिससे भविष्य की प्रमोशन की नींव मजबूत होगी। आर्थिकः वित्तीय रूप से आज सुरक्षा पर ध्यान देने का दिन है। करियर में तरक्की के बावजूद खर्च अनिश्चित रह सकते हैं। किसी भी बड़े निवेश से पहले घर के बड़ों की सलाह जरूर लें।

कुंभ राशि कार्यक्षेत्र में सबकी नजरें आप पर होंगी। प्रेजेंटेशन या महत्वपूर्ण ईमेल को दो बार चेक करें, क्योंकि वक्री बुध तकनीकी त्रुटि करवा सकते हैं। प्रतिक्रिया देने के बजाय स्थिति का ऑब्जर्वेशन करें। आर्थिकः आपकी दूरदर्शिता आर्थिक लाभ के नए रास्ते खोल सकती है। हालांकि, राहु के प्रभाव में आकर जल्दबाजी में कोई भी व्यक्तिगत वित्तीय निर्णय या खरीदारी न करें।

मीन राशि आप पर्दे के पीछे रहकर अनुसंधान या शोध कार्य करना पसंद करेंगे। आपकी गोपनीयता और शांत कार्यशैली की सराहना होगी। ऑफिस की गुप्त राजनीति से खुद को पूरी तरह दूर रखें। आर्थिकः आज सावधानी बरतने का दिन है। बारहवें भाव के ग्रहों के कारण बड़े निवेश या भारी खर्च से बचना चाहिए। टैक्स, बीमा या पुराने बिलों का भुगतान प्राथमिकता पर रखें।

इस खास आरती के बिना अधूरी मानी जाती है गणेश जी की पूजा, भालचंद्र संकष्टी चतुर्थी व्रत पर अवश्य पढ़ें

हिंदू धर्म में संकष्टी चतुर्थी का व्रत विशेष रूप से भगवान गणेश को समर्पित माना जाता है। इसे व्रति जीवन के सभी संकटों से मुक्ति पाने और सुख-समृद्धि प्राप्त करने का अवसर मानते हैं। वैदिक पंचांग के अनुसार, हर महीने कृष्ण पक्ष की चतुर्थी तिथि को यह व्रत रखा जाता है। चैत्र मास की कृष्ण पक्ष की चतुर्थी को विशेष रूप से भालचंद्र संकष्टी चतुर्थी कहा जाता है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार इस दिन किए गए व्रत और पूजा से व्यक्ति के जीवन में आने वाली बाधाएं दूर होती हैं, सभी मनोकामनाएं पूरी होती हैं और घर-परिवार में शांति और सुख का वातावरण बनता है। कहते हैं संकष्टी चतुर्थी का व्रत और पूजा गणेश जी की आरती के बिना अधूरी मानी जाती है। यही कारण है कि व्रत रखने वाले भक्त पूजा के बाद भालचंद्र संकष्टी चतुर्थी व्रत की आरती अवश्य पढ़ते हैं। मान्यता है कि इस आरती का

पाठ करने से न केवल जीवन की बाधाओं से मुक्ति मिलती है, बल्कि आर्थिक, पारिवारिक और व्यक्तिगत क्षेत्रों में सुख-समृद्धि भी आती है।

गणेश जी की आरती

जय गणेश जय गणेश, जय गणेश देवा ।
माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा ॥
एक दंत दयावंत, चार भुजा धारी ।
माथे सिंदूर सोहे, मूसे की सवारी ॥
जय गणेश जय गणेश, जय गणेश देवा ।
माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा ॥
पान चढ़े फल चढ़े, और चढ़े मेवा ।
लड्डुअन का भोग लगे, संत करें सेवा ॥
जय गणेश जय गणेश, जय गणेश देवा ।
माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा ॥
अंधन को आंख देत, कोढ़िन को काया ।
बांझन को पुत्र देत, निर्धन को माया ॥
जय गणेश जय गणेश, जय गणेश देवा ।
माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा ॥
सूर श्याम शरण आए, सफल कीजे सेवा ।
माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा ॥
जय गणेश जय गणेश, जय गणेश देवा ।
माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा ॥
दीनन की लाज रखो, शंभु सुतकारी ।
कामना को पूर्ण करो, जाऊं बलिहारी ॥
जय गणेश जय गणेश, जय गणेश देवा ।
माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा ॥

ड्राइवरों की आर्थिक सुरक्षा के लिए सड़क पर संघर्ष

सारनी से भोपाल तक निकलेगी प्रदेश स्तरीय पदयात्रा

दैनिक कारखाने का सफर। सारनी

प्रदेश के ड्राइवरों की आर्थिक दशा और भविष्य की दिशा तय करने के उद्देश्य से मध्यप्रदेश ड्राइवर महासंघ द्वारा प्रदेश स्तर पर पदयात्रा निकालने का निर्णय लिया गया है।इस अभियान का उद्देश्य ड्राइवरों के अधिकारों को मजबूती देना और उनकी समस्याओं को सरकार तक प्रभावी तरीके से पहुंचाना है। महासंघ के आह्वान पर 8 मार्च को बाबा मठारदेव की नगरी सारनी से पदयात्रा की शुरुआत होगी। यह पदयात्रा सुबह 10 बजे जय स्तंभ चौक सारनी से प्रारंभ होकर महावीर स्वामी वार्ड क्रमांक 36 बगडोना के स्वागत द्वार तक पहुंचेगी।इसके बाद यह यात्रा घोड़ाडोंगरी और शाहपुर होते हुए राजधानी भोपाल तक जाएगी,जहां ड्राइवर प्रतिनिधिमंडल मुख्यमंत्री डॉ.मोहन यादव से मुलाकात कर ज्ञापन सौंपेगा। मध्यप्रदेश ड्राइवर महासंघ के अरुण बिलगाईयां ने बताया कि प्रदेश के अलग-अलग जिलों से ड्राइवर इस पदयात्रा में शामिल होकर अपनी आवाज बुलंद करेंगे।उनका कहना है कि आज भी प्रदेश के हजारों ड्राइवर असुरक्षित परिस्थितियों में काम कर रहे हैं,लेकिन उनके लिए सरकार की ओर से कोई ठोस आर्थिक सुरक्षा व्यवस्था नहीं है।उन्होंने बताया कि यदि किसी सड़क दुर्घटना में ड्राइवर की मृत्यु हो जाती है या वह गंभीर रूप से घायल हो जाता है,तो उसके परिवार के सामने आर्थिक संकट खड़ा हो जाता है।इसलिए महासंघ की प्रमुख मांग है कि ड्राइवरों के लिए विशेष सड़क दुर्घटना बीमा योजना लागू की जाए और दुर्घटना में मृत्यु होने पर उनके परिजनों को सरकार की ओर से पर्याप्त आर्थिक सहायता प्रदान की जाए।इसके साथ ही महासंघ ने यह भी मांग उठाई है कि प्रदेश में ड्राइवरों के लिए न्यूनतम वेतन का स्पष्ट मापदंड तय किया जाए, क्योंकि वर्तमान समय में अधिकांश ड्राइवरों को केवल 8 से 10 हजार रुपए मासिक वेतन मिलता है। इतनी कम आय में परिवार का भरण -पोषण करना उनके लिए बेहद कठिन हो जाता है।

महासंघ के अनुसार यह पदयात्रा केवल एक आंदोलन नहीं,बल्कि प्रदेश के लाखों ड्राइवरों की आर्थिक सुरक्षा, सम्मानजनक जीवन और स्थायी भविष्य की मांग का प्रतीक है।भोपाल पहुंचकर मुख्यमंत्री को ज्ञापन सौंपते हुए ड्राइवर समुदाय के लिए ठोस नीतिगत निर्णय लेने की अपील की जाएगी,ताकि प्रदेश के ड्राइवरों की दशा और दिशा दोनों सुधर सकें।

रंग पंचमी की मस्ती में सजेगा सलैया का ऐतिहासिक मेघनाथ मेला

40 वर्षों से जीवंत आदिवासी परंपरा रामसत्ता प्रतियोगिता में 31 हजार प्रथम पुरस्कार

दैनिक कारखाने का सफर। सारनी

होली के बाद रंग पंचमी के उल्लास और पारंपरिक संस्कृति की रंगत के बीच ग्राम पंचायत सलैया में इस वर्ष भी ऐतिहासिक मेघनाथ मेला पूरे उत्साह और श्रद्धा के साथ आयोजित किया जाएगा। पिछले लगभग 40 वर्षों से लगातार आयोजित हो रहा यह मेला क्षेत्र की आदिवासी परंपरा,लोक आस्था और सांस्कृतिक विरासत का जीवंत प्रतीक बन चुका है।ग्राम पंचायत सलैया में प्रतिवर्ष की तरह इस वर्ष भी रंग पंचमी के पावन अवसर पर मेघनाथ मेले का आयोजन किया जा रहा है। मेले के तहत शनिवार की रात 11 बजे से रामसत्ता प्रतियोगिता का शुभारंभ होगा,जिसका समापन 8 मार्च की रात 11 बजे के बाद किया जाएगा।आयोजन समिति के अनुसार इस प्रतियोगिता में क्षेत्र की एक दर्जन से अधिक रामसत्ता मंडलियों के भाग लेने की संभावना है।ढोल-मांदर की थाप,पारंपरिक वाद्ययंत्रों और लोकगायन के बीच यह प्रतियोगिता देर रात तक ग्रामीणों और दर्शकों को रोमांचित करती है।प्रतियोगिता के लिए आकर्षक पुरस्कार भी निर्धारित किए गए हैं।इसमें प्रथम पुरस्कार 31,000,द्वितीय पुरस्कार 21,000,तृतीय पुरस्कार 15,000 इसके अलावा मेले के दौरान नृत्य प्रतियोगिता का भी आयोजन किया जाएगा,जिसमें स्थानीय कलाकार और मंडलियां अपनी लोकनृत्य कला का प्रदर्शन करेंगी।ग्रामीणों का कहना है कि मेघनाथ मेला केवल मनोरंजन का आयोजन नहीं बल्कि पीढ़ियों से चली आ रही परंपरा, संस्कृति और सामुदायिक एकता का प्रतीक है।रंग पंचमी के अवसर पर पूरा गांव मेले के रंग में रंग जाता है और आसपास के गांवों से भी बड़ी संख्या में लोग इस आयोजन में शामिल होकर परंपरा को जीवित रखते हैं।

महाप्रबंधक का दोहरा चरित्र! मजदूरों की जेब में वेतन, फिर ठेकेदारों के जरिए वापसी पीठ और पेट पर वार का आरोप

धरने पर बैठे ठेका मजदूरों का आरोप वह महाप्रबंधक महोदय जी,आपका दोहरा चरित्र कामगारों के पीठ और पेट पर वार करता दिखाई दे रहा है

दैनिक कारखाने का सफर। पाथाखेड़ा

वेस्टर्न कोलफील्ड लिमिटेड पाथाखेड़ा क्षेत्र की भूमिगत खदानों और सतही कार्यों में लगे ठेका मजदूरों के साथ प्रबंधन और ठेकेदारों की मिलीभगत से हो रहे कथित शोषण को लेकर अब आंदोलन तेज होता दिखाई दे रहा है।मजदूरों का आरोप है कि एक ओर प्रबंधन मजदूर हितैषी होने का दिखावा कर रहा है,वहीं दूसरी ओर ठेकेदारों के माध्यम से मजदूरों की मेहनत की कमाई पर ही कुठाराघात किया जा रहा है।शुक्रवार शाम लगभग 4 बजे क्षेत्र के सभी ठेकेदारों की बैठक क्षेत्रीय महाप्रबंधक कार्यालय में आयोजित की गई,जिसमें ठेका मजदूरों को लंबित वेतन भुगतान करने को लेकर चर्चा हुई।बैठक के बाद ठेकेदारों ने मजदूरों के खातों में राशि डालना शुरू किया, लेकिन आरोप है कि उसी के साथ ठेकेदारों द्वारा मजदूरों से नगद राशि वापस लेने का सिलसिला भी शुरू हो गया। ठेका मजदूरों का प्रतिनिधित्व कर रहे प्रदीप नागले एवं उनके टीम के लोगों ने जानकारी उपलब्ध करवाते हुए बताया कि सुनील सिंह नामक ठेकेदार के माध्यम से संतोष नाम के श्रमिक के खाते में शुक्रवार को 12,500 रुपये डाले गए,लेकिन कुछ ही समय बाद उससे 7,500 रुपये वापस भी ले लिए गए। मजदूरों का कहना है कि यह व्यवस्था मजदूरों के साथ खुला अन्याय है और यह पूरी प्रक्रिया प्रबंधन की जानकारी में ही संचालित हो रही है।

इसी बीच स्थानीय प्रबंधन की कार्यप्रणाली पर भी सवाल उठ रहे हैं।बताया जा रहा है कि महाप्रबंधक निवास पर वॉलमैन के पद पर कार्यरत महिला इंदिरा बाई को अचानक कार्य से हटा दिया गया।जानकारी के अनुसार जिस महाप्रबंधक ने उन्हें काम पर रखा था,उनका स्थानांतरण होने के बाद उनकी सेवा समाप्त कर दी गई।इस कार्रवाई को लेकर भी क्षेत्र में आक्रोश देखा जा रहा है। ठेका मजदूर पिछले 26 फरवरी से क्षेत्रीय महाप्रबंधक कार्यालय के समक्ष लगातार धरना-प्रदर्शन कर रहे हैं और अपने पूर्ण वेतन तथा श्रमिक अधिकारों की मांग कर रहे हैं। मजदूरों का कहना है कि एक ओर क्षेत्रीय महाप्रबंधक संजय मिश्रा मजदूरों को पूरा वेतन दिलाने का दावा करते हुए उदारवादी चेहरा पेश कर रहे हैं,वहीं दूसरी ओर ठेकेदारों द्वारा मजदूरों से नगद राशि वापस लेने और उन्हें काम से निकालने की घटनाओं पर कोई सख्त कार्रवाई नहीं हो रही है।धरने पर बैठे मजदूरों ने तीखे शब्दों में कहा कि वह महाप्रबंधक महोदय जी, आपका दोहरा चरित्र कामगारों के पीठ और पेट पर वार करता दिखाई दे रहा है।मजदूरों ने चेतावनी दी है कि यदि उनकी मांगों का शीघ्र समाधान नहीं हुआ तो आंदोलन को और तेज किया जाएगा और अनिश्चितकालीन आमरण अनशन की तैयारी भी की जा रही है। मजदूरों का कहना है कि यदि ऐसा हुआ तो ठेका मजदूरों के दम पर संचालित होने वाली पाथाखेड़ा क्षेत्र की भूमिगत खदानों का उत्पादन लगभग ठप हो सकता है,जिसका सीधा असर कोयला उत्पादन पर पड़ेगा। जिसकी संपूर्ण जवाब दे ही क्षेत्रीय महाप्रबंधक की होगी।

जनपद पंचायत चिचोली में भ्रष्टाचार का नया अध्याय

घटिया टाइल्स,अंत्येष्टि राशि में गड़बड़ी और अनियमितताओं पर दिनेश यादव का बड़ा आरोप

दैनिक कारखाने का सफर। सारनी

बैतूल जिले की जनपद पंचायत चिचोली एक बार फिर कथित अनियमितताओं और भ्रष्टाचार के आरोपों को लेकर सुर्खियों में है। चिचोली निवासी दिनेश यादव ने कलेक्टर को शिकायत कर जनपद पंचायत में चल रहे निर्माण कार्यों और आर्थिक लेन-देन में गंभीर गड़बड़ियों का आरोप लगाते हुए निष्पक्ष जांच और कठोर कार्रवाई की मांग की है।दिनेश यादव का आरोप है कि जनपद पंचायत परिसर में मरम्मत कार्य के नाम पर टाइल्स,लाइट फिटिंग और पुताई जैसे काम कराए जा रहे हैं,लेकिन इन कार्यों में गुणवत्ता की घोर अनदेखी की जा रही है। शिकायत में कहा गया है कि वेंडर द्वारा थर्ड क्लास गुणवत्ता की टाइल्स लगाई जा रही हैं,जबकि जिम्मेदार अधिकारी इस पर आंखें मूंदे हुए हैं। श्री यादव का कहना है कि यह पूरा काम कुछ खास अधिकारियों की निगरानी में कराया जा रहा है, जिससे गुणवत्ता पर सवाल खड़े हो रहे हैं।शिकायत में यह भी आरोप लगाया गया है कि जनपद पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी (सीईओ) द्वारा इन अनियमितताओं पर कोई ठोस कार्रवाई नहीं की जा रही,जिससे यह प्रतीत होता है कि पूरे मामले में प्रशासनिक स्तर पर अनदेखी या मिलीभगत हो सकती है।

दिनेश यादव ने अपनी शिकायत में चूनागोसाई पंचायत का भी उल्लेख करते हुए आरोप लगाया है कि वहां लगभग 3 से 4 लाख रुपये की अनियमितताएं सामने आई हैं।आरोप के मुताबिक कई मामलों में अंत्येष्टि सहायता राशि लाभार्थियों तक पहुंचने के बजाय पहले सचिवों के निजी खातों में ट्रांसफर कर ली गई और बाद में उसी खाते से राशि निकाल ली गई,जबकि जरूरतमंद परिवारों को इसका लाभ नहीं मिल पाया।श्री यादव ने यह भी आरोप लगाया कि जनपद पंचायत में पूर्व में स्वच्छता अभियान (स्वच्छ भारत मिशन) के तहत करीब 13 करोड़ रुपये के घोटाले के आरोप भी सामने आ चुके हैं, लेकिन अब तक ठोस कार्रवाई नहीं हुई। उनका कहना है कि बार-बार आवेदन देने के बाद भी जिले के अधिकारी इस मामले को गंभीरता से नहीं ले रहे हैं और जांच में अनावश्यक देरी की जा रही है।उन्होंने यह सवाल भी उठाया कि जब प्रदेश सरकार भ्रष्टाचार के खिलाफ सख्त कार्रवाई की बात करती है,तब जनपद पंचायत चिचोली में घटिया निर्माण और आर्थिक अनियमितताओं का सिलसिला आखिर किसके संरक्षण में चल रहा है।

दिनेश यादव ने कलेक्टर से मांग की है कि पूरे मामले की निष्पक्ष जांच कराई जाए, दोषी अधिकारियों और कर्मचारियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाए तथा जनपद पंचायत में हो रहे निर्माण कार्यों की गुणवत्ता की भी स्वतंत्र जांच कराई जाए। जिससे भ्रष्टाचार की पोल खोल सके।

टोल से स्वागत द्वार तक मौत की दरारें

पाढरा-बगडोना मार्ग पर हादसों को न्योता दे रही जर्जर सड़क,जिम्मेदार खामोश

दैनिक कारखाने का सफर। सारनी

पाढरा टोल प्लाजा से लेकर बगडोना स्वागतद्वार के बीच मुख्य मार्ग की हालत इन दिनों बेहद चिंताजनक हो गई है।सड़क पर जगह-जगह बड़ी-बड़ी दरारें पड़ गई हैं, जिससे दोपहिया वाहन चालकों का सफर खतरे से खाली नहीं रह गया है।इन गहरी दरारों के कारण वाहन असंतुलित हो जाते हैं और कई बार चालक सड़क पर गिरकर गंभीर रूप से घायल भी हो चुके हैं।इसके बाद भी जिम्मेदार विभाग और निर्माण कंपनी की ओर से अब तक कोई ठोस पहल नजर नहीं आ रही है। बताया जाता है कि बैतूल के कमानी गेट से लेकर परासिया तक लगभग 124 किलोमीटर लंबे इस मिनी हाईवे का निर्माण करीब 10 वर्ष पूर्व दिलीप बिल्डकॉन कंपनी द्वारा मध्यप्रदेश सड़क डेवलपमेंट कॉरपोरेशन लिमिटेड के तत्वावधान में किया गया था।निर्माण के बाद से अब तक इस सड़क की समुचित मरम्मत नहीं की गई।परिणामस्वरूप सड़क की सतह जगह-जगह फट चुकी है और लंबी-लंबी दरारें दुर्घटनाओं को खुला निमंत्रण दे रही हैं।सूत्रों का कहना है कि इस सड़क की गारंटी-वारंटी की अवधि लगभग 17 वर्षों तक बताई जाती है,लेकिन बीते 10 वर्षों में इस मार्ग पर दोबारा डामरीकरण तक नहीं कराया गया।जबकि छिंदवाड़ा जिले के परासिया से आगे के हिस्सों में सड़क की मरम्मत और सुधार का कार्य किया जा चुका है।स्थानीय लोगों का आरोप है कि बैतूल जिला आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र होने और जनप्रतिनिधियों की निष्क्रियता के कारण दिलीप बिल्डकॉन कंपनी और मध्यप्रदेश सड़क डेवलपमेंट कॉरपोरेशन लिमिटेड के जिम्मेदार अधिकारी इस मार्ग की मरम्मत को लेकर गंभीरता नहीं दिखा रहे हैं। नतीजतन रोजाना इस मार्ग से गुजरने वाले वाहन चालकों को जोखिम उठाना पड़ रहा है और दुर्घटनाएं लगातार बढ़ रही हैं।

अब सवाल यह उठता है कि क्या जिम्मेदार विभाग और निर्माण कंपनी समय रहते इस सड़क की मरम्मत कराएंगे,या फिर पाढरा टोल प्लाजा से लेकर बगडोना स्वागत द्वार तक किसी बड़े हादसे का इंतजार किया जा रहा है। फिलहाल सड़क की ये दरारें न केवल विकास की सच्चाई बयान कर रही हैं, बल्कि यात्रियों की सुरक्षा पर भी बड़ा सवाल खड़ा कर रही हैं।

टंकी खड़ी,नल लगे पर पानी गायब! घोड़ाडोंगरी ब्लॉक में जल संकट ने खोली योजनाओं की पोल

कई पंचायत में फरवरी माह के अंतिम सप्ताह से किया गया नल जल योजना का काम शुरू

दैनिक कारखाने का सफर। सारनी

घोड़ाडोंगरी ब्लॉक में वन ग्राम और राजस्व के गांव मिलाकर लगभग 172 से अधिक गांव है, फरवरी के अंतिम और मार्च के पहले सप्ताह से ज्यादातर गांव में जल स्तर लगातार काम होते जा रहा है।लगातार गिरते जल स्तर ने ग्रामीण क्षेत्रों में भीषण पेयजल संकट की स्थिति पैदा कर दी है।हालात इतने गंभीर हो चुके हैं कि मार्च के पहले सप्ताह में ही कई गांवों में पानी के लिए हाहाकार मचने लगा है। हैरानी की बात यह है कि शासन की जल आवर्धन योजना के तहत कई पंचायतों में पाइपलाइन बिछा दी गई,पानी की टंकियां बना दी गईं और नल कनेक्शन भी बांट दिए गए,लेकिन गांवों में पानी पहुंचाने के लिए पर्याप्त जल स्रोत ही मौजूद नहीं हैं।

स्थिति यह है कि कई पंचायतों में बिना स्थायी जल स्रोत के ही करोड़ों की लागत से टंकियों का निर्माण कर दिया गया और घर-घर नल कनेक्शन बांट दिए गए।आज हालत यह है कि नल तो लगे हैं,लेकिन उनमें पानी की एक बूंद तक नहीं आ रही।इससे साफ जाहिर होता है कि योजनाओं का क्रियान्वयन जमीनी हकीकत को नजरअंदाज कर केवल कागजी आंकड़ों के सहारे किया गया।ग्रामीणों का कहना है कि इस बार फरवरी माह के अंतिम सप्ताह से ही जल संकट ने दस्तक दे दी थी। कई किसानों और ग्रामीणों के बोरवेल समय से पहले ही जवाब दे चुके हैं। पानी की कमी के कारण लोगों को दूर-दूर तक भटककर पेयजल जुटाना पड़ रहा है।गांव की महिलाएं और बच्चे रोजाना कई किलोमीटर दूर जाकर पानी लाने को मजबूर हैं।विडंबना यह भी है कि कुछ पंचायतों में फरवरी माह में ही पेयजल व्यवस्था के नाम पर गांव की सड़कों और गलियों में गड्ढे खोदकर पाइपलाइन डालने का काम शुरू किया गया।अधूरे और जल्दबाजी में किए गए इन कार्यों के कारण ग्रामीणों को समय पर पेयजल की सुविधा नहीं मिल पा रही। विकास के नाम पर किए जा रहे इन कामों ने गांवों की परेशानी और बढ़ा दी है।ग्रामीणों में इस बात को लेकर भारी आक्रोश है कि जब जल स्रोत ही उपलब्ध नहीं था,तो आखिर टंकी निर्माण और नल कनेक्शन बांटने की जल्दबाजी क्यों की गई। लोगों का आरोप है कि प्रशासन और जिम्मेदार विभागों ने केवल योजनाओं का लक्ष्य पूरा करने के लिए करोड़ों रुपये खर्च कर दिए, लेकिन ग्रामीणों की मूल समस्या पर ध्यान नहीं दिया।

अब सवाल यह उठता है कि जब मार्च के पहले सप्ताह में ही जल संकट विकराल रूप ले रहा है,तो आने वाले अप्रैल और मई की भीषण गर्मी में हालात कितने भयावह होंगे। यदि समय रहते प्रशासन और संबंधित विभागों ने ठोस कदम नहीं उठाए,तो घोड़ाडोंगरी ब्लॉक के कई गांवों में पेयजल का संकट गंभीर मानवीय समस्या बन सकता है।ग्रामीणों ने जिला प्रशासन से मांग की है कि कागजी योजनाओं की बजाय स्थायी जल स्रोत विकसित किए जाएं और जिन पंचायतों में टंकियां और नल लगाए गए हैं,वहां जल्द से जल्द पानी की वास्तविक व्यवस्था सुनिश्चित की जाए।

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक मधुवर मोहन द्विवेदी द्वारा इंडिपेंडेट प्रेस, 11 प्रेस काम्पलेक्स, एमपी नगर जोन-1 भोपाल 462023 म.प्र. से मुद्रित एवं 201 ब्लाक ई, सागर प्रीमियम टावर जेके हॉस्पिटल, कोलार रोड, भोपाल म.प्र. से प्रकाशित।
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल न्यायालय रहेगा) संपादक- सुनील यादव, समाचार संपादक- राहुल कौशिक। फोन नं. 0755-4262585-9425006706, मो. नंबर 9826697203, 9926288166, RNI.No. MPHIN/2020/78949